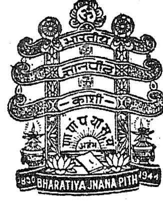


ज्ञानपीठ-लोकोदय-ग्रन्थमाला-
हिन्दी-ग्रन्थाङ्क—१२०

●

पश्चिमके
इक्कीस देशोंकी एक सौ इकसठ आधुनिक
कविताएँ

●

दे|शा|न्त|र

धर्मवीर भारती

द्वारा अनूदित और संकलित



भारतीय ज्ञानपीठ, काशी

ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला
सम्पादक तथा नियामक
श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन

प्रथम संस्करण
मूल्य : बारह रुपये

१९६०

प्रकाशक
मन्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

मुद्रक
बाबूलाल जैन फागुल्ल
सन्मति मुद्रणालय, वाराणसी

वक्तव्य

प्रस्तुत संकलनमें यूरोप और अमेरिका (उत्तर और दक्षिण) के इक्कीस देशोंकी एक सौ इकसठ कविताओंकी हिन्दी छायाएँ प्रस्तुत हैं। ये कविताएँ केवल उन कवियोंकी हैं जो २० वीं शताब्दीमें प्रख्यात हुए। आज जिसे हम आधुनिक काव्यबोध कहते हैं, उसे निर्मित करनेमें इन सबका हाथ रहा है। संकलित कवियोंमेंसे कुछ अपनी भाषाके सर्वश्रेष्ठ आधुनिक कवि माने जाते हैं, कुछको लेकर काफ़ी वाद-विवाद चलता रहा है, कुछमें सम्भावनाएँ हैं पर अभी वे पूर्णतः प्रतिष्ठित नहीं हो पाये और कुछकी सम्भावनाएँ उनकी असमय मृत्युके कारण पूर्णतः विकसित नहीं हो पायीं। कुछ कवि ऐसे भी हैं जो अपेक्षाकृत अल्पख्यात हैं किन्तु उनकी कतिपय कृतियाँ आधुनिक भावभूमिके किसी विशेष क्षेत्रका उद्घाटन करती हैं, अतः वे संकलनीय नहीं। कुछ महत्त्वपूर्ण कवि ऐसे भी हैं जिनका अनुवाद करना सम्भव नहीं प्रतीत हो सका, अतः उनकी कृतियाँ सम्मिलित नहीं की जा सकीं।

कि यह संकलन समूचे आधुनिक काव्यका सर्वाङ्ग-सम्पूर्ण प्रतिनिधित्व करता है यह मेरा दावा क़तई नहीं है। यह केवल उसकी वैविध्यकी बानगी प्रस्तुत करता है।

यों तो जब कभी दो सांस्कृतिक धाराओंमें परस्पर सम्मिलन हुआ है, अनुवाद बराबर आदान-प्रदानका एक उपयोगी माध्यम रहा है। लेकिन आधुनिक सन्दर्भमें नये कविके लिए काव्यका अनुवाद एक दूसरा महत्त्व भी रखता है। क्या कारण है कि एज़रा पाउण्डसे बोरिस पेस्तरनाक तक किन्हीं विशेष स्थितियोंमें अनुवाद कार्यकी ओर झुकते देख पड़ते हैं।

इसका एक विशेष कारण है।

मध्ययुगमें कवि-कर्मका एक आवश्यक और महत्त्वपूर्ण अंग था—गुरु-शिष्य परम्परा। प्रत्येक उदीयमान कवि किसी रससिद्ध कविको गुरुके रूपमें स्वीकारता था जिसे इस्लाह (परामर्श) देने, शिष्यके लेखनमें

संशोधन (तरमीम) करनेका पूरा अधिकार रहता था। इन परामर्शोंके अनुसार कवि अभ्यास करता था और परिपक्वता और प्रौढ़ता तक पहुँचते-पहुँचते स्वयं अपनी निजी शैलीको खोजता और प्रतिष्ठित करता था।

आधुनिक कविता जिस क्रान्तिकारी भावभूमिमें पनपी उसमें यह गुरु निर्देशित अनुशासित अभ्यासकी परम्परा न केवल अनावश्यक वरन् बाधक और हानिकर प्रतीत हुई और समाप्त हो गयी। यही नहीं वरन् काव्य-सम्प्रदाय जितनी तेजीसे बदले उसमें गुरु शिष्यका तो प्रश्न दूर हर नयी पीढ़ीने तो अनिवार्यतः अपनेको पुरानी पीढ़ीसे मनसा पृथक् पाया। ऐसी स्थितिमें प्रत्येक नया कवि कबीरकी भाषामें न केवल 'निगुरा' रहा वरन् काव्यके क्षेत्रमें अपने निगुरेपनको गर्वकी वस्तु मानता रहा।

लेकिन ऊर्णनाभकी भाँति केवल अपने अन्दरसे ही सारे अनुशासन बुन लेना, या तो मकड़ी हीके लिए सम्भव है या केवल ब्रह्मके लिए। प्रत्येक नये कविको (चाहे वह स्वीकार करे या न करे) निर्देश, अनुशासन और अभ्यासकी आवश्यकता होती है और समय-समयपर वह इसे महसूस भी करता है। ऐसी अवस्थामें अगर वह अपने तत्काल पूर्ववर्ती काव्य-सम्प्रदायसे निजको सहमत नहीं पाता तो उनसे भी और पहलेके कवियोंमेंसे अपनी प्रकृतिके अनुकूल कवियोंको चुनकर उनके काव्यका अवगाहन करता है, उनका अनुवाद कर अभ्यास करता है और इस तरह अपनी अभिव्यक्तिको समृद्ध बनाता है। यह उसीकी रचना-प्रक्रियाका एक आवश्यक अंग है। मसलन् रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा पहले ब्रजबूलिके कवियों और बादमें कबीर तथा बाउलोंकी खोज। कभी-कभी इस खोजके लिए कवि देश-देशान्तरके काव्यकी ओर निगाह दौड़ाता है और उसमेंसे अपनी प्रकृति-के अनुकूल काव्य-कृतियोंको खोजता है : मसलन् एज़रा पाउण्ड द्वारा चीनी कविताओंकी खोज।

किन्तु यहाँपर एक बात कहना चाहूँगा। आधुनिक प्रकृति उतने निष्क्रिय समर्पणकी नहीं है कि जिस क्षण "भई रे पूता गुरू सौं भेंट" उसी क्षण अपना दायित्व समाप्त समझ ले। आधुनिक प्रकृतिके अनुसार यह खोज उन अर्थोंमें अब गुरुकी खोज न होकर एक सफल और समर्थ "समानधर्मा" की खोज होती है। वह समानधर्मी कृतित्व खोजता है, वह

एक कविमें मिले या कई कवियोंमें, एक भाषामें मिले या कई भाषाओंमें, एक काव्यधारामें मिले या कई काव्यधाराओंमें ।

जब कहीं किसी दूसरी भाषामें भी इस तरहके किसी कृतित्वकी उपलब्धि नये कविको होती है तो उसका सहज उत्साह उस कृतित्वको अपनी भाषामें पुनःप्रस्तुत करना चाहता है । उसको सहसा यह लगता है कि "अरे सचमुच बिलकुल यही बात तो वह कहना चाहता था पर कहनेका इतना सटीक ढंग उसे नहीं आ पा रहा था ।" और वह काव्य कृति स्वयम् उसमें एक रचनात्मक उत्साह जगा देती है और अनुवाद उसीका परिणाम होता है । लेकिन यहीं पर एक कठिनाई भी आ खड़ी होती है । मूल कृति-में और उसके अनुवादके बीचमें दीवारें बहुत बड़ी रहती हैं । पृथक् संस्कार, पृथक् काव्य-रूढ़ियाँ, पृथक् बिम्ब समूह । जोड़ने वाला तत्त्व बहुत क्षीण रहता है । और ऐसी स्थितिमें सफल अनुवाद प्रस्तुत करें तो वह शाब्दिक अनुवाद नहीं हो पाता और शाब्दिक अनुवाद प्रस्तुत करें तो वह सफल नहीं हो पाता । और काव्य-कला ऐसी कला है जिसमें शब्द बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण है ।

इसी स्थितिको लक्षित कर एक अनुवादकने कहा था कि "काव्या-नुवादकी प्रकृति बिलकुल स्त्री-प्रकृति होती है । जितनी सुन्दर होगी उतनी ही अविश्वसनीय ।" स्त्री-प्रकृतिके बारेमें तो इस कथनसे पूर्णतया सहमत हूँ पर अनुवादोंके सम्बन्धमें मेरे ख्यालमें एक बीचका रास्ता निका-लनेकी गुंजायश है । मैंने भरसक कोशिश की है कि अनुवाद सुन्दर भी बनें और विश्वसनीय भी ।

इन अनुवादोंको प्रस्तुत करते समय स्वयम् इन महान् कवियोंकी वाणीमें डूबनेकी जो सुखद अनुभूति मिली है, जिस प्रकार कभी-कभी मेरे अन्दर कहीं कुछ जो बन्द था खुलता हुआ लगा है, जिस प्रकार मुझे आत्मीयता और समानधर्मी तत्त्व मिले हैं उनके लिए मेरा मन आदर और आभारसे नत है ।

१६ जून, ६० .

—धर्मवीर भारती

अनुक्रम

कोस्टारिका

ग्रीस

चिली

जर्मनी

तुर्की

स्पेन

सोवियत रूस

हालैण्ड

समापन

कवि-परिचय

अमेरिका

एज़रा पाउण्ड : ज० १८८५। अंग्रेज़ीभाषी देशोंमें आधुनिक काव्यधाराका जन्मदाता। ईलियट, हेमिंग्वे, जेम्स ज्वायस जैसी प्रतिभाओंका प्रोत्साहक। अनेक काव्यान्दोलनोंका प्रवर्त्तक।

वैलेस स्टीवेन्स : ज० १८७९। एक बड़ी व्यावसायिक कम्पनीका उपाध्यक्ष। उसने आधुनिक नागरिक सभ्यताके उपकरणोंसे एक स्वतन्त्र स्वप्न-लोक सृजन करनेकी चेष्टा की है।

कार्ल सैण्डबर्ग : ज० १८७८। वाल्ट ह्विटमैनका अनुयायी।

एडना सेण्ट वी० मिले : ज० १८९२। आधुनिक काव्यमें स्वच्छन्दतावादी सौन्दर्योपासनाकी प्रवृत्तिकी ओर विशेष झुकाववाली कवियित्री।

ई० ई० कमिंग्स : ज० १८९४। नये प्रयोगोंका सफल कवि।

केनेथ पैचेन : ज० १९११। आश्चर्यजनक सफलताओंका कवि। तानाशाही-का विरोध, लेकिन मानवीय नियतिके उज्ज्वल भविष्यमें अदम्य आस्था।

विलियम कार्लोस विलियम्स : ज० १८८३। चिकित्सक। अपने सम-कालीनोंमें सम्मान प्राप्त कवि।

जाँ स्टार अण्टर मेयेर : ज० १८८६। पत्रकार। अध्यापक।

आर्चीबाल्ड मैक्लीश : ज० १८९२। पत्रकार। युद्धमें भाग लिया। विदेश भ्रमण और रेडियो छन्दरूपकोंमें ख्याति प्राप्त की।

अर्जेण्टाइना

राफ़ाएल अल्बर्टो एरियेटा : ज० १८८९। लाप्लाश विश्वविद्यालयमें यूरो-पीय साहित्यका अध्यापन।

कोराँदो नले राक्शेलो : ज० १९००। जेनेवामें शिक्षा। स्पेनमें रहकर अत्याधुनिकवादका नेतृत्व। १९२१में अर्जेन्टाइनामें आकर नयी काव्य-धाराका प्रवर्तन।

एल्फांजिना स्टार्नी : ज० १८९२–मृ० १९३८। स्विट्ज़रलैण्डमें जन्म। अध्यापन तथा पत्रकारिता। शैली और विषयके कारण अत्यन्त लोकप्रिय कवियित्री।

जार्ज लुइस बोरजे : ज० १८९८। ब्यूनो आयर्सकी समितिसे काव्यपुरस्कार प्राप्त।

लुइस कने : ज० १८९७। १७वीं शतीकी बैलेड शैलीको अपनाकर नये विषयोंपर काव्य-प्रयोग।

लुइस एल० फ्रान्को : ज० १८९८। स्थानीय लोकगीतोंके प्रभाव-ग्रहण।

फ्रान्सिस्को लापेस मेरिनो : ज० १९०४–मृ० १९२८। सुकुमार और उदास कविताओंके कारण प्रख्यात। अल्प वयमें मृत्यु।

ल्यापाल्डो मरेशल : ज० १९००। प्रमुख साहित्यिक पत्रिका 'लिबरा' का सम्पादन।

इक्वाडोर

जार्ज करेरा अन्द्रादे : ज० १९०३। १५ वर्षकी आयुमें ही एक पत्रिकाके सम्पादनसे साहित्यिक जीवनका आरम्भ। सारी आयु पत्रकार और राजदूतके कार्यमें बीती है। सन् १९२० के बाद जर्मनी, फ्रान्स और स्पेनकी यात्रा। १९३८में जापानकी यात्रा और हाइकू शैलीमें नये काव्य-प्रयोग। १९३९-४०में चीन यात्रा और चीनी दृश्यांकनोंका काव्यमें प्रभाव।

इंग्लैण्ड

रूपर्ट ब्रुक : ज० १८८७–मृ० १९१५। प्रथम महायुद्धमें मृत्यु।

जेम्स ज्वायस : ज० १८८२। प्रख्यात अवचेतन प्रधान कथाकार। सन् १९४१में फ्रान्समें मृत्यु।

डी० एच० लारेन्स : ज० १८८५–मृ० १९३०। अत्यन्त प्रतिभाशाली कथाकार, कवि तथा मौलिक चिन्तक। निम्नवर्गसे उठा और उग्र विचारोंके कारण रूढ़िवादियों और साम्यवादियोंकी समान रूपसे आलोचना करता रहा।

वाल्टर डि ला मेयर : ज० १८७३। कल्पना और सुकुमार भावनाओं, सूक्ष्म लयों और सहज अभिव्यक्तियोंके लिए ख्यात।

एडिथ सिटवेल : ज० १८८७। इंग्लैण्डके एक अभिजात्य परिवारमें उत्पन्न। रहस्यवाद तथा नयी काव्य शैलीकी सफल प्रयोगकर्त्री।

टी० एस० ईलियट : ज० १८८८। अमेरिकामें उत्पन्न। एज़रापाउण्डसे प्रभाव-ग्रहण। १९१३ से लन्दनमें निवास। पहले बैंकमें क्लर्क। फिर अध्यापन। इस समय एक प्रकाशन संस्थाका संचालन। समकालीन अंग्रेज़ी कवियोंमें उच्चतम स्थान। नोबुल पुरस्कार प्राप्त।

डब्ल्यू० एच० ग्राडेन : ज० १९०७। बीसवीं शतीके तीसरे दशकसे आक्सफोर्ड गोष्ठीका प्रवर्तक। पहले मार्क्सवाद, बादमें धर्मकी ओर झुकाव।

सेसिल डे ल्युइस : ज० १९०४। आडेन गोष्ठीका सम्मानित सदस्य। अध्यापन और समीक्षा।

लुई मैकनीस : ज० १९०७। आडेन गोष्ठीका प्रारम्भिक सदस्य। प्रवाहशील काव्य। बी०बी०सी० में पद्यरूपकोंका प्रणेता और प्रस्तुतकर्ता।

डिलन टामस : ज० १९१४–मृ० १९५७। एक नयी काव्य-भाषाका प्रवर्तक। अल्प वयमें मृत्यु।

एलिजाबेथ जेंनिग : सन् ४० के उपरान्त प्रख्यात होनेवाले कवि-वर्गमें प्रतिष्ठित स्थान।

इटली

ग्रन्तोन्यो रिनाल्दी : ज० १९१४। अध्यापन। १९४७में काव्यपर पुरस्कार प्राप्त।

गीपेस उंगारेत्ती : ज० १८८८। मिस्रमें उत्पन्न। इटलीका वर्तमान महाकवि।

क्यूबा

निकोलस गील्यिन : क्यूबाके लोक साहित्यका विशेषज्ञ। अध्यापक, पत्रकार, मेयर और राज्याधिकारी रह चुका है। प्रारम्भिक कविताओंपर विलाँ और बोदलेयरका प्रभाव।

रेजिनो पेद्रोसो : चीनी और नीग्रो रक्तका मिश्रण। श्रमजीवी। शक्कर और इस्पातके कारखानोंमें जीवन भर काम किया है।

कोस्टारिका

राफाएल एस्त्रादा : ज० १९०१–मृ० १९३४। संगीतज्ञ। क़ानूनका विशेषज्ञ।

दुरासीने वावाल : (हैटी) पेरिसमें शिक्षा प्राप्त। न्यायाधीश। लन्दन और हवानामें प्रतिनिधि - मण्डलका अध्यक्ष। प्रतीकवादी धाराका प्रथम कवि।

राफाएल आरेवालो मार्टिनेज़ : (ग्वाटेमाला) राष्ट्रीय पुस्तकालयका अध्यक्ष। चिर-परिचितको रसमय और काव्यात्मक बनानेमें कुशल।

ग्रीस

ज्योर्जोस द्रोसिनिस : ज० १८५९। 'एस्टिया' नामक पत्रिकाका संस्थापक। शिक्षा विभागका संचालक रहा।

सी० बी० कवफ़ी : ज० १८६८–मृ० १९३३। इंग्लैण्डमें शिक्षा प्राप्त। जीवनमें केवल दो बार एथेन्स जा पाया किन्तु ग्रीसमें आधुनिक काव्य-धाराका सक्षम प्रवर्तक।

तेफ़ेरास अन्थियस : ज० १६००। एथेन्स निवासी।

सोनिरिस स्किपिस : ज० १८८१। फ़ान्समें शिक्षा प्राप्त।

एंजेलिनो सिकिलियानोस : ज० १८८४। एक अमेरिकन तरुणीसे विवाह। ग्रीसकी पुरानी संस्कृतिके नवजागरणमें संलग्न। प्राचीन नाट्य-परम्परा, पुराने लोकपर्व आदिका पुनरुत्थानकर्ता।

चिली

ग्रैब्रिएला मिस्त्राल : प्रथम काव्य-संकलन १९१४ में प्रकाशित। शिक्षा अधिकारी, राजदूत, साहित्य विभागकी अध्यक्षा रह चुकी है। परम्परागत काव्यरूप तथा आधुनिक शैलीमें समान रूपसे सफल। १९४५ में नोबेल पुरस्कार प्राप्त।

पैब्लो नेरूदा : नये काव्यरूपोंका समर्थ प्रयोक्ता। स्पेनमें राजदूत। पिछले दिनों राजनीतिक क्षेत्रमें प्रवेश और अब साम्यवादियोंमें लोकप्रिय।

विन्सेन्त यूदोबारो : ज० १८९३। चिलीके साहित्यमें सर्वप्रथम यूरोपीय प्रभावोंको ग्रहण किया। बहुत-सा काव्य फ़्रान्सीसी भाषामें ही लिखा।

पैब्लो द' रोख़्य : ज० १८९४। एक देहाती बूर्जुआ परिवारमें उत्पन्न। अध्ययन। पत्रकारिता। मार्क्सवादी। मल्टीट्यूड्स नामक पत्रका सम्पादन।

जर्मनी

ह्यूगो वान हाफ़मान्स्थल : ज० १८७४–मृ० १९२९। वियना निवासी। अधिकांश कविताएँ १७ वर्षसे २५ वर्षकी आयुमें लिखी गयीं, तदुपरान्त नाटक और समीक्षाकी ओर अभिरुचि।

रेनर मरिय रिल्क : ज० १८७५–मृ० १९२७। सम्भवतः इस शतीका महानतम यूरोपीय कवि। रहस्यवादी अनुभूतियाँ, मानवीय परिवेश, सूक्ष्मतम भाषाका प्रयोग और गीतात्मकता। विश्वके आधुनिक काव्य-पर रिल्कका प्रभाव अमिट है।

बर्तोल्त ब्रेख़्त : ज० १८९०–मृ० १९५६। १९२२ में अपने थ्री पेनी आपेरासे अकस्मात् प्रख्यात। विश्व नाट्य-साहित्यका एक महान् व्यक्तित्व। मार्क्सवादी। सन् '३३ में नाज़ियोंके कारण निर्वासित। युद्धके बाद पूर्वीय जर्मनीमें प्रत्यावर्तन और सन् १९५६ में दिवंगत।

हरमान हेस्स : प्रख्यात कथाकार कवि। नोबेल पुरस्कार प्राप्त।

फ्रेडरिक जार्ज युंगर : ज० १८९८। हैनोवर निवासी। परम्परागत काव्य-रूपोंका नवीन सन्दर्भोंमें प्रयोग।

तुर्की

नाज़िम हिकमत : तुर्कीका प्रख्यात कवि। उग्र राजनीतिक विचारोंके कारण आयुका श्रेष्ठ भाग जेलख़ानोंमें बिताना पड़ा है। शान्ति पुरस्कारका विजेता।

यहिया कमाल : पुरानी पीढ़ीका कवि किन्तु नये काव्यरूपोंका प्रयोग। नेशनल असेम्बलीका उपाध्यक्ष रह चुका है।

जफ़र यतक्री : युद्धोत्तर पीढ़ीका अग्रणी रोमानी कवि।

हसन दिनाम : नाज़िम हिकमतका शिष्य।

फाजिल हुस्नू दागलार्का : प्रख्यात कवि। कई लोकप्रिय संकलनोंका प्रणेता।

४

नीग्रो (अमेरिकन)

फेन्टन जॉन्सन : जन्म, १८८८, शिकागो। इन्होंने १९ वर्षकी अवस्थासे ही मौलिक नाटक लिखना आरम्भ कर दिया था। १९१४ में पहला कविता संग्रह : 'अ लिट्ल ड्रीमिंग', कविके अतिरिक्त पत्रकार, और कथाकार भी। आरम्भिक कविताओंमें आत्मवाद और डायलेक्ट स्कूलसे प्रभावित, बादमें सैंडवर्गसे।

लेस्ली पिंकनी हिल : जन्म १४ मई, १८८०। जिंकन यूनिवर्सिटीसे १९०४ में डाक्टरेट (साहित्यमें)। आधुनिक अमेरिकाका महान् शिक्षाविद् और समाज-सुधारक, गीतकार और नाटककार 'द विंग्स ऑफ़ आपरेशन'—गीत संग्रह, १९२७ में, टाँसेंट ल ओवर्चर, नाटक १६२९ में।

क्लॉड मैके : जन्म १५ सितम्बर, १८९० जमैका (वेस्ट इण्डीज़में), मृत्यु २२ मई १९४९। जन्मजात कवि, उपन्यासकार, पत्रकार और पर्यटक। औपचारिक ढंगसे कोई शिक्षा नहीं। २२ वर्षकी अवस्थासे ही साहित्यकार। अनेक पुरस्कारोंका विजेता। होटलमें वेटर, फ़ांसमें आर्टिस्टके माडलसे लेकर लन्दन और न्यूयार्कमें पत्रकारिता तकके धन्धे। साथ ही साहित्य-रचना। गोरी जातिकी शोषणकारी प्रवृत्तियों-के विरुद्ध अत्यन्त उग्र काव्य-साहित्यका प्रणेता। 'सॉंग्स ऑफ़ जमैका, 'हार्लेम शैडोज़', बनाना बॉटम, बांजो, आदि प्रसिद्ध कृतियोंका स्रष्टा।

जोज़फ सीमन कॉटर : जन्म केंटकीके बाईस टाउनमें—१८६१। तीसरे दर्जे (सीनियर) से स्कूल छोड़ देना पड़ा, और २२ वर्षकी उम्रमें जब फिरसे पढ़ना शुरू किया, तब तक ईंट बनाने और तम्बाकूकी निराई करनेकी मज़दूरीसे लेकर, प्राइज़ फाइटर (दंगलबाज़ी) तकके धन्धे कर चुका था। किन्तु शिक्षित होनेके बाद, अच्छा-खासा शिक्षा शास्त्री हो गया। इसके अतिरिक्त, वह कवि और बाल-साहित्यका स्रष्टा है। डनबार परम्परावादी होनेपर भी, कटु-आलोचक। 'ट्रेजेडी ऑफ़ पीट' बहु पुरस्कृत। काव्य-संग्रह '३८ में।

लैंग्सून ह्यू जेंस : जॉपलिनमें, १ फरवरी १९०२ में जन्म। १९४३ में डी० लिट्। अमेरिकाके अग्रणी कवियोंमेंसे एक। काव्य-क्षेत्रमें अनेक पुरस्कारोंसे सम्मानित। अत्यन्त जागरूक यह अमेरिकन, गीतकार,

कहानीकार, रेडियो स्क्रिप्ट लेखक, व्यंगकार—साहित्यके प्रत्येक क्षेत्रमें, नीग्रो जीवनके सम्पूर्ण अंगोंका सशक्त चितेरा।

प्युर्टोरिको

अलीसिया कार्मेन कदील्या : ज० १९०८। 'आल्मा लातीना'की सम्पादिका। कैथोलिक। ग्रैब्रियेला मिस्त्रालसे प्रभावित।

लुइस मुनोज़ मारिन : प्युर्टोरिकोके स्वतन्त्रता संग्रामके अधिनायक लुइस मुनोज़ रिवेशका पुत्र। पापुलर डेमोक्रेटिक पार्टीका नेता। राज परिषद्का अध्यक्ष।

पेरू

एनरीक़ बुस्तामान्ते बैलीवियन : ज० १८८४–मृ० १९३७। निरन्तर विकासशील शैली। प्रकाशन संस्थाका अध्यक्ष। राजदूत।

एमिलियो वास्केज : ज० १९०३। रेड इण्डियन वातावरण और शब्दावलीसे शैलीको समृद्ध बनानेका प्रयास किया है।

सेसर वाल्येज्यो : ज० १८९५–मृ० १९३६। मध्यवर्गमें उत्पन्न। लोकप्रिय शैली। १९२३ में यूरोप प्रस्थान। स्पेनके गृहयुद्धसे भयानक मानसिक आघात।

ज़ेवियर एब्रिल : ज० १९०३। यूरोप निवासके समय अति यथार्थवादका प्रभाव। बादमें रूमानी नवप्रतीकवादकी ओर झुकाव।

एनरीक़ पेना बैरीनिशिया : ज० १९०४। प्रतीकवादी। कूटनीतिक प्रतिनिधि।

कार्लोस आकिन्दो द अमात : ज० १९०९—मृ० १९३६। अतियथार्थवादी धाराका प्रमुख कवि। १९३१ में राजनीतिक निर्वासन मिला। स्पेन में यक्ष्मासे मृत्यु।

राफ़ाएल मेन्देज़ दोरिख़ : ज० १९०३। प्रारम्भमें धर्मके प्रति अभिरुचि : १९३० में आतंकवादी आन्दोलनमें शरीक़। कवितामें प्रभाववादी शैली।

फ्रांस

लुई अरगाँ : प्रख्यात कथाकार, कवि, कम्यूनिस्ट कार्यकर्ता। प्रारम्भमें अतियथार्थ-वादी धारा। बादमें सामाजिक यथार्थवादी धाराका अनुसरण।

पाल इल्यार : समकालीन काव्यका महत्तम व्यक्तित्व। अतियथार्थवादी धाराका नेता।

जाक़ प्रीवर्ट : अत्यन्त लोकप्रिय कवि। काव्यके अतिरिक्त अतियथार्थवादी चित्रोंका निर्माता।

अलें बास्के : ओडेसामें उत्पन्न। बेलजियममें शैशव बीता। अब अमेरिका वासी।

पाल कालिने : बेलजियममें उत्पन्न। अतियथार्थवादी।

क्लाद राय : ज० १९१५। पेरिस निवासी।

रेने शार : शिल्प और प्रतीक योजनाकी दृष्टिसे सबसे लोकप्रिय कवि। इल्यारका शिष्य।

अरीं मिशो : यश और प्रतिष्ठामें इल्यारका समकक्ष। बेलजियममें उत्पन्न किन्तु अब फ्रेंच नागरिक।

फ्रांसी जेम : ज० १८६८, मृ० १९३७। सरलता तथा चित्रात्मकता प्रधान शैलीके लिए प्रख्यात।

ब्राज़ील

म्यूरियेल भेन्द : ज० १९०२। १९३३ में प्रथम काव्य-संकलनका प्रकाशन। नव कैथोलिक प्रवृत्तिका अनुयायी।

जॉर्ज दे लिमा : ज० १८९३। नयी प्रवृत्तियोंका अग्रदूत। चिकित्सक। अध्यापक। विधान सभाका सदस्य।

कार्लोस द्रमन्द द अन्द्रादे : समकालीन कवियोंमें सबसे सचेत शिल्पकार। अतियथार्थवाद कल्पनाएँ।

मान्युएल बान्दैरा : पत्रकार। नवरूमानी प्रवृत्तियोंकी ओर झुकाव।

रोनाल्द द कैरवाल्हो : ज० १८९६—मृ० १९३५। पत्रकार। राजदूत। राज्याधिकारी।

मैक्सिको

जेम तारेंस बोदो : ज० १९०२। कूटनीतिक विभागका अध्यक्ष। 'कान्तेमा-रेनियो' पत्रकी गोष्ठीका सक्रिय सदस्य।

एनारो एस्त्रादा : ज० १८८७–मृ० १९३७। १६३० में गृहमन्त्री। स्पेनमें राजदूत रहा।

राफ़ाएल सोलाना : ज० १९१५। 'टालर' समूहका सदस्य।

कार्लो पेलिसर : ज० १९०२। परम्पराका स्वर अपेक्षाकृत अधिक मुखर।

ग्राक्टावियो पाज़ : सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कवि। प्रख्यात साहित्यिक पत्र 'टालर'के संचालक समूहका प्रमुखतम सदस्य।

एनरीक गोंज़ालेज मार्टिन : ज० १८७१–मृ० १९५२। बौद्धिकताप्रधान कवि। नयी प्रवृत्तियोंकी दिशामें समकालीनोंका नेतृत्व किया।

विल्बर्तो एल० कैन्टान : ज० १९२२। पत्रकार। समीक्षक। गद्यलेखक।

स्पेन

मिगुएल द उनामुनो : ज० १८६४–मृ० १९३६। अस्तित्ववादी काव्य-धाराका अग्रदूत।

ग्रन्तोनियो मशादो : ज० १८७५–मृ० १९३९। सहज काव्यशैली। स्पेनी गृहयुद्धमें मारा गया।

जुग्राँ रेमाँ जिमेनेज़ : ज० १८८१। सुकुमार संगीतात्मक शैली। अब अमेरिकाका नागरिक।

राफ़ाएल ग्रलबर्टी : ज० १९०२। स्पेनमें उत्पन्न। अब अर्जेन्टाइनाका निवासी।

फेडरिको गार्सिया लोर्का : ज० १८९९–मृ० १९३६। लोकगीतोंसे प्रभावित काव्य-शैली। आधुनिक स्पेनी कवियोंमें सर्वाधिक प्रख्यात।

मिगुएल हर्नान्देज़ : ज० १९१०–मृ० १९४२। सरल लोकगीत शैलीसे विकसित होकर प्रौढ़ताकी ओर उन्मुख। फ्रैन्को सरकारके कारागारमें बन्दी होकर मरा।

पेद्रो सालिनस : ज० १८९१–मृ० १९५१। सूक्ष्म गीतात्मक भावनाएँ। गृहयुद्धके बाद स्पेनसे निर्वासित।

सोवियत रूस

ग्रलेक्ज़ैण्डर ब्लाक़ : प्रतीकवाद धाराका महत्तम कवि। रूसी क्रान्तिपर

उनकी कृति 'द ट्वेल्व' आधुनिक रूसी काव्यकी महत्त्वपूर्ण कृति जानी जाती है।

डिमिट्री मर्भ्काव्स्की : ज० १८६५। समीक्षक। रहस्यवादी प्रवृत्तियाँ।

वाल्डीमीर मायकाव्स्की : ज० १८९३–मृ० १९३०। प्रारम्भमें भविष्य-वादी, बादमें कम्युनिस्ट, अन्तमें आत्महत्या।

सर्जी येसेनिन : १९१६ में प्रकाशित संकलनसे प्रख्यात। बिम्बवादी। कम्यूनिस्टोंसे असहमत। आत्महत्याद्वारा मृत्यु।

इवान ब्युनिन : क्रान्तिके बाद निर्वासित। नोबल पुरस्कार प्राप्त। प्रख्यात कथाकार और कवि। रूसमें उसकी कृतियोंका प्रकाशन निषिद्ध।

अन्ना अख्मातोवा : प्रख्यात गीत-लेखिका। ज़्डैनावकी कोप-भाजन।

बोरिस पास्तरनाक : ज० १८९० मृ० १९६०। महत्तम रूसी कवि। १९५८ में नोबल पुरस्कार मिला किन्तु ख्रुश्चेवके रुखके कारण अस्वीकार करना पड़ा।

कोन्स्तान्तिन सिमानाव : द्वितीय महायुद्धमें गीतोंके कारण प्रसिद्ध। रूसी सरकारका कृपापात्र।

बेनेज़ुएला

एंजेल मीगेल केरेमेल : ज० १८९९–मृ० १९३९। अति यथार्थवाद और रहस्यवादी प्रवृत्तियाँ।

मीगेल आटेरो सिलवा : बहुत दिनों तक देशसे निर्वासन। रूमानी प्रवृत्तियाँ।

आटो द सोला : वियेर्नका सम्पादक। समकालीन कवियोंमें प्रमुखतम।

हालैण्ड

गेरि आख्तरबर्ग : ज० १९०८। असन्त लोकप्रिय कवि।

एद्रियाँ मोरिएँ : ज० १९१२। कवि। समीक्षक। पत्रकार।

हेन्स लाडीज़ेन : ज० १९२४—मृ० १९४९। मृत्युके बाद कविताओंका प्रकाशन।

ल्यूसबर्ट : ज० १९२४। चित्रकार। सम्पादन।

वसालिस : ज० १९०९। एक प्रख्यात कवियित्री जो चिकित्सक है।



शान्ति को
अमित ममता और
आभार से

मुझमें बसे हुए स्मृतिबिम्ब, सुदूर महसूस किये हुए दृश्य,
मीनारें, नगर, सेतु और रास्तोंके
अप्रकाशित घुमाव और देवताओंकी बस्ती
वाले रहस्यमय देशोंका इन्द्रजाल :

'रिल्के'

५

प्रस्तावना–

सृजन का शब्द

आरम्भ में केवल शब्द था
किन्तु उसकी सार्थकता थी श्रुति बनने में
कि वह किसी से कहा जाय
मौन को टूटना अनिवार्य था
शब्द को कहा जाना था
ताकि प्रलय का अराजक तिमिर
व्यवस्थित उजियाले में
रूपान्तरित हो

ताकि रेगिस्तान
गुलाबों की क्यारी बन जाय
शब्द का कहा जाना अनिवार्य था

आदम की पसलियों के घाव से
इवा के मुक्त अस्तित्व की प्रतिष्ठा के लिए
शब्द को कहा जाना था

चूँकि सत्य सदा सत्य है
आज भी अनिवार्य है
अतः आज के लिए भी शब्द है
और उसे कहा जाना अनिवार्य है

—जाँ स्टार अन्टरमेयेर

अमेरिका

एक लड़की

एक वृक्ष मेरे हाथों में समाविष्ट हो गया है
मेरी बाँहों में अन्दर अन्दर वृक्ष-रस चढ़ रहा है
वृक्ष मेरे वक्ष में उग आया है
अधोमुखी,
डालें मुझमें से उग रही हैं—बाँहों की तरह

वृक्ष वह तुम हो
तुम हो हरी काई
तुम हो वायलेट के फूल जिन पर हवा लहराती है
एक शिशु--और इतने ऊँचे--तुम हो

और देखो तो दुनिया के लिए यह मात्र नादानी है

—*एज़रा पाउण्ड*

अक्र चहार का मक़बरा

मैं तुम्हारी आत्मा हूँ, निकुपतिस्, मैंने निगरानी की है
पिछले ५० लाख वर्षों से, और तुम्हारी मुर्दा आँखें
हिलीं नहीं, न मेरे रति-संकेतों को समझ सकीं
और तुम्हारे कृश अंग, जिनमें मैं धधकती हुई चलती थी,
अब मेरे या अन्य किसी अग्निवर्णी वस्तु के स्पर्श से धधक नहीं
उठते !

देखो तुम्हारे सिरहाने तकिया लगाने को घास उग आयी है
और चूमती है तुम्हें अपनी अगणित पल्लव-जिह्वाओं से
पर मैं तुम्हारे चुम्बनों से वंचिता हूँ
मैं दीवार के स्वर्णाक्षर पढ़ चुकी हूँ
और उनके प्रतीकों पर अपनी चिन्तना थका चुकी हूँ
और इस मक़बरे में अब कोई भी नयापन शेष नहीं रहा

मैंने तुम्हारा बहुत ख़्याल रक्खा है। देखो मैंने मद्य-मंजूषाओं के
मोम चिह्न नहीं तोड़े कि
तुम कहीं जाग कर मदिरा की एक घूँट न पीना चाहो
और तुम्हारे समस्त वस्त्रों की शिक़नें मैं ठीक करती रही हूँ

मैं कैसे भूलूँ ओ निर्मोही !
कुछ ही दिनों पहले मैं नदी थी···
नदी ? हाँ; तुम कितने किशोर थे
और तुम पर तीन आत्माएँ मँडरा रही थीं
और मैं आई
और बहती हुई तुममें प्रविष्ट हो गयी, उनको अपदस्थ करती हुई
मैं तुमसे एकमेक रही हूँ, तुमको रत्ती रत्ती जानती हूँ
क्या मैंने तुम्हारी हथेलियाँ और अँगुलियों के पोर नहीं छुए हैं ?
मैं तुममें आयी, तुम्हारे आरपार गयी, एड़ियों के आसपास तक
और आना जाना क्या ? क्या मैं ही तुम नहीं थी ? केवल तुम ?
और इस स्थान में कण भर धूप भी मुझे चैन देने नहीं आती
गहन तिमिर मुझे चीर रहा है
और मुझ पर ज्योति अवतरित नहीं होती,
और तुम भी एक शब्द नहीं कहते, दिन पर दिन बीतते जाते हैं।

६

ओह मैं मुक्त हो सकती हूँ, सील मुहर
और द्वार पर की गयी तमाम शिल्पकारी के बावजूद
हरे काँच से बाहर जा सकती हूँ······
·····················

किन्तु यहाँ शान्ति है
अतः कौन जाय ?

—*एज़रा पाउण्ड*

समापन वाक्य

ओ मेरे गीतो
इतनी उत्कण्ठा और जिज्ञासा से क्यों देखते हो तुम लोगों के
चेहरों में
क्या उनमें तुम्हें अपने गुज़रे खोये मिल जायँगे ?

—एज़रा पाउण्ड

गोदना

रोशनी मकड़ी है
जल पर रेंगती है
बर्फ़ के किनारों पर
तुम्हारी पलकों के तले
और वहाँ अपना जाला बुनती है
अपने दो जाले

तुम्हारे नेत्रों के जाले
हिलगे हैं, तुम्हारे
मांस और अस्थियों से
जैसे छत की कड़ियों या घासों से

तुम्हारे नेत्रों के डोरे हैं
जल की सतह पर
वर्फ़ के छोरों पर

—*वालेस स्टीवेंस*

घास

आस्टरलिज़ हो या वाटरलू
लाशों का ऊँचे से ऊँचा ढेर हो—
दफ़ना दो; और मुझे अपना काम करने दो !
मैं घास हूँ, मैं सबको ढँक लूँगी

और युद्ध का छोटा मैदान हो या बड़ा
और युद्ध नया हो या पुराना
ढेर ऊँचे से ऊँचा हो, बस मुझे मौक़ा भर मिले

दो बरस, दस बरस—और फिर उधर से
गुज़रने वाली बस के मुसाफ़िर
पूछेंगे : यह कौन सी जगह है ?
हम कहाँ से होकर गुज़र रहे हैं ?
यह घास का मैदान कैसा है ?

मैं घास हूँ
सबको ढँक लूँगी !

—*कार्ल सैण्डबर्ग*

किन होठों को…

किन होठों को ग्रहण किया है मेरे होठों ने, और कहाँ, और क्यों,
मैं भूल गयी हूँ—कि कौन-सी बाँहे फैली रही हैं
मेरे सर के नीचे सुबह होने तक, मगर आज रात की बारिश
सजीव है रहस्यमयी छायाओं से, जो दस्तक देती हैं
खिड़की के शीशे पर, आह भरती हैं

और इन्तज़ार करती हैं जवाब का;
और मेरे दिल में उभरता है एक ख़ामोश दर्द
उन विस्मृत तरुणों के लिए जो अब कभी
आधी रात आँखों में आँसू भरे मेरे वक्ष में माथा छुपाने नहीं
आयेंगे

जैसे शिशिर में खड़ा रहता है एकान्त पत्रहीन तरु
नहीं जानता कि कौन-कौन से पक्षी उड़ गये हैं एक कर,
पर यह जानता है कि उसकी डालियाँ पहले से कहीं ज़्यादा
ख़ामोश हैं—
मैं नहीं जानती कि कौन से प्यार मेरे जीवन में आये और गये—
सिर्फ़ यह कि मुझमें वसन्त मुखर था
कुछ ही पहले—और अब नहीं है

—एडना सेन्ट विन्सेन्ट मिले

७

प्यार

जल गाढ़ा रुपहला है चट्टान पर
जल गाढ़ा रुपहला है चट्टान की
अस्वीकृति पर। वह गिरता नहीं। भर देता है। बहाव से
हर दरार को, चट्टान की हर कमी को, हर ख़ालीपन को।
नदी बहती नहीं। नदी तो सिर्फ़ गाढ़े रुपहले निजत्व को
चट्टान पर गहरे आँकना चाहती है। चट्टान अस्वीकार
करती है।

जो दौड़ता है
उच्छल लहराता धूप में, वह चट्टान का
नदी के प्रति अस्वीकार है। नदी नहीं।

—आर्चीबाल्ड मैकलीश

प्रेम एक विन्दु है

प्रेम एक विन्दु है
और इस विन्दु से होकर
(शान्ति की ज्योति से प्रकाशित)
समस्त विन्दु संसरण करते हैं

'हाँ' एक लोक है
और इस एक स्वीकृति के लोक में
(होशियारी से लिपटे हुए)
समस्त लोक अन्तर्निहित है

—ई० ई० कमिंग्ज़

वह 'कहीं'

वह 'कहीं' जहाँ मैं कभी नहीं पहुँचा, किसी भी अनुभूति
के सुखद उस पार
तुम्हारी आँखों का मौन है :
तुम्हारी सबसे सुकुँवार भंगिमाओं में कुछ है जो
मुझे चारों ओर से मूँद लेता है
या उसे मैं छू भी नहीं पाता वह इतना अन्तरंग है

तुम्हारी हल्की-सी निगाह मुझे आसानी से खोल देती है
हालाँकि मैंने अपने को मुट्ठियों की तरह बन्द कर रक्खा है
तुम मुझे सदा एक-एक पाँखुरी कर खोलती हो जैसे चैत
खिला देता है (एक सावधान रहस्यस्पर्श से)
अपना पहला गुलाब

या अगर तुम मुझे मूँदना चाहो तो मैं
और मेरा जीवन बड़ी ख़ूबसूरती से मुँद जायगा, अकस्मात्
जैसे यह फूल जब इसको ख़्याल आ जाता है
चारों ओर धीरे-धीरे गिरते हुए तुहिन का

कुछ ऐसा नहीं है मेरी निगाह में इस तमाम दुनिया में
जो मुक़ाबला कर सके, तुम्हारी चरम सुकुँवारिता की
असीम शक्ति का
जिसका स्पर्श मुझे विवश कर देता है अपने विभिन्न प्रदेशों के
उठते गिरते रंगों से
जिसकी हर साँस में मृत्यु और अनन्तकाल प्रस्तुत होता है

(मैं नहीं जानता कि वह क्या है तुममें जो मूँदता है
खोलता है; केवल यह कि मुझमें कुछ है जो समझता है
तुम्हारी आँखों की आवाज़ तमाम गुलाबों से अथाह है)
कोई नहीं, यहाँ तक कि बरखा बूँदों की हथेलियाँ भी इतनी
नन्हीं नहीं होतीं ।

—ई० ई० कमिंग्ज़

खोये हुए की खोज के रूप में
देखे हुए प्यार की प्रकृति

तुम—नारी; मैं—पुरुष; यह—संसार;
और हममें से हरेक तीनों की कृति है।

वर्फ़ में ढँकी हुई पगध्वनियाँ; अजनबी आगन्तुक;
पंखटूटी अबाबील; भिक्षुणी; नर्तकी; जीसस के पंख
ग्रामीण पथिकों पर : और कितनी ही सुन्दर
बाँहें हमारे चारों ओर, और परिचित वस्तुएँ

लो कैसे आदिम ज्योति की लकड़ियों के सहारे
सितारे आस्मान में चल रहे हैं, कितनी सहजता से वह
अथाह नील अनन्तता को प्रभु की गुफ़ा में धारण करता है;
जहाँ सीज़र और सुक़रात
पुरानी चट्टानों पर चित्रित आदिम गुहाचित्र से लगते हैं;
देखो, अपनी अबोध आँखों से, संसार को,
जिसमें हम दोनों हैं ।

तुम—लक्ष्य; मैं—यात्री; यह—खोज :
और हममें-से हरेक तीनों का अभीष्ट है

क्योंकि महानता तो केवल बैल है जो फँसी बैलगाड़ी
को बाहर ठेलता है; और जहाँ हम जाते हैं वहीं विवेक है
किन्तु प्रतिभा एक विराट लघुता है, एक द्रवित मर्म स्पन्दन
जो यकसाँ है शिकारी और शिकार के लिए

कितने आहिस्ते से, फूलों की नींद की तरह, मेरी प्यार !
दूब बसी हवा रात के आकुल चरागाहों पर बहती है :
देखो कैसे जंगलों की काष्ठ-आँखें हमारी
अबोधता के स्थापत्य को एकटक देखती हैं

तुम—एक गाँव; मैं—एक अजनबी; यह—एक रास्ता;
और हरेक कुल मिला कर सबका निर्माण है

अतः, यह नहीं कि मनुष्य अधिक करुणा धारण करे,
या निष्करुण हो जाय; बल्कि यह
कि उसकी ज़िन्दगी उदारता का विस्तार पाये--
और नगरों की पताकाओं पर न मैल हो न रथ के धब्बे;
हम कितने दिन नितान्त अकेले छूटे रहे मेरी प्यार, अब
कितना विलम्ब हो चुका है जल पर घायल पावों को और
हमें अभी समाप्त नहीं होना है

क्या तुम्हें अचरज होता था कि स्वर्ग की हर खिड़की
टूटी हुई क्यों थी ?
क्या तुमने खुली समाधि जैसी ईश्वर की हथेलियों में
अनाथ निराश्रितों को देखा ?
क्या तुम पिकी को युद्ध के नासमझी भरे संगीत से
परिचित कराना चाहते थे ?

बर्फ़ में है दबी पगध्वनियाँ; अजनबी आगन्तुक;
पंखटूटी अबाबील; भिक्षुणी; नर्तकी; देहाती पथिकों पर
जीसस की पंख-छाँह; और, हमारे चारों ओर हैं कितनी ही
आकुल ज़रूरतमन्द निराश बाँहें और तमाम चीज़ें
जिनकी अब हमें जानकारी हो गयी है ।

—केनेथे पैचेन

८

सड़क पर पड़े
एक घायल कुत्ते को देखकर

यह मैं ही हूँ
—वह बेबस जानवर नहीं
जो दर्द से कराह रहा है—
जो मुझे अपनी असलियत पर लाकर चौंका देता है
जैसे विस्फोट हुआ हो बम का
ऐसे बम का जिसने बना दिया हो

सारी दुनिया को बंजर
मैं क्या कर सकता हूँ सिवा इसके
कि गीत गाऊँ
और दर्द सुनाऊँ

एक नशीली मूर्च्छा संवेदनाओं पर छा जाती है
जैसे मैंने शीराज़ी ढाली हो : मुझे याद आता है
रेने शा का काव्य
और जो कुछ उसने देखा है

और भोगा है
जिससे अब वह गाता है
केवल सिवार भरी नदियाँ
उनके तट पर उगे डैफ़ोडिल और ट्यूलिप
जिनकी जड़ों को वे सींचती हैं

और वे मुक्त प्रवाहिनी नदियाँ भी
जो उन मधुगन्ध वाले फूलों की नन्हीं जड़ों को
धोती हैं
जो देवपथ पर
खिलते हैं

मुझे याद आती है
इसे देखकर

'नार्मा' की
मेरे शैशव की मेरी प्यारी कुतिया
झबरे बाल, भाव भरी आँखें

उसने बच्चे दिये एक बार
और मैंने एक पिल्ले को जूते से कुचल दिया
इस डर से कि वह उसकी छातियों को
दाँतों से चींथ कर मेरी कुतिया की जान ले लेगा ।

मुझे याद आता है
एक मरा हुआ ख़रगोश
चुपचाप पड़ा हुआ
शिकारी की हथेलियों पर

मैं चुपचाप खड़ा देख रहा था
उसने शिकारी चाक़ू निकाला
और हँसते हुए
भोंक दिया उस
बेबस मुर्दा जानवर के गुप्त अंगों में
मैं मूर्च्छित सा हो गया ।

क्यों मैं सोचता हूँ यह सब ?
मरते हुए कुत्ते की कराहों को
भूल जाना चाहिए
जहाँ तक हो सके

रेने शा,

तुम कवि हो
तुम्हें विश्वास है कि
वह शक्ति है सौन्दर्य में
कि वह हर विकृति को सुधार सकता है

मुझे भी इस पर विश्वास है
साहस और आविष्कार के द्वारा
हम दया के योग्य मूक पशुओं
से आगे बढ़ जायेंगे

सब लोगों को इस पर आस्था रखनी चाहिए
जैसे तुमने मुझे सिखाया है
इस पर विश्वास करना !

—*विलियम कार्लोस विलियम्स*

जीवन-अवधि

एक मुड़ा-मुड़ाया बड़ा-सा
बादामी काग़ज़
क़रीब क़रीब आदमक़द

और आदमी के बराबर
परिधि वाला
लुढ़क रहा था

हवा के साथ
उलटता-पलटता बार-बार
आगे सड़क पर जब

कि एक मोटर सर्र से
गुज़र गयी उसे
कुचलते हुए

ज़मीन पर ! बरक्स
आदमी के, वह
फिर उठ खड़ा हुआ

लुढ़कता-पुढ़कता
हवा के साथ आगे बढ़ता बिलकुल
पहले की तरह ।

—विलियम कार्लोस विलियम्स

अर्जेन्टाइना

६

शरद् की रात

यह शरद् की रात, चमकीली, और ख़ामोश
नदी तट पर चट्टानों की छाँह में तुम मेरे पास हो
न जाने कौन-सी अनहोनी, अनजानी बात होनी है
जिसके लिए मेरा हृदय बुरी तरह धड़क रहा है
सम्भव है इस वक़्त कोई सितारा भी टूटे
तो शायद पागलों की तरह मैं हाथ फैलाकर उसी के
पीछे दौड़ जाऊँ !

—राफ़ाएल अल्बेर्टो एर्रियेटा

नौका-विहार

उपवन सो जाता है, सपनों में खो जाता है
नदी जागती रहती है—गाती रहती है
शीतल हरी छाँह में
कल-कल करता हुआ जल बहता है
मटमैले किनारे पर सफ़ेद फेन के थक्के जम जाते हैं

मेरी आँखों में सितारे छलछला आते हैं
एक नाव में लेटा हुआ
मैं जल के संगीत पर
भावना की तरह तैरता जाता हूँ
नदी मेरी होठों में बसती जाती है
उपवन मेरी आत्मा में--

—कोरौंदो नले रोक्शलो

पूर्वजों की पीड़ा

तुमने बताया—'मेरे पिता की आँख में कभी आँसू
नहीं आता !'
तुमने बताया—'मेरे पितामह की आँखमें कभी आँसू
नहीं आया !
मेरी जाति के निर्माता—मेरे पूर्वज लोग
वे कभी रोये नहीं : वे फ़ौलाद के थे !"

इतना कहते-कहते तुम्हारी आँखों में आँसू छलक आया
और मेरे होठों पर चू पड़ा—इतना तीखा हलाहल
इतने नन्हें प्याले में मैंने कभी नहीं चखा था
मैं दुर्बल नारी, विवश नारी
जो युगों की संचित पीड़ा को
समझ गयी है उसे पीकर
मेरी आत्मा उसे बरदाश्त नहीं कर पाती
उस दर्द के बोझ से तिलमिला उठी है !

—एलफांजिना स्टॉर्नी

नीले मकान

जहाँ सेन जुआन और चाकावुकों का संगम होता है
मैंने वहाँ नीले मकान देखे हैं
मकान : जिन पर खानाबदोशी का रंग है
वे झंडों की तरह लहरा रहे हैं
पूर्व—जो अपने आधीनों को स्वतन्त्र कर देता है—
की तरह गम्भीर हैं

कुछ पर ऊषा के आकाश का रंग है
कुछ पर तड़के के आकाश का रंग,
घर के किसी भी उदास अंधेरे कोने के सामने
उनका तीव्र भावनात्मक आलोक जगमगा उठता है
मैं उन लड़कियों के बारे में सोच रहा हूँ जो
तपते हुए आँगन में से आकाश की ओर देख रही होंगी
उनकी चम्पई बाहें और
काली झालरें
शर्बत के गिलासों सी उनकी लाल आँखों में अपनी
छाया देखने का उल्लास
मकान के नीले कोने पर
एक अभिमान भरे दर्द की छाप है
मैं लोहे का दरवाज़ा खोल कर
भीतरी सहन को पार कर
घर के अन्दर पहुँचूँगा
कक्ष में एक लड़की—जिसका हृदय मेरा हृदय है—
मेरी प्रतीक्षा में होगी
और हम दोनों को एक प्रगाढ़ आलिंगन घेर लेगा
हम आग की लपटों की तरह काँप उठेंगे
और फिर उल्लास की बेताबी
धीरे-धीरे
घर की मृदुल शान्ति में खो जायेगी।

—जार्ज लुइस बोरजे

आँगन

शाम होते-होते
आँगन के आलोक रंग मुरझा जाते हैं
पूनम के चाँद की विराट स्वच्छता, थिर, परिचित
आसमानों पर जादू नहीं बिखेरती
आसमान में बादल घिर आये हैं
दुश्चिन्ताएँ कहती हैं कि किसी देवदूत का अवसान हो
गया है !

१०

आँगन आकाश का, स्वर्ग का संदेशवाही है—
आँगन एक खिड़की है, जिसमें से
ईश्वर आत्माओं की खोज-ख़बर रखता है—
आँगन एक ढालुवाँ रास्ता है
जिसमें से आकाश, घर के अन्दर ढुलक आता है
चुपचाप—
शाश्वतता सितारों के चौराहों पर इन्तज़ार करती है !
चिर परिचित दरवाज़ों, नीची गर्म छतों और
शीतल हौज़ों के बीच
एक संगिनी के प्रगाढ़ स्नेह की छाया में
ज़िन्दगी कितनी प्यारी लगती है

—जार्ज लुइस बोरजे

प्रार्थना

स्वस्थ मन से, स्नेह भरे मन से
उल्लास भरे मन से
इस दिन को मैं ऐसे देखूँ
जैसे यह मेरा छोटा भाई हो
जिसका संरक्षण निर्देशन मेरे हाथ में है ।

मेरे विचार शुद्ध रहें,
मेरी धारणाएँ उदात्त रहें,
मेरी भावनाओं में विषमता न आवे
मेरी वाणी हृदय से निकलने वाली हो
मेरी बाँहें स्वागतोत्सुक और सबल हों

जैसे हर बन्द कली में
मधुमास छिपा रहता है
वैसे ही हर मनुष्य की आत्मा में
जीवन के पूर्ण सौन्दर्य का भेद छिपा रहता है

एक घड़ी
अशुभ काम में, अशिव विचार में
बिताने के अर्थ हैं
हृदय में संग्रहीत वैभव को नष्ट करना

इस पूरे दिन मैं जागरूक रहूँ
ताकि मेरा जीवन इतना
प्राञ्जल रहे जैसे
जैसे किसी भोली-भाली लड़की का
निश्छल उल्लास !

—लुइस कने

बकरियाँ

गर्म और उदास बाड़े में
सहमी हुई बकरियाँ मिमियाँ रही हैं
अकस्मात् दो झगड़ालू बकरी के बच्चे
अपने मन का ग़ुस्सा निकालने के लिए
दो पावों पर खड़े होकर सींग लड़ाने लगते हैं;

नानी दादी के उम्र की बकरियाँ भी हैं
उनके थन ख़ूब दूध-भरे हैं
वे घुटनों पर झुकी विश्राम कर रही हैं
कभी-कभी भोली तिरछी निगाह से
दाढ़ी वाले बकरों की ओर देखती हैं—
जैसे स्नेहाकुल औरतें।

—लुइस एल० फ्रान्को

मेरे मित्र-मेरी बहनें

मेरे मित्र, मेरी बहनें इतवार को मेरे बाग़ से गुलाब
चुनने आते हैं
और फ़्रेन्च कविता की कुछ किताबें माँग ले जाते हैं
जैसे म्यूसे या सामें के पृष्ठों में से सहसा निकल कर
वे हरी दूब पर टहलने लगते हैं, फूल चुनने लगते हैं—

वे सुन्दर शब्दावलियों और स्वच्छ चमकदार सुबहों के प्रेमी हैं,
एक सुन्दर कलापूर्ण प्रतिमा उनके मन के रेशे को कँपा देती है
वे हेमन्त की संध्याओं की प्रतीक्षा में हैं
क्योंकि तब खिड़कियों के शीशे में से सभी कुछ
स्वर्णाच्छादित मालूम पड़ता है

और वे इतवार को फूल चुनने आते हैं—वे जानते हैं
कि उनकी आवाज़ों की गूँज मुझे प्यारी है
वे अनजाने ही हँसते हैं
और पाँखुरियों में अपनी हँसी छोड़ जाते हैं

मेरे मित्रो ! स्नेह भरी बहनो ! जब पानी बरसे
तो मत आना—
उन दिनों अन्धड़ में जो कलियाँ बिखर जाती हैं
उन्हें मैं बीन लाता हूँ, गुलदस्ते में लगाता हूँ
उनके पास म्यूसे या सामें की काव्य-कृतियाँ रख देता हूँ !

—फ्रांसिस्को लापेस मेरीनो

जनाज़ा

रेशमी वस्त्र और सुगन्धित अंगराग—बिलकुल नववधू की तरह
उस मृत औरत की लाश जा रही है
उसके दो बच्चे सिसकते हुए आगे बैठे हैं
यह वही गाड़ी है जो पकी फ़सल के वक़्त कटे गेहूँ के पूले
लाद कर जाड़े में चलती है !

११

चमकदार ऊनी चादर पर उसका शव पड़ा है
धुरी और पहिये चरर-मरर करते हुए
चलते जा रहे हैं
घास के मैदान की छाती में चुभे हुए सुनहरे नेज़े
की तरह धूप काँप रही है
(मेरा भाई रात की तरह काले घोड़े पर सवार है
और मैं सफ़ेद घोड़ी पर
जिसके अयाल अभी कटे नहीं)

मृत औरत पकी फसल लादने वाली गाड़ी में चल रही है
उसका चेहरा सूरज की ओर है
जिससे उसके चेहरे पर गिल्ट की-सी
चमक आ गई है
किसी बंद ख़ज़ाने की चाभी की तरह, एक ख़ामोशी की छाप
उसके होठों पर है

दिवस की नीरवता और उसके लय भरे संगीत की ओर से
उसकी आँखें बन्द हैं
और उसके हाथ क्रास को इस मुद्रा में थामे हैं
जैसे किसी अनजाने समुद्र में
कोई जहाज़ टूट गया हो

गाड़ी फूलों को कुचलती आगे बढ़ रही है
हवा सन के खेतों में
सिसक रही है
गाड़ी की चाल से शव का सिर हिल-हिल उठता है
जैसे वह सारी दुनिया के सवालों के जवाब में
सर हिला कर नहीं कर रही हो

दोनों बच्चे उसके सिरहाने, बगल में बैठे हैं
उनके धुँधले माथे पर
दो सवाल मड़रा रहे हैं
उसका वेश नववधू-सा क्यों है ? यह पकी फसलें लादने
वाली गाड़ी में क्यों चल रही है ?

(मेरा भाई रात की तरह काले घोड़े पर सवार है
और मेरे पास सफ़ेद घोड़ी है
जिसके अयाल अभी नहीं छाँटे गये—

—ल्योपोल्डो मरैशल

इक्वाडोर

ऋतुराज–स्टोर्स

बादाम के पेड़ ने कोपलों की नई पोशाक पहनी है
और दूकान की खिड़कियों पर
गौरैयाँ चहक चहक कर माल का विज्ञापन कर रही हैं।
मधुमास की दुकान से

सब सफेद कपड़े बिक गये हैं
कपड़े जो जनवरी का महीना पहनता था
और आज दूकान का मालिक हर गली कूचे में
मलय पवन से
अपनी दूक़ान की नोटिस बँटवा रहा है ।

उसके स्टोर्स में क्या नहीं है
नई कोपलों के कटोरे हैं
इत्र हैं, छोटे बच्चों के लिए फूलों के कालीन हैं
छोटी टोकरियाँ, चेरी के पेड़ के
जाला झाड़ने के बाँस
तालाबों की बतकों के पंजों के दस्ताने
उड़ते हुए सारसों के धूप के छाते
पेड़ों में हिलती पत्तियाँ बिल्कुल टाइपराइटर हैं

इधर रात का विभाग है
छोटे छोटे हीरे, जुगनू, लाल कंदील
मोती की माला

मार्च ने सूखा धान इकट्ठा कर आग सुलगाई है
और बूढ़े घर के पेड़ ने धूप का चश्मा लगा लिया है
मधुमास कुछ महीनों में सूखे हुए महुए बेचेगा
अंगूर और सूखे सुनहरे पत्ते
जिनमें लपेट कर
दर्द का पैकेट बनाया जा सकेगा ।

—जार्ज करेरा अन्द्रादे

सन्त-खरगोश

शान्त और ख़ामोश-प्यारे भाई खरगोश ! तुम मेरे गुरु हो,
दार्शनिक हो
तुम्हारी ज़िन्दगी से मैंने शान्त ज़िन्दगी बिताना सीखा है
क्योंकि तुम एकान्त समाधि में ही जीवन का तत्त्व खोजते हो
संसार की गति तुम्हें नहीं व्यापती !

तुम ज्ञान के खोजी हो
जैसे कोई पूरी किताब के पत्ते चाट जाय
उसी तरह तुम बंदगोभी के सभी पन्ने चाट जाते हो
और सन्त साइमन की तरह अपने बिल में बैठे बैठे
चिड़ियों को देखा करते हो

अपने इष्ट देवता से कहो कि
स्वर्ग में तुम्हें एक बाग़ बनवा दे
जिस बाग़ में स्वर्गीय करमकल्ले लगे हों
नाक डुबाने के लिए एक स्वच्छ पानी का सोता हो
और तुम्हारे सिर पर फ़ाख़्ते उड़ा करें

तुम्हारे चारों ओर के वातावरण में पवित्रता छाई रहती है
परम पिता सन्त फ्रांसिस का आशीर्वाद
तुम्हारी मृत्यु के दिन तुम्हारे सिरहाने रहेगा
और स्वर्ग में छोटे छोटे बच्चे
तुम्हारे लम्बे लम्बे कानों से खेलेंगे !

—जार्ज करैरा अन्द्रादे

१२

रात को एक बजे

जहाज़ के मस्तूल की तरह
लम्बे घण्टाघरसे
किसी डूबे हुए आदमी की तरह
एक बजे के घण्टे की आवाज़ गिर पड़ती है

रात के लम्बे चौड़े ब्लैक बोर्ड पर
समय खड़िये की एक लकीर खींच देता है
खिड़कियों के शीशे जैसी आँखों वाले मकान
करवट बदलने लगते हैं !

गलियों में घूमते हुए कुत्ते
दुम दबाकर
एक के घण्टे पर भूँकते हैं
जैसे किसी चलते हुए मुर्दे को देखकर भूँकें !

—जार्ज करैरा अन्द्रादे

दर्पण का धर्म

जब वस्तुएँ अपना रूप-रंग बिसार देती हैं
और रात से आक्रान्त दीवारें मुँद जाती हैं,
और चीज़ें या तो झुक जाती हैं, या पीछे हट जाती हैं
या उद्भ्रान्त हो जाती हैं,
तुम अकेले खड़े रहते हो दृढ़, एक ज्योतिर्मय उपस्थिति।

तुम्हारा स्पष्ट निश्चय छायाओं पर शासन करता है
अन्धेरे में झिलमिलाता है तुम्हारा खनिज मौन
तेज़ कबूतरों की तरह
तुम्हारे गुप्त सन्देशे जाते हैं वस्तुओं को

रात में हर कुर्सी दुगुनी लम्बी लगने लगती है और बाट जोहती है
किसी अवास्तविक अतिथि की, सामने परछाइयों की तश्तरी रखकर
और केवल तुम—एक पारदर्शी साक्षी—
उजाले का एक पाठ यन्त्रवत् दुहराते हो

—जार्ज करेरा अन्द्रादे

इंगलैंड

प्राचीन मिश्र की एक आदिम जाति का गीत

(दरियाई घोड़े के आकार की, इस्मत-इस्मत नामक देवी की मृत्यु पर)

स्थान : मन्दिर
[अन्दर : पुरोहितगण]

वह थी कुरूप, झुर्रियों भरी, भारी भरकम ? वह थी माता
वासनामयी, अतृप्त ? किन्तु थी एक मात्र आश्रयदाता !
दिन में अदृश्य, निश्शब्द, किन्तु रातों में उसकी सीत्कार
सुन पड़ती थी

हम सहमे से, तम में उसकी इच्छाएँ पूरी करते थे
हम डरते थे !

[बाहर जनता]

वह हमको दुख पहुँचाती थी
औ' हम नत थे उसके आगे
फिर हँसकर हमें बुलाती थी–
"लो भाग तुम्हारे फिर जागे !"

दुख देती थी दुख हरती थी

अब क्या होगा ? अब क्या होगा ?
अब तो वह आसन खाली है !
हम उसकी पूजा करते थे
पर वह अब मरने वाली है !!

[अन्दर : पुरोहितगण]

वह क्षुधाग्रस्त,वह शिशुभक्षिणी, पर क्या होगा उसके बग़ैर ?
वह युवक-युवतियों को ले जाती रही मृत्यु के देश। ख़ैर…
जातियाँ थूकतीं रहीं हमें—हम घृणा अंग के पात्र रहे'
यह गौरव था—
वह भोजन दे, वह आश्रय दे,वह प्यार भरे, वह हनन करे–
और वही मरे ?

[बाहर जनता]

वह शक्तिमती थी किन्तु
काल है महाबली–

१३

वह बहुत दिनों तक जियी
काल के आगे किसकी किन्तु चली

अब क्या होगा ? अब होगा क्या ?
वह आसन बिल्कुल ख़ाली है
हम अब तक पूजा करते थे
अब वह भी मरनेवाली है !!

—रूपर्ट ब्रुक

मुझे सुन पड़ता है

मुझे सुन पड़ता है—भूमि पर चढ़ाई करती हुई एक सेना,
और जल से निकलते हुए घोड़ों का मेघस्वर
घुटनों पर लगा हुआ फेन :

काले जिरहबख़्तर में, क्रोधभरे, घोड़ों के पीछे खड़े,
लगाम छोड़े हुए, कोड़े नचाते हुए
सारथी

वे रात के अन्तराल में घोषित करते हैं अपनी युद्ध-संज्ञाएँ
मैं नींद में कराह उठता हूँ, जब दूर से
उनके झंझावाती अट्टहास सुनाई पड़ते हैं

वे आते हैं विजयोन्मत्त अपने लम्बे हरे केश छिटकाये :
वे समुद्र में से निकलकर तट पर हर्षध्वनि
करते दौड़ते हैं

ओ मेरे मन, कितने नासमझ हो,इस तरह हिम्मत हार बैठे हो
मेरी प्यार ! मेरी प्यार ! मेरी प्यार ! तुम इस तरह
मुझे अकेला क्यों छोड़ गयीं

—जेम्स ज्वायस

छोटी सी नदी कलकल करती हुई

छोटी सी नदी—कलकल करती हुई—गोधूलि में
पीले आकाश की अलसायी आश्चर्य भरी चितवन—
लगभग स्वर्ग का सा सुख

और हर चीज़ मुँद आयी है और नींद में डूब गयी है
तमाम चिन्ताएँ, तक़लीफ़ें, दर्द
गोधूलि में लीन हो गये हैं
केवल गोधूलि और नदी का कोमल सीत्कार
जो लगातार रहेगा

और अन्त में मुझे अब मालूम हो गया कि यही
है तुम्हारे लिए मेरा प्यार
मैं उसे साकार देख रहा हूँ, गोधूलि सा वह सम्पूर्ण है
विराट, इतना विराट कि पहले मैं कभी उसे देख नहीं सका
छोटी मोटी टिमटिमाहटों, बाधाओं,
मुसीबतों, चिन्ताओं, पीड़ाओं के कारण

तुम एक पुकार हो, और मैं हूँ उत्तर
तुम इच्छा हो और मैं उसकी सम्पूर्त्ति
तुम रात हो और मैं हूँ दिन

शेष क्या ? यह सम्पूर्ण है—
पूर्णतया सम्पूर्ण
तुम हो मैं हूँ—
शेष क्या ?

विचित्र है कि इसके बावजूद हम पीड़ा से मुक्त नहीं।

—डी० एच० लारेन्स

नेपोलियन

‘संसार क्या है, ओ सेनाओ !
यह मैं हूँ :

मैं, यह अनवरत गिरती बर्फ,
यह उत्तरी आकाश ;
सेनाओ, यह वीरान निर्जन
जिसमें से हम जा रहे हैं
मैं हूँ ।’

—वाल्टर डि ला मेयर

मैं एक वृद्धा

मैं, एक वृद्धा, सूरज के उजाले में
बाट जोह रही हूँ अपने परदेशी की, और मेरा ऊपर उठा
हुआ चेहरा
जिस पर अंकित है यादों-डूबे दिन की जोत,
सृष्टि के आदि की मिट्टी का पवित्र वैभव
जिसने जल-प्रलय भोगी थी और सही थी वह
चिटख़ती शुष्कता
लापर्वाह आस्मान की, अपने प्रेमी सूर्य की—

क्योंकि संसार का सर्वप्रथम प्रेमी है सूर्य
हर लघुतम जीव पर आशीर्वाद बिखेरता हुआ, जीवन
देने की प्रक्रिया पर,
जीवन की समाप्ति पर, हर पूरे हुए कार्य पर,
स्वच्छ और मलिन पर, भूगर्भ के खनिज पर, और उन
वैभवों पर
जो मानव-मन में निहित हैं—मानव-मन जो दूसरा सूर्य है

क्योंकि जब सृष्टि के आदिम जल-स्रोत और गहरी धाराएँ
तरुण उजाले की झरती हैं और शान्ति की भाँति अवतरित
होती हैं
अन्धों के ऊपर उठे हुए आतुर चेहरों पर
वे आशीर्वाद देने आती हैं उस असीम को
जो ससीम जर्जर काया में आबद्ध है—
चमकती है तरुण प्रेमियों और अपने पलंग से उठते हुए
वृद्ध विलासियों पर—और बिखेरती हैं सोना समान रूप से
भिखारियों की आशाहीन पगडण्डी और कृपणों के तमाच्छादित
हृदयों पर
जो वक्र है उजाला उनकी छाया सीधी फेंकता है
जो उथली जगहें हैं उनमें शक्ति आ जाती है फिर से—
और मरु-हृदय, बंजर आकाश, ऊसर ऊँचाइयाँ
भूल जाती हैं अपनी अनुर्वर ठण्डक।
आदमी और आदमी के बीच की स्वनिर्मित दरारें
मज़हब और भाषा की पुर जाती हैं, निष्फल उजाला
दिव्यता में मनुष्यों को, सृष्टि को, रूपान्तरित कर देता है।
और वह जिसने लोमड़ी को सुनहरे बाल दिये हैं

और धरती को पके अनाज की बालियों से ढँक दिया है
जैसे नक्षत्रों को पके सोने की मोटी चादर से,
ताकि मनुष्य जाति को पवित्र रोटी मिले—मेरी काया उसी
के आशीर्वाद से अभिमंत्रित है

क्योंकि सूर्य चिन्ता नहीं करता मेरी कि मैं एक सामान्य स्त्री हूँ,
उस हासोज्ज्वल के लिए मेरे हाथों की उभरी नसें और
मेरी पालन करने वाली हथेलियों की झुर्रियाँ
फली हुई डालियों और पकी फसलों की भाँति पवित्र हैं।
उसके लिए धरती की उष्णता और
हृदय की धड़कन एक है—
संसार की शक्ति से उद्भूत, प्यार,
जो सुनहले सितारों को अपनी धुरी पर स्थिर रखता है,
और सदा चलायमान जीवों के हृदय को धड़काता
और रग को प्रवाहित करता है—
जिसके बिना धूमकेतु,सूर्य,पौदे और तमाम प्राणी,यहाँ तक कि
भूगर्भ की आग तक जम जायगी।
और सूर्य चिन्ता नहीं करता कि मैं पवित्रतापूर्वक जी रही हूँ या नहीं
उसे मेरी नश्वर काया ही पवित्र है, मिट्टी की काया,
सृष्टि का एक टुकड़ा
मेरे वैभव, मेरी अन्तर्वासी कच्ची धातुएँ, मेरी मलिनताएँ और
पकी फसलों का सौन्दर्य
इन सब पर चमकता रहता है-मेरा हृदय—मेरा पकता हुआ
सूरज !

यद्यपि तेज़ी से संसरण करते हुए पंचतत्त्व मुझे हरा रहे हैं–पर
मैं भी कभी एक स्वर्णिम नारी थी–स्वर्ग के कुंजों में
विहार करने वालियों की भाँति—पर अब

मैं वृद्धा हूँ
और अंगीठी के पास ख़ामोश बैठी बुझते कोयलों को
देख रही हूँ
---एक देहातिन सी घर-गिरस्ती का चरख़ा कातने वाली---
ताहम, मैं अब भी सूर्य की प्यारी हूँ और अंश हूँ
पृथ्वी की। शाम को श्रमिकों को घर लौटाने वाली,
खानाबदोशों को घर लौटाने वाली और मृत शिशुओं को,
अजन्मे शिशुओं को, अभी गर्भ में भी न आये हुए शिशुओं को
वापस घर अपनी माँ के वक्ष पर लाने वाली---मैं
बैठी हूँ अंगीठी के पास
जहाँ स्वर्ण-बीज मरणोन्मुख है और केतली खटक रही है लगातार
मधुमक्खियों के छत्ते के मधुर गुंजन की तरह
और मैं बाट जोहती हूँ अपने परदेशी की जो घर लौटेगा
विश्राम करने के लिए

धूल धूसरित, गोया वह
ख़ुशनुमा उद्यानों में क्यारियाँ बना रहा था, पवित्र खेतों में--
जहाँ चुपचाप मनुष्य जाति की रोटी धीरे-धीरे उगती और
पकती है
मेरे लिए मृत्यु भी जिसे बदल नहीं सकेगी, अपने वक्ष से
चिपकाये हुए
अपने नींद डूबे नन्हें शिशु को, मैं लगूँगी अभयदायिनी धरती
फसलों की माँ, घर न लौटने वालों की पालनकर्त्री

ज्ञानवती है धरती, शोक और वैभव को समान रूप से
आश्वासन देती हुई,
स्वर्णिम नायक जो उत्ताल तरंगों की भाँति अभिमानी थे--

महान् है धरती उन्हें छाती में छुपाने वाली, उनकी समाधियों
को धारण करने वाली
और महान् है धरती की गाथा।
क्योंकि यद्यपि ख़ामोश झुर्रियाँ धीरे धीरे बर्फ़ की तरह गिरती हैं
सुनहरे तरुण कपोलों पर, और धर्म के मार्ग जर्जर पड़ जाते हैं
बदल जाते हैं, पर मनुष्य का हृदय, वह सूर्य
आदिम रात को थर्राने वाले हर भय का अतिक्रमण कर
जीवित रहता है :

सृष्टि के विराट ज्वर
धधकते हैं और ठण्डे पड़ जाते हैं
फिर भी सितारे और तरुण प्रेमी प्रदीप्त रहते हैं, आलोकित
रहते हैं,
स्वर्णिम प्रेमी स्वर्ग के कुंजों में विचरते हैं
जहाँ अब्राहम सा श्मश्रुमण्डित सूर्य, समस्त सृष्टि का पिता
परिपक्वता की गुहार देता रहता है और तमाम ओसकणों और
सुन्दर वैभवों की सृष्टि लोरी गाती रहती है
धरती के, प्राणियों के, फ़सलों के पालनों के पास
जो प्रभु के हृदय की शान्ति में डोलते रहते हैं। और मैं
आदिम मिट्टी
जिसने पृथ्वी की वेदना और फ़सलों का उल्लास जाना है
यह देखकर कि यह मनुष्य का अन्धेरा बीजकाल है—आशीर्वाद
देने आयी हूँ, तमाम मनुष्यों को
क्षमा और आशीर्वाद देने—पवित्र ज्योति के रूप में

—एडिथ सिटवैल

खिड़की पर सुबह

नीचे के बावर्चीख़ाने में खड़क रही हैं नाश्ते की तश्तरियाँ
और सड़क के कुचले किनारों के बगल बगल—
मुझे जान पड़ता है—कि गृहदासियों की आर्द्र आत्माएँ
अहातों के फाटकों पर अंकुरित हो रही हैं, विषाद भरी

कोहरे की भूरी लहरें ऊपर मुझ तक उछाल रही हैं
सड़क के तल्ले से तुड़े मुड़े हुए चेहरे
और मैले कपड़ों में एक गुज़रने वाली का आँसू
और एक निरुद्देश्य मुस्कान जो हवा में चक्कर काटती है
और छतों की सतह पर फैलती फैलती विलीन हो जाती है।

—टी० एस० ईलियट

ईस्ट कोकर : तीसरा अंश

आह अन्धकार, अन्धकार, अन्धकार। वे सब अन्धकार में
लीन होते जाते हैं—
शून्य नक्षत्रों के बीच के अन्तराल,शून्य में लीन होते हुए शून्य,
साहू, सौदागर, सरदार, विद्वज्जन,
कला के उदार आश्रयदाता, राजनीतिज्ञ और शासक,

प्रख्यात अफ़सर, कमेटियों के चेयरमैन,
बड़े उद्योगपति,छोटे ठीकेदार—सब डूबते जाते हैं अन्धकार में
और सूरज और चाँद—और पंचांग जन्त्री
और स्टाक एक्सचेंज गज़ट, और डाइरेक्टरों की डाइरेक्टरी—
और संवेदनाएँ पड़ जाती हैं सर्द और कर्मों का अर्थ हो
जाता है विलुप्त ।
और हम सब उनके साथ जाते हैं, उस ख़ामोश जनाज़े में,
जनाज़ा जो किसी का नहीं है, क्योंकि दफ़नानेवाला कोई नहीं
मैंने कहा अपनी आत्मा से—शान्त रहो और अन्धेरे को
छाने दो अपने ऊपर
वह ईश्वर का अन्धियारा है, जैसे रंगमंच पर बुझा दी जाती
हैं बत्तियाँ, दृश्य बदलने के लिए
और नेपथ्य की ध्वनियों और अन्धेरे पर अन्धेरे की फ़िसलन से
हम जान जाते हैं कि पहाड़ियाँ और पेड़, सुदूर का दृश्य
और उदात्त भव्य इमारत सब समेटे जा रहे हैं—
या जैसे जब कोई नीचे सुरंग में चलने वाली ट्रेन, दो स्टेशनों के
बीच देर तक ठहर जाती है
और वार्ता-ध्वनियाँ उठती हैं और ख़ामोशी में धीरे-धीरे
विलीन हो जाती हैं
और आप देखते हैं कि हर चेहरे की मानसिक रिक्तता
गहरा आयी है
छूट गयी है केवल एक उभरती यातना कि अब सोचने को
कुछ नहीं है ;
या जब मूर्च्छाद्रव के प्रभाव में मस्तिष्क सचेत रहता है पर
सचेत रहता है मात्र इसके प्रति कि उसमें किसी की चेतना
नहीं है—

मैंने कहा अपनी आत्मा से
शान्त रहो और प्रतीक्षा करो बिना उम्मीद के
क्योंकि उम्मीद ग़लत चीज़ की उम्मीद होगी ; प्रतीक्षा करो बिना प्यार के
क्योंकि प्यार ग़लत चीज़ के प्रति प्यार होगा, अभी आस्था शेष है,
किन्तु आस्था और प्यार और उम्मीद सबको प्रतीक्षा करने दो।
बिना चिन्तन के प्रतीक्षा करो क्योंकि अभी तुम चिन्तन के लिए उपयुक्त नहीं हो।
अतः यह अन्धियारा ही ज्योति होगा और स्थिरता ही नर्तन बन जायगी।
बहते चश्मों का मन्द मर्मर और जाड़े की विद्युच्छटा।
अदृश्य सुगंधित बनघासें और जंगली बेरी,
बाग़ों में मन्द हँसी और प्रतिध्वनित उल्लास
खोया नहीं बल्कि,अपेक्षाशील,मृत्यु और जन्म की यातना की–
ओर उँगली उठाये हुए

तुम कहोगे मैं दुहरा रहा हूँ
कुछ जो मैं पहले कह आया हूँ। मैं फिर कहूँगा इसे।
क्या मैं इसे फिर बताऊँ ? ताकि तुम वहाँ पहुँचो—
वहाँ पहुँचने के लिए जहाँ तुम हो, वहाँ से आने के लिए जहाँ तुम नहीं हो
तुम्हें उस राह से आना होगा जिस पर भावावेश की गुंजायश नहीं
वहाँ पहुँचने के लिए जिससे तुम अनभिज्ञ हो
तुम्हें अज्ञान की राह से गुज़रना होगा
उसे पाने के लिए जो तुमने नहीं पाया है
तुम्हें त्याग की राह से गुज़रना होगा—
तुम नहीं हो जहाँ उस तक पहुँचने के लिए

१५

तुम्हें उस राह से गुज़रना होगा
जिसमें तुम नहीं हो
और तुम जो नहीं जानते हो
वही तुम्हारा एक मात्र ज्ञान है
और जो तुम्हारे पास नहीं है
वही तुम्हारी एक-मात्र सम्पदा है
और जहाँ तुम हो—वही वह स्थान है
जहाँ तुम नहीं हो।

—*टी० एस० ईलियट*

मारिना

कौन से समुद्र कौन से तट कौन सी भूरी चट्टानें और कौन
से द्वीप

कौन से ज्वार-जल ढलानों से टकरा कर बिखरते हुए
और चीड़ की गन्ध और वनपाखी का गीत कोहरे में से
आता हुआ

आह ! लौट आते हैं कौन से स्मृति-चिह्न
ओ मेरी आत्मजा !

वे जो पैनाते हैं कुत्तों के दाँत, यानी—
मृत्यु
वे जो झिलमिल हैं कलरव करते पक्षी के गौरव से, यानी—
मृत्यु
वे जो सन्तोष की सीढ़ी पर बैठ गये हैं जमकर—यानी
मृत्यु
वे जो पाशविक उल्लास की यातना भोगते हैं, यानी
मृत्यु

निस्सार हो गये हैं, हवा ने उन्हें अवास्तव कर दिया है
चीड़ की गन्ध और जंगली कलरव के कोहरे
और इस तमाम स्थान पर व्याप्त महिमा ने

किसका है यह चेहरा अस्पष्ट और स्पष्टतर
बाहों का स्पंदन, पहले से धीमा और पहले से तेज़
दिया हुआ या उधार? नक्षत्रों से भी दूरतर और आँख की–
पुतलियों से भी ज़्यादा पास

मन्द मर्मर और मन्द हँसी पत्तियों में और शीघ्रता करती
पगध्वनियाँ
नींद की पर्त में जहाँ तमाम ज्वारजल घुलमिल जाते हैं

जहाज़ का मुखस्तम्भ बर्फ़ से चिटखा हुआ और धूप से
पपड़ाया हुआ रंग
मैंने बनाया था उन्हें, और ख़्याल से उतर गया
और अब याद आया

रस्से जर्जर और पाल गले हुए
एक जून से दूसरे सितम्बर के बीच
इस न जानने को बना गया है अर्द्ध-चेतन, अनजान, मेरा
बिल्कुल अपना
जहाज़ के तख़्तों से पानी आता है, झिरी बन्द करने की
ज़रूरत है

यह आकार, यह चेहरा, यह ज़िन्दगी
जीवित है उस समय-प्रदेश में जीने के लिए जो मुझसे परे हैं :
मुझे विसर्जित करने दो
उस जीवन के लिए अपना यह जीवन, मेरी वाणी उस
अबोले के लिए
जागरूक, होठ खुले हुए, आशा, नये जलयान

कौन से समुद्र कौन से तट कौन से ग्रेनाइट के द्वीप
बहते आते हैं मेरे काष्ठ-यान की ओर
और कोहरे में गाता हुआ वनपाखी
मेरी आत्मजा !

—टी० एस० ईलियट

ललित कला संग्रहालय में

पीड़ा के बारे में उन्हें कोई भ्रम नहीं था
पुराने आचार्यों को : कितनी अच्छी तरह वे समझते थे
उसकी मानवीय स्थिति : कैसे वह किसी एक में केन्द्रित
घटित होती है जब कि अन्य उससे निरपेक्ष खाते हैं, पीते हैं,
खिड़की खोलते हैं या मात्र अनमने टहलते रहते हैं ;

कैसे, जब घर के बड़े बूढ़े, बहुत भावाकुल होकर
प्रतीक्षा करते हैं, शिशुप्रसव की,
बच्चे हैं जो उसके प्रति उदासीन होते हैं, चाहते ही नहीं
कि यह हो
और वनान्त पर पोखरे के किनारे बर्फ़ पर फिसलते रहते हैं :
वे (आचार्य) कभी नही भूलते थे
कि मानव के महानतम बलिदानों को भी
एक उपेक्षित अन्धेरे कोने में घटित होना पड़ता है
किसी गन्दी जगह जहाँ कुत्ते क्रीड़ा करते रहते हैं और
किसी निरंकुश अत्याचारी का घोड़ा
पेड़ के तने से अपनी पीठ खुजाता रहता है ।

ब्रूगेल के 'इकारस' में उदाहरणार्थ : कैसे बाक़ी तमाम चीज़ें
चरम संकट से मुँह मोड़ती दीखती हैं ; हल चलाने वाले ने
समुद्र में उसका छपाका सुना होगा
किन्तु उसके लिए उस अभियान की असफलता की भी
कोई ख़ास अहमियत नहीं; धूप पड़ रही है
—जैसे हर चीज़ पर—वैसे ही हरे समुद्र में अधडूबे गोरे
पावों पर
और वह मूल्यवान सुन्दर जहाज़ जिसने उस दिन वह
अद्भुत घटना देखी होगी—एक पंख-भस्म लड़के को
आस्मानों में से गिरते हुए—
उसे कहीं न कहीं जाना था—और
वह बिना विचलित हुए चुपचाप अपनी राह चला गया ।

—डब्ल्यू० एच० आडेन

क्योंकि मैं रहा हूँ आधुनिक शलभ

क्योंकि मैं रहा हूँ एक आधुनिक शलभ और मड़रा मड़रा कर
टूट गिरा हूँ कई प्रदीप्त लोकों पर
सिर्फ़ यह पाने के लिए कि उनके
चारों ओर काँच की मंजूषा है।

सिर्फ़ तुममें मुझे मिली नग्न दीपशिखा, तुम्हें ही छूकर
मैं बन गया एक प्रवीण ज्वाल-लपट,
जिसमें सब राख हो जाता है सिवा
वज्र-अस्थियों के

और देखूँगा कि
क्या समय के साथ मिथ्या पड़ जायगा
मेरा यह नक्षत्र भी, मेरी एकान्त रात्रि का सहयात्री,
मेरी उड़ान है
उस सारस की
जिसमें हर आकाश निर्जन एकान्त लगता है ।

—सेसिल डे ल्यूइस

१६

अनजनमे शिशु की प्रार्थना

अभी नहीं मैं ले पाया हूँ जन्म !
सुनो, ओ सुनो शर्तें मेरी,
जिनके बिना न मैं इस धरती पर आऊँगा

ख़ून चूसनेवाले ये चमगादड़, चूहे,
क़ब्र खोदनेवाली नरभक्षी छायाएँ
क़तई मेरे पास न आएँ !

अभी नहीं मैं ले पाया हूँ जन्म !
मुझको दो आश्वासन, दो आश्वासन मुझको,
जिसके बिना न मैं इस धरती पर आऊँगा !
मुझको भय है
तथाकथित यह मानव नामक जाति
ऊँची दीवारों के अन्दर मुझे करेगी क़ैद,
चालाकी से भरे असत्यों से
मुझको विचलित कर देगी;

सोने की मदिरा से बदहवास कर देगी,
काले कठिन शिकंजों में मुझको कस देगी,
ख़ून-सने मैदानों में
कर देगी मेरी सैनिक हत्या !

अभी नहीं मैं ले पाया हूँ जन्म,
मेरे लिए प्रबन्ध करो ताज़े पानी का,
जिसमें धुलकर मेरी आत्मा स्वच्छ बनेगी
हरी घास, जिस पर क्षण भर मैं सपने देखूँ ।

नये जवान वृक्ष जिनसे मैं बात कर सकूँ,
खुला हुआ आकाश, छाँह में जिसकी,
पंछी गीत सुनाएँ
और चमकती एक किरण
जो मुझे तमस से
सदा ज्योति की ओर ले चले !

अभी नहीं मैं ले पाया हूँ जन्म !
किन्तु अभी से मुझे क्षमा दो
उन पापों के लिए जिन्हें मेरे माध्यम से
कायर दुनिया किया करेगी !
वे विचार, वह वाणी जो मेरे माध्यम से
दुनिया सोचेगी, अथवा दुनिया बोलेगी—

मुझे क्षमा दो
उस जीवन के लिए जो कि
अपनी हत्या करने के बाद
मुझे जीना ही होगा !

अभी नहीं मैं ले पाया हूँ जन्म !
किन्तु मुझे अभ्यास करा दो
उस अभिनय का, जो मुझको करना ही होगा !
उस धीरज का, जो उस समय शक्ति दे मुझको—

जब बूढ़े मुझ पर अनुचित उपदेश उँडेलें,
जब सत्ताएँ मेरी गति में बाधा डालें,
जब ऊँचे पहाड़ मेरी क़िस्मत पर टूटें,
जब उत्ताल तरंगें मुझको आमंत्रण दें
जब मृग-तृष्णाएँ मुझको दर-दर भटकायें,
जब मेरी ही सन्तानें
चिढ़ कर मुझ पर लानत भेजें !

अभी नहीं मैं ले पाया हूँ जन्म !
सुनो पर !
जो पशु है या जो अपने को ख़ुदा समझता है,
ऐसे को मेरे पास फटकने मत दो

अभी नहीं मैं ले पाया हूँ जन्म !
लेकिन मुझमें भर दो इतनी ताक़त जिससे
मैं विद्रोह कर सकूँ उससे—

जो मेरी मानवता को काले पत्थर में बदल रहा हो,
जो मुझको मशीन का पुर्ज़ा बना रहा हो,
जो मेरा व्यक्तित्व कुचलने को आतुर हो,
जो मेरी पूर्णता धूल में मिला रहा हो,
जो मुझको मुर्दा पत्ते की तरह
वहाँ से यहाँ, यहाँ से वहाँ उड़ा ले जाना चाहे !

मुझको पूरा मौक़ा दो
अपनी सार्थकता सिद्ध कर सकूँ
मैं अपना हक़ अदा कर सकूँ
सड़ी लाश-सा भूखे गिद्धों से खाये जाने के पहले !
वरना मेरा गला दाब दो
धरती पर लाने के पहले !

—लुई मैकनीस

अगर अन्दर रक्खे दिये बल उठें

अगर अन्दर रक्खे दिये बल उठें तो हम पायेंगे ऊपर चित्रित,
अजनबी जोत के अठकोन में अंकित सन्त मुख-मण्डल
धुँधला जायगा
और झाँक उठेगा एक कामासक्त किशोर, प्रभु अञ्जलि से
निर्वासित होने के पहले दो बार असमञ्जस से इधर उधर
देखते हुए

रूप अपने अन्तरंग अन्धकार में
गठा मांसल है, पर झूठे दिन के उगते ही
दीखता है कि वही होठ हैं जिनसे राख झर रही है
और सभी वस्त्र के हटते ही हज़ारों वर्ष पुराने उरोज
अनावृत हो गये हैं।

मुझसे कहा गया कि केवल हृदय का तर्क ठीक होता है,
लेकिन हृदय, तर्क की तरह, कहीं नहीं ले जाता;
मुझसे कहा गया कि आवेशों का तर्क स्वीकारो और आवेश
ऐसे हैं कि क्रिया की गति ही बदल जाती है
पलक मारते हमवार हो जाते हैं नीचे खेत ऊँची छतें,
यकसाँ हो जाते हैं,
और इतनी तेज़ी से अतिक्रमित होता है समय कि
वही समकालीन मैं पाता हूँ अपने को
आदिम मिश्र की हवाओं में लहरा रहे हों बाल जिसके,
ऐसा आदि-पुरुष

मैंने वर्ष पर वर्ष अनुश्रुतियों के सुने हैं
और इतने वर्षों में कुछ तो परिवर्तन आये

वह गेंद जो मैंने सुदूर बचपन में पार्क में खेलते हुए फेंकी थी
अभी तक तो ज़मीन तक नहीं पहुँची है।

—*डिलन टामस*

रात में

अपनी खिड़की के बाहर रात के ढलते पहर, मैं अपलक
निहारता हूँ :
तारों पर मेरी निगाह पड़ती है, पर वस्तुतः मैं उन्हें देखता
नहीं
और कानों में आती है ट्रेन की आवाज़ पर स्पष्ट उसे सुनता
नहीं
अपने दिमाग़ में मैं करवटें बदलता हूँ, अपने को
जाग्रत रखने को, पर मैं वहाँ भी पूरी तरह मौजूद नहीं हूँ।
मेरा कुछ अंश है जो वहाँ है—बाहर अँधेरे दृश्य में।

तो आख़िर किस अंश तक मैं वह हूँ जो मैं सोचता हूँ,
और किस अंश तक वह जो महसूस करता हूँ
और कहाँ तक ये आँखें हैं जो इन सितारों को अपने बिन्दु
पर सीधा रखते हैं
जो कुछ मैं चित्त में धारण करता हूँ उसमें से
कितना मेरे हाथ में है
या वह मेरी दृष्टि ही है जो पर-नियन्त्रित है ?
मैं अपने दिमाग़ में पलटे खाता हूँ, मेरा दिमाग़ वह कमरा है
जिसकी दीवारों का ऊपरी सिरा तो मुझे दीखता है पर उसे मैं
कभी पूरी तरह लाँघ नहीं पाता

वह सब जिसे मैं प्यार करता हूँ, इसी रात की तरह, मेरे
बाहर है,
अच्छा लगता है उसे निहारना, ऐसी दृष्टि से मानो
एक सहज संकेत से हम उसे अपने दिमाग़ के अन्दर बुला लेंगे—
या हृदय के अन्दर—पर उसके बारे में विचारता हूँ और
वह विचार ही मुझे
उससे पृथक् कर देते हैं। अब अपने
बिस्तर में मैं करवट बदल लेता हूँ और बाह्य संसार
भी दूसरी ओर घूम जाता है।

—एलिज़ाबेथ जेनिंग

१७

इटली

प्रार्थना

सई साँझ
आँखें पलकों में सो जाती हैं
अबाबीलें घोसलों में

और ढलते दिन में से आती हुई
एक आवाज़ बतलाती है मुझे
अन्धेरे में भी एक संपूर्ण दृष्टि है
मैं भी थक कर पड़ रहा हूँ

जैसे उदास घास की गोद में
फूल
धूप के साथ सोने के लिए

हवा हमारी रखवाली करे—
हमें जीत ले यह आस्मान की
निचाट ज़िन्दगी जो हर दर्द को धारण करती है

—अन्तोन्यो रिनाल्दी

गीत

पलकों पर एक आँसू
जो कभी थमा, फिर बिखर गया
धीरे-धीरे फिर जन्मा और उसके साथ एक नाम भी—
नाम जिसे कभी जाना नहीं
अपरिचित, अप्रतिहत, अद्वितीय
जो मेरे कण्ठ को धधका देता है

और कौन सा शब्द
मेरे लिए कहा जाय ? शाम
मुझसे मिलती-जुलती है और रात का
चेहरा; अब मुझे भय नहीं है कि
सूरज की अन्तिम किरनों से रंगारंग
पत्तियों की भरी हुई गोद असमंजस में क्यों है—अब
जब कि आस्मानों के एक छोर ने मुझे
सहेज कर समेट लिया है !

—अन्तोन्यो रिनाल्दी

प्रतिज्ञात देश

१

छायाएँ लुप्त होती हुई
अन्तराल में विगत वर्षों के,
जब दुख घाव नहीं छोड़ जाते थे
और सुन पड़ते हैं उस वय के

किशोर प्रकाम्य उरोजों के उभार
और तुम्हारी सहमी आँखों में उद्घाटित होती है
मधुमास की लापर्वाह आग
सुरभित कपोलों से

उपेक्षा, अध्यवसायी प्रेत
जो समय-प्रवाह को अवरुद्ध कर देता है
और बहुत बाद में उसका आघात पता चलता है
—छोड़ो इस आहत मन को !

२

एक रंगी हुई अग्नि ने
शाम को बिलमा दिया है
और घास में एक थरथराहट धीरे-धीरे
अनन्त से भाग्य का पुनः गठबन्धन करा रही है

तब अनदेखी, एक चन्द्रवत् प्रतिध्वनि
जन्मी और पानी की थरथराहटों में घुल गयी ।
मैं नहीं जानता कौन ज़्यादा प्राणवान था
--मदोन्मत्त धारा से शिकवे के स्वर
या प्रतीक्षित प्रतिध्वनि जो कोमलतापूर्वक मौन थी !

३

अब रात ख़ामोश हो गई है
ख़ामोश है समुद्र भी ;
सब ख़ामोश हैं ; पर मैं कराह उठता हूँ
क्रन्दन, एकाकी मेरे हृदय का,

१८
क्रन्दन प्यार का, ग्लानि का
अपने हृदय का जो राख होता रहा
जब से मैंने तुम्हें देखा, और तुमने मुझे
और मैं कुछ नहीं रहा सिवा एक दुर्बल प्राणी के

मैं क्रन्दन करता हूँ और मेरा हृदय प्रज्वलित है, अशान्त,
जब से मैं केवल एक
परित्यक्त और खंडहर सा टूटता हुआ रह गया हूँ

४

सिर्फ़ मेरे मर्म में हैं छिपे घाव
घने उष्ण प्रदेश
दलदलों पर सर्दी के कोहरों
की गुंजलकें जिनमें आकांक्षाएँ तड़पती हैं
नींद में, कि आह हम पैदा ही क्यों हुए ।

५

दूध पीते मगर अत्यन्त उत्सुक, अधीर बच्चों की तरह
हमें चिन्ता नींद में ले गयी
किस दूजे की ओर ? कहाँ
उन पर खिल आये रंग और चढ़ गयी आब
उन प्रथम फलों पर

जो हमारी मधुर शरारतों द्वारा
ज्योति में अकस्मात अनावृत हो उठे
अपने सम्पूर्ण वैभव में
बाद में जब हम अपने रात रात के जागरणों में उद्दीप्त हो
चुकते थे

६

सारी पीड़ाएँ खो गयीं जीवन की रहस्य चेतना की,
लम्बे जीवन के अभ्यस्त छोरों पर
और अपने में रूपान्तरित होती हुई
बूँद बूँद कर पश्चात्तापकी झुँझलाहटों को जो स्वीकार करती हैं

७

अन्धेरे में ख़ामोश
तुम अन्तविहीन खेतों में भटकती हो
तुम किसी की बाट नहीं जोह रहीं, न गर्वित हो किसी को
पार्श्व में पाकर

८

तुम्हारा भेद मेरे चेहरे से तुम्हारे चेहरे में आता है
तुम्हारे प्यारे आकार मुझमें आवृत्ति पाते हैं
हमारी आँखों में और कुछ नहीं है
और निराशा में हमारा क्षणिक प्यार
विलम्ब के पालों का अनन्त कम्पन

९

अब समुद्र के चल दृश्य मुझे आकर्षित नहीं करते
और न सुबह की नम ओस इस पत्ती पर या उस फूल पर
और न अब लड़ता हूँ भारी चट्टानों से
और न वह रात जो पलकों पर मैं ढोता हूँ

स्मृति-चित्र, क्या लाभ है उनका—
मेरे लिए, जो विस्मृत किया जा चुका है ?

१०

क्या तुम्हें सुन नहीं पड़ती अनलंकृत वृक्ष की पत्ती
अकस्मात् चरमर करती हुई नदी के किनारे पत्थरों पर
मैं आज अपने पतन को अलंकृत करूँगा
दिखेगा कि पतझर में गिरी पत्तियों में
जुड़ गयी है एक गुलाबी आभा

११

और अशान्त
उनके आकाशों ने अर्पित की है
हमारी अन्तरंग ज्वालाओं को बादल की छाँह
परस्पर अनुरक्त हमारे निश्छल जुड़वाँ प्राण
जाग गये और जागते ही पलायन करने लगे

१२

अन्धड़ में खुल गया, अन्धेरे में, एक बन्दरगाह
कहा गया कि वह सुरक्षित है
वह एक तारों भरी खाड़ी थी
और उसका आकाश परिवर्तनहीन जान पड़ता था

पर अब ! आह कितना परिवर्तित हो चुका है !

—गीसेप उँगारेत्ती

क्यूबा

सिपाही की लाश

वह किस गोली से मरा ?
कौन जाने
वह कहाँ पैदा हुआ था ?
कहते हैं जोवेलानों में
यह मिला कहाँ ?
सड़क पर मरा पड़ा था
साथियों ने देखा, उठा लिया

उसकी प्रेमिका आई है, उसे चूम रही है
उसकी माँ आई है, रो रही है
अफ़सर आया है
"दफ़न करो इसे"
बस इतना कहकर चला जाता है।
र-ट-टर-रट
वह मुर्दा सिपाही जा रहा है
र-ट-टरट-टरट
सिपाही का क्या महत्त्व
र-ट-टट-टट
सिपाहियों की कोई कमी है ?

—निकोलस गील्यिन

१६

दो बच्चे हैं

एक मूल अभिशाप की दो सुकुमार शाखें : दो बच्चे
भयावनी रात के पंजे में, एक फाटक के सहन पर बैठे हुए
दो भिखमंगे बच्चे, ज़ख़्मों से भरे हुए
एक ही टीन के डब्बे से निकाल निकाल कर कुछ खाते हुए
भूखे कुत्तों की तरह
जैसे लहरें तट पर कूड़ा फेंक जाती हैं, वैसे ही मेजपोशों ने
यह जूठा खाना फेंक दिया है

दो भिखमंगे बच्चे : एक गोरा है दूसरा काला
उनके सर एक दूसरे से टिके हैं : दोनों में जूँ हैं, मैल है
उनके पाँव नंगे हैं
उनके मुँह चलते हुए अनथक जबड़ों वाले मुँह
बासी खट्टे और गन्दे खाने—फिर दो हाथ हैं
एक गोरा : एक काला

कैसी विचित्र और कितनी अटूट एकता है
डरावनी रातों और भूख ने उन्हें एक डोरे में गूँथ दिया है
और गलियों में बीतने वाली उदास शामों ने
और भूखी सुबहों ने जब दिन नशे में धुत आँखों से जागता है

दो कुत्ते के पिल्लों की तरह वे पास पास बैठे हैं
दो सीधे साधे पिल्लों की तरह
एक गोरा : दूसरा काला
क्या जब आह्वान आयेगा
तब भी वे इसी तरह साथ साथ चलेंगे
गोरे और काले

एक ही मूल अभिशाप की दो टूटी सुकुमार शाखें
दो बच्चे

—*निकोलस गील्यिन*

शराबख़ाने का गायक

न, मुझे बख़शीश न दो
मैं नहीं गाऊँगा नहीं कदापि नहीं
मैं तुम्हें वह सुनाने जा रहा हूँ
जिस पर मैं अभी तक चुप रहा

तुम्हें किसने बुलाया था
जेब में पैसे हैं
बरबाद करो चाहे लुटाओ
शराब पियो
वेश्याओं के तन ख़रीदो
पर मैं
मुझे तुम नहीं ख़रीद सकते
नहीं मुझे नहीं
मैं बिक्री के लिए नहीं हूँ

ये लाल लाल यांकी
ये सभी शराब के बच्चे हैं
बोतलों से इनका जन्म हुआ है
लाल रंग की बोतलों से
तुम्हें किसने बुलाया था
तुम चाहो जो खाओ
चाहे जो पियो
पर मुझे नहीं
नहीं मुझे नहीं
मैं खाये जाने के लिए नहीं हूँ
मैं तुम्हारे गले नहीं उतर सकूँगा

यद्यपि मैं एक ग़रीब नीग्रो हूँ
मैं जानता हूँ कि दुनिया पर बर्बादी छाई है
और मैं उसे भी जानता हूँ
जो इसकी मरम्मत कर सकता है

जब तुम वापस जाओ
न्यूयार्क को
तो वहाँ से
कुछ ग़रीब लोगों को भेजना
मेरी तरह ग़रीब
मेरी तरह भूखे
मेरी तरह नंगे
मैं उन्हें गले से लगा लूँगा
मैं उनके साथ गाऊँगा
क्योंकि उनका जो गीत है
वही मेरा गीत है
मेरा जो दर्द है
वही उनका दर्द है।

—निकोलस गील्यिन

निर्माण

जैसे निहाई पर लोहे का पत्थर ढाला जाता है
वैसे ही हम नये दिन ढालेंगे

ताक़त और पसीने से नहाये हुए
हम पाताल में उतरेंगे
और धरती के गर्भ से नया वैभव जीत लायेंगे

हम पर्वतों के उत्तुंग शिखरों पर चढ़ेंगे
और सूरज हममें ज़िन्दगी भर देगा
हम सूरज के टुकड़े बन जायेंगे

हम एक दूसरी ज़िन्दगी ढालेंगे शानदार और
मानवता से शराबोर
अपने समवेत शक्तिशाली प्रयास से मुझे शाश्वत बना देंगे
और ऊषा की क्वांरी निगाहों की छाँह में
हम मांसपेशियों की निर्माणशक्ति
और हृदयों के स्नेहमय भाईचारे के गीत गायेंगे

हम अनेक हैं
किन्तु एक में समन्वित होंगे
उस महान् गीत में हम सबों की आवाज़ एक होगी

हम लोहे के गीत गायेंगे
मशीनों के ठंडे निर्मल सौन्दर्य के गीत

निहाई ट्रैक्टर
जो धरती को उलट पलट रहे हैं
बिजली के रहँट डाइनैमो
रेलों का अनन्त जाल
फ़ौलाद की नसें जिन पर ज़िन्दगी आती जाती है
बिजली के केबिलों की भूल-भुलैया
जो सत्संग की भक्ति का ताना बाना है
जहाँ शक्ति का विराट स्पन्दन होता है

हम लोहे के गीत गायेंगे, दुनिया लोहे की है
हम लोहे की सन्तानें हैं
लेकिन मशीनों के ग़ुलाम नहीं बनेंगे
हमारे हृदय में एक नई भावना
अँगड़ाइयाँ लेंगी !

हमारे हृदय में एक नई भावना
अँगड़ाइयाँ लेंगी
इतनी विराट कि
उसे प्यार करने को
हमें सब भेद भाव भुलाकर
एक विराट समवेत हृदय का निर्माण करना पड़ेगा

तब न कटुता रहेगी
न ये अभागे बरबाद दिन
जैसे हम निहाई पर लोहे के पत्तर ढालते हैं
वैसे ही हम नये दिन ढालेंगे
उसमें उल्लास हीरों की तरह जड़ा रहेगा
नया दिन देखेगा
कि हम शक्तिशाली और सुदृढ़
ज्योति की ओर बढ़ रहे हैं

खेतों में, बखारों में, दूकानों में
हर औज़ार एक हथियार होगा
आग जम्हूरा हथौड़ा हँसिया
हम बढ़ती हुई फ़ौज़ की तरह
धरती पर छा जायेंगे
अपने गीतों से
ज़िन्दगी का अभिनन्दन करते हुए ।

—रैजिनो पेद्रोसो

कोष्टारिका

[तथा अन्य]

अकारण उदासी

पता नहीं क्यों कभी कभी
मैं उदास हो जाता हूँ

मैंने बाहर देखा
शाम हो गयी है
धीरे धीरे बारिश हो रही है
नीली पहाड़ियों के नीचे
सूरज बादलों को रंग रहा है

एक ताँगा गुज़रा
उस पर एक लड़की थी
एक बूढ़ी औरत चादर ओढ़े चली गई
दूर कहीं पर रेल कूक रही है

और मैंने तांगा देखा
लड़की देखी
बूढ़ी औरत का शाल देखा
रेल की सीटी सुनी······

और पता नहीं क्यों
मेरी आत्मा अन्दर से उदास हो गई
और लगा पसलियों में जाने क्या होने लगा
और मैं फूट फूट कर रो पड़ा

—राफ़ाएल इस्त्रादा

आम

अगर गुलाबों से ऊब गये हो तो मैं तुम्हें एक बासन्ती
उपहार दूँ !

वह उपहार एक सुन्दर तुकों वाली कविता की तरह मीठा है !
मैं तुम्हें आमों का यह ढेर भेज रहा हूँ

उनके गूदे में कामनाओं के रेशे हैं
उनमें धरती की सोंधी महक है
उनकी ख़ुशबू, मीठी खट्टी .ख़ुशबू आत्मा में उतर जाती है !

और आम्र कुंजों में लटके हुए ये आम
धूप और घनी छाया पी चुके हैं
मलय पवन में नहा चुके हैं

आम के बाग़ों में सिन्दूरी कोपलें हैं
और सुनहले पके आमों की मिठास है
यह फलों का राजा है
इसमें रस है, माधुर्य है, आलोक है !

—दुरासीने वावाल

सद्यःस्नाता

मैंने उसके हाथों को होठों से लगाया
उनमें चन्दन के साबुन की महक थी
मैंने अपना हाथ हृदय पर रख लिया
मैंने उसके नन्हें हाथों को होठों से लगाया
और महक मेरे होठों में बस गई

ओ फूल सी लड़की तुम्हारे साथी को
चाहिए कि वह महक सा सूक्ष्म बने……
और यह लो मैंने उसकी माँग चूमी
और वहाँ भी वही महक थी

तुम किस झरने में नहा कर आई हो
तुम स्वच्छ निर्मल ठंडी पानी भरी कटोरी
की तरह पवित्र हो।
ओ फूल सी लड़की !

—राफ़एल ओरेवालो मार्टिनेज़

ग्रीस

बादाम के फूल

अपने नन्हें नन्हें हाथों से उसने झकझोरा
बादाम के फूल लदे पेड़ को
पीठ पर, बाँहों पर, कन्धों पर, झबरे घुँघराले बालों पर
सफ़ेद फूलों की चादर बिछ गई

मैंने जब देखा उस नादान लड़की को, हिमधवल
मैंने धीमे से प्यार करते हुए कहा—
घुँघराले बालों से कोंपले और पाँखुरियाँ हटाते हुए,

"पगली लड़की, अभी इतनी जल्दी क्या है
बालों में सफ़ेदी लाने की—,
वह हिमऋतु तो अपने आप आ जायगी !

तब तुम अतीत को चीरकर
व्यर्थ ही इन अठखेलियों को याद करने की कोशिश करोगी-
सन से सफ़ेद बालों पर, एक चश्मा लगाये
बूढ़ी भद्र महिला के रूप में !"

—*ज्योर्ज्यिस द्रोसिनिस*

बर्बरों की प्रतीक्षा

चौराहे पर एकत्रित हम किसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं
आज बर्बर लोग नगर में प्रवेश करेंगे
सीनेट कोई निर्णय क्यों नहीं लेती
सदस्य क्यों हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं, कोई
कानून नहीं बनाते ?
आज बर्बर लोग
नगर में प्रवेश करेंगे

इतने तड़के हमारा सम्राट् क्यों जाग गया है
नगर द्वार के पास सिंहासन डलवा कर
मुकुट पहन कर
गम्भीरता पूर्वक
क्यों बैठ गया है ?

आज बर्बर हत्यारे नगर में प्रवेश करेंगे
सम्राट् उनका इस्तक़बाल करेगा
उन्हें अभिनन्दन-पत्र देगा
उन्हें शिरोपेच और खिताब देगा !

हमारे दोनों दीवान और सलाहकार
अपनी मखमली पोशाक और दरबारी कलगियों से
सजे सजाये क्यों खड़े हैं ?

वे मणिजटित बाजूबन्द और जगमगाती पन्ने की
अँगूठियाँ क्यों पहने हैं ?
सोने और चाँदी की मूँठों वाले राजदण्ड उनके हाथ में
क्यों हैं ?
बर्बर लोग नगर में प्रवेश करेंगे
ऐसी चीज़ोंसे उनकी आँखों में
चकाचौंध होने लगती है ।

हमारे प्रगल्भ वक्ता आज चुप क्यों हैं ?
भाषण क्यों नहीं देते ? अपना दृष्टिकोण क्यों नहीं
सामने रखते ?
बर्बर लोग नगर में प्रवेश करेंगे
वे कलात्मक भाषण पसन्द नहीं करते !

यह हलचल कैसी ? गड़बड़ी कैसी ?
(लोगों के मुँह कैसे लटक गये हैं, उदास खिन्न !)
सड़कें और चौराहे ख़ाली कैसे होने लगे
सब चुपचाप अपने घर क्यों लौट रहे हैं ?
क्योंकि रात आ गई और बर्बर लोग
नहीं आये ! सीमान्त में आकर
एलचियों ने कहा है कि बर्बर
लोग अब नहीं रहे

अब, हाय, अब हम क्या करेंगे बिना बर्बरों के ?
वे लोग कम-से-कम एक समाधान तो प्रस्तुत करते थे
वह चाहे किसी क़िस्म का हो !

—सी० वी० कवफ़ी

दीवालें

उन्होंने सोचा तक नहीं, उन्हें शर्म नहीं आई, रत्ती भर
पछतावा भी नहीं हुआ उन्हें
उन्होंने मेरे चारों ओर मोटी और ऊँची दीवारें बना दीं !

२२

और अब मैं हताश यहाँ बैठा हूँ
कुछ और सोच ही नहीं पाता, मेरी नियति मुझे
फाड़े खाती है :
क्योंकि बाहर मुझे कई काम करने थे।

आह ! जब वे लोग ये दीवारें उठा रहे थे तब मैंने
क्यों नहीं देखा।

पर मैंने तो कभी ईंटें चुनने, गारा लगाने, कन्नल गिराने की
आवाज़ भी नहीं सुनी;
अनजाने अनदेखे उन्होंने मुझे दुनिया से निर्वासित कर
घेरे में डाल दिया।

—सी० बी० कैवेफ़ी

मेरे तन !

मेरे तन ! याद करो
सिर्फ़ यही नहीं कि तुमको कितना प्रणय मिला था
सिर्फ़ यही नहीं कि किन शय्याओं पर तुमने अपनी उष्णता
की छाप छोड़ी थी

बल्कि वह कामोद्दीप्ति जो कटीली आँखों में
तुम्हारे लिए जाग जाग उठती थी
और सुरीली आवाज़ों में झंकार उठती थी,
कामोद्दीप्ति जो किसी दुर्भाग्यपूर्ण अवरोध के कारण
अनबुझी ही रह गयी

अब ये सब अतीत की बातें हैं
अब तो लगता है कि तुम अपने को हार चुके हो
पर याद करो यही पिपासा
कैसे तुम्हारे ही लिए
आँखों में जागती थी
वाणी में काँपती थी
तुम्हारे ही लिए
मेरे तन ! याद करो !

—सी० बी० कैवैफ़ी

विदूषक

बेचारा अभागा अकेला विदूषक, बुरी तरह कलाबाज़ियाँ
खाता हुआ
ज़िन्दगी के 'ठेठर' में, कभी यहाँ, कभी वहाँ !
सुनो भाई ! किसी सड़क पर कूड़े की तरह अपने को छूटा
हुआ पाओगे
किसी दिन, जाड़े की रात में, बर्फानी शाम को

ढलते दिन की रोशनी ने दम तोड़ दिया होगा···
तोड़ दिया होगा।
और वे तुम्हारे लिए न दिया जलायेंगे, न मशाल
सिर्फ़ तुम्हारे साथी, दूसरे विदूषक, माथे पर हाथ रक्खे
काँपती हुई आवाज़ में कहेंगे—"प्रभु की राह में
निष्कलंक······"

पर इससे क्या ? तुमने अपनी भूमिका का भलीभाँति
निर्वाह किया
और गम्भीरता से या मज़ाक में उन्होंने तालियाँ पीटीं
और अन्य कलाकारों, और नेपथ्य और पर्दों के
साथ तुमने भी नाटक किया और मंगलाचरण में
प्रभु की महिमा का बखान किया !

—तेफेरास अन्थियस

तुम्हें मेरी याद

तुम्हें मेरी याद आयेगी जब एक कोहरे से धुली किरण
अपनी टिमटिमाती रोशनीसे तुम्हारे अन्तर को उजागर
कर देगी
निष्फल आशाओं की थपकियों से जब
तुम्हारा अन्तर अधसोया होगा—

जब तुम चीख उठोगी—मेरी प्राण—
जैसे ख़ौफ़नाक सपना देखकर— "लौट आओ मेरे पास
क्योंकि क्षुब्ध ख़ूँख़ार रात
मेरी छाती को चारों ओर से कस रही है।"

और हमेशा की तरह मैं आने को तैयार होऊँगा—किन्तु
अवसर बीत चुका होगा और मैं केवल स्वप्न में आ सकूँगा
स्वप्नों के अँधियारे तुम मुझे कठिनाई से फिर पहचानोगी
और मैं धुँधली होती हुई अर्द्धचेतना में फिर पानी की छाया
की तरह काँपकर अदृश्य हो जाऊँगा !

—सोनिरिस स्किपिस

सूर्योदय का गीत

आगे बढ़ो ! ग्रीस के अन्तरिक्ष में सूरज उगाने में लग जाओ !
आगे बढ़ो ! संसार के क्षितिज पर सूरज उगाने में लग जाओ !
देखो न ! उसका पहिया दलदल में धँस गया है !
देखो न ! उसकी धुरी ख़ून की कीचड़ में धँस गयी है !

२३

आगे बढ़ो जवानो, सूरज अकेले नहीं उग सकता
घुटने टेको, सीना अड़ाओ उसे कीचड़ से उबारने के लिए
ख़ून के दलदल से उबारने के लिए
आगे बढ़ो भाइयो, उसकी अग्नि-रेखाएँ हमें घेरे हैं
आगे बढ़ो, आगे बढ़ो, उसकी लपटें हमारे चारों ओर
घेरा डाले हैं !

ओ सृजन-कर्त्ताओ बढ़ो ! ······अपनी दायित्व-वृत्तियों को
सचेत करो, माथा तानो--पाँव जमाओ—सूरज डूबने न पाये···
और मुझे सहारा दो दोस्तो······कि मैं भी उसके साथ न
डूब जाऊँ
वह मेरे ऊपर है, मेरे अन्दर, मेरे चारों ओर है
उसके साथ मैं एक पवित्र ज्योति-वितान की तरह
बुन दिया गया हूँ !

एक हज़ार वृषभों के सबल स्कन्ध आधार को ग्रहण किये हैं
एक द्विमुख गरुड़ अपने पंखों की छाँह किये है
और उसकी उड़ान और फड़फड़ाहट
मेरी आत्मा में गूँज रही है
मेरे माथे को ढँक रही है !
और 'दूर' और 'समीप' मेरे लिए अब एक हैं !
नव-श्रुत-गम्भीर संगीत मुझे घेरे हैं
बढ़कर साथियो !
उस उगने में सहारा दो ताकि सूर्य हम सबों की
आत्मा बन जाय !

एक नया शब्द अवतरित हो रहा है जो रंग देगा सबको
दिमाग़ को, शरीर को, अपनी नई लपटों में, फ़ौलाद में—
बहुत दिनों तक धरती ने नरमांस का भक्षण किया है !
पर मोटी ताज़ी उर्वरा धरती को इस रक्त स्नान से हम
इतनी कठोर नहीं होने देंगे
कि नई वर्षा भी उसे मुलायम न कर सके

कल हम सब एक दर्जन बैलों की जोड़ियाँ लेकर
इस धरती को जोतने जायेंगे, इस रक्त-स्नात धरती को
ताकि इसमें मेंहदी फूले और जीवन का वृक्ष उगे
और हमारी सोमलता धरती के
कोने-कोने में छा जाय ;

आगे बढ़ो साथियो—सूर्य अकेला कैसे उगेगा ?
घुटने टेक कर, सीना अड़ाकर ज़ोर लगाओ
कीचड़ से, ख़ून के दलदल से उबारो
माथा तानकर, बाँहें चढ़ाकर—
ताकि सूर्य आत्मा की तरह जगमगा सके ।

—एंजेलिनो सिकिलियानोस

चिली

मेरा साथ न छोड़ना

धरती तुम्हें छोड़ देगी परित्यक्त सन्तान की तरह
अगर तुम्हारी आत्मा ने कभी मेरी आत्मा को, दूसरी आत्मा
के लिए त्यागा तो।

क्रुद्ध होकर
समुद्र काँप उठेंगे, नदियों में बाढ़ आ जायगी।

जिस दिन से तुमने मेरे कन्धे पर हाथ रक्खा
दुनिया पहले से ज़्यादा सुन्दर हो गई है
जिस दिन फूलों से लदी हुई उस कँटीली झाड़ी के नीचे
हम निश्शब्द मौन खड़े थे
और प्यार, गाढ़ी नशीली ख़ुशबू की तरह
हमारी आत्माओं में बिंध गया था।

गुफ़ाएँ काले अजगर उगलेंगी
अगर तुमने कभी मेरा साथ छोड़ा तो,
तुम्हारे शिशु-से विहीन, खोखली
मेरी सूनी गोद खाली पालने की तरह टँगी रहेगी
लेकिन तुम्हारे और मेरे हृदय में छिपा मसीहा
दयावान जीसस, करुणा का देवता कुचल जायगा
और मेरे घर के करुणा भरे दरवाज़े से भिखारियों
को फटकार मिलेगी और दुखी औरतें निराश लौट
जाया करेंगी

तुम्हारे होठों ने अगर कभी दूसरे होठों पर
कोई चुम्बन अंकित किया तो वह मेरे कानों में
गूँजेगा, मेरी कनपटियों से टकरायेगा जैसे
गहरे अन्धेरे गह्वरों में से तुम्हारी आवाज़ मेरे पास लौट
आती है
इस पगडण्डी की धूल तक में तुम्हारे चरणचिह्नों की
सुगंध बसी हुई है
मैं हिरणी की तरह उस सुगन्ध से व्याकुल
बियाबान पहाड़ों में तुम्हें ढूँढ़ती फिरूँगी

उड़ते हुए बादल
तुम्हारे प्रणय की नयी प्रतिमा का चित्र मेरे आँगन के
आकाश में बना जाया करेंगे
चोरी छिपे कितनी ही गहरी खाइयों में
तुम उसे हृदय से लगाओ पर
जब तुम चिबुक छूकर उसका चेहरा उठाओगे
तो तुम देखोगे वह चेहरा मेरा है
आँसुओं से तर, दुख से कुरूप !
ईश्वर तुम्हें रोशनी नहीं देगा
अगर तुम्हारे पथ पर तुम्हारे साथ मैं नहीं रहूँगी
ईश्वर तुम्हें तृप्ति नहीं देगा
यदि उस जल में मेरी परछाई नहीं काँपती
ईश्वर तुम्हें चैन से सोने नहीं देगा
अगर तुम मेरी बिखरी अलकों पर शीश रखकर नहीं सोओगे

अगर तुम जाओगे तो मुझे कुचल कर जाओगे
जैसे कोई सड़क पर पड़ी घास को कुचल कर जाता है
पहाड़ों और मैदानों पर
भूख और प्यास तुम्हें झकझोर डालेगी
तुम जहाँ कहीं भी होगे
संध्या तुम्हें मेरे घायल व्यक्तित्व सी लगेगी
जिस पर ताज़ा ख़ून जम गया हो
अगर तुम किसी दूसरे का नाम पुकारोगे
तो तुम्हारे होठों से मेरा ही नाम निकलेगा
मैं तुम्हारे कण्ठ में शुष्कता बन कर
अवरुद्ध हो जाऊँगी
नफ़रत में, गीत में, प्यास में, प्यार में
तुम मुझे पुकारोगे—सिर्फ़ मुझे

अगर तुम चले गये, दूर कहीं तुम्हारा जीवन समाप्त भी
हो गया
तो क़ब्र के अन्दर दस साल तक
तुम्हारी हथेलियाँ फैली रहेंगी
मेरे आँसू बटोरने के लिए
और तुम अपने कलंकित तन की सिहरन अनुभव करते रहोगे
जब तक कि मेरी हड्डियाँ चूर-चूर होकर
तुम्हारे चेहरे पर बिखर कर उसे पुनः पवित्र न कर दें

—गैब्रियेला मिस्त्राल

२४

प्रभु उसे क्षमा करो

तुम जानते हो मेरे प्रभु कि अक्सर धधकते हुए साहस से,
निडरता से
मैंने अपराधियों के लिए तुम्हारी करुणा का आह्वान किया है
आज मैं उसके लिए तुम्हारे सम्मुख उपस्थित हुई हूँ जो
मेरा था
जो एक अमृत का प्याला था जिसे होंठ से लगाते ही मैं
ताज़गी में नहा उठती थी
जो मेरी ज़िन्दगी की मिठास था

जो मेरी अस्थियों की शक्ति था, जो मेरी जीवनयात्रा का
मधुर अभिप्राय था
जो मेरे कानों में पक्षियों के गीत-सा मधुर था;
जो मुझे रेशमी वस्त्रों की तरह आवेष्ठित किये रहता था
जो मेरे अपने अंश नहीं हैं उनके पीछे मैं दीवानी रहती हूँ
इसलिए अगर इस व्यक्ति के लिए तुमसे कुछ माँगूँ तो
अपनी आँख न फेरना

बात यह है मेरे प्रभु कि वह वास्तव में अच्छा आदमी था
मैं कहती हूँ कि वह ऐसा आदमी था कि जिसके मन में
कहीं कपट नहीं था
उसका स्वभाव बहुत मीठा था धूप की तरह स्वच्छ
और मधुमास की तरह उसमें अजब जादू थे ।

तुम रुखाई से कहते हो कि वह तुम्हारी करुणा के अयोग्य है
क्योंकि उसके उष्ण होंठों पर कभी प्रार्थना के शब्द नहीं आये
जो उस शाम को विना तुम्हारे संकेत की प्रतीक्षा किये ही
चला गया
उसकी धड़कती कनपटियाँ टूटे पतले प्याले की तरह !

लेकिन मैं प्रभु इसका विरोध करती हूँ—
मैंने जैसे उसकी भौंहें छुई हैं
वैसे ही मैंने उसका निश्छल और विक्षुब्ध हृदय भी छुआ था
और वह अधखिली कली की तरह रेशमी और नाजुक था

तुम कहते हो कि वह निर्मम था ? तुम क्यों भूल जाते हो
मेरे प्रभु
कि मैं उसे प्यार करती थी
और वह जानता था कि मेरा दर्द से क्षत-विक्षत हृदय केवल
उसी का है
वह मेरे उल्लास के शान्त जल में हमेशा कंकड़ियाँ फेंक
देता था
ओह, यह सब कुछ नहीं (मेरे प्रभु) तुम जानते हो मैं उसे
प्यार करती थी, तहेदिल से प्यार करती थी

और प्यार करना (तुम जानते हो) कितना कड़ुवा और
कठोर अभ्यास है
आँसू भींगी पलकों को दबाकर आँसू रोकना
धूल-भरी अलकों का चुम्बन
और तन्मय निगाहों को छिपा कर रखना ।
ज़ख़्म चीरने वाले तीर में भी एक अजब-सी स्वागत-भरी
सिहरन रहती है
जब वह प्यार करने वाले तन को पकी फसलों की तरह
चीर देता है
और सलीब भी उस समय गुलाब के गुच्छे-सा हलका
लगता है
(तुम तो जानते ही हो, तुमने क्रास वहन किया है ।)

यहाँ मैं पड़ी हूँ प्रभु, धूल में अपना चेहरा छिपाये
शाम के धुँधलेपन के माध्यम से मैं तुमसे बातें कर रही हूँ
और मेरी तमाम ज़िन्दगी यही शाम का धुँधलापन बनी रहेगी
अगर तुमने क्षमा का वह शब्द न कहा जिसके लिए मैं
आकुल हूँ

मैं प्रार्थनाओं और सिसकियों से तुम्हें मथ डालूँगी
मैं स्वामिभक्त कुत्ते की तरह तुम्हारे लबादे का छोर चाटूँगी
तुम अपनी करुणाभरी आँखों से मुझे वंचित नहीं कर सकते
तुम मेरे गर्म आँसुओं की बारिश से अपने चरण हटा
नहीं सकते

बोलो तुमने उसे क्षमा किया या नहीं ! एक क्षमा का शब्द
हवाओं में सैकड़ों चन्दन मंजूषाओं की सुगन्ध बिखेर देगा
जल-धाराएँ आलोक से नहा उठेंगी, खण्डहर फूलों से ढँक
जायेंगे
पथ के कंकड़ पत्थर हीरों की तरह चमक उठेंगे

नरभक्षी पशुओं की काली ख़ूँख़ार आँखों में दया के आँसू
आ जायेंगे
और वे चेतनामय पर्वत जो तूने पत्थरों से गढ़े हैं
झरनों की शत-शत पलकों से रो पड़ेंगे
और सारा संसार यह जान जायेगा कि तुमने उसे क्षमा
कर दिया

गैब्रियेला मिस्त्राल

औरत

वह दो क़दम आगे बढ़ी
और दो क़दम पीछे हटी
पहले क़दम के अर्थ थे—'नमस्कार हे पुरुष, हे प्रियतम'
दूसरे क़दम के अर्थ थे—'बहन जी, नमस्ते'
और बाक़ी दूसरे क़दमों के अर्थ थे—"कहो बाल-बच्चे
कैसे हैं!
आज तो धूप खिली है! आकाश स्वच्छ है!

वह लपटों का ब्लाउज़ पहने थी
उसकी आँखों में नीला समुद्र लहराता था
उसकी एक जेब में एक सपना .क़ैद था
उसके दिमाग़ के बीचोबीच एक मुर्दा आदमी टँगा हुआ था
जब वह समीप आती थी तो अपने अस्तित्व का
सबसे प्यारा अंश दूर कहीं छोड़ आती थी
जब वह बिदा होती थी तो दूर क्षितिज पर
एक छाया उसकी प्रतीक्षा में खड़ी दीख पड़ती थीं
उसकी निगाहें घायल थीं और पहाड़ियों पर
.ख़ून में लथपथ पड़ी थीं।

उसके विशाल वक्ष थे, वह अपनी उम्र की गोधूलि के गीत
गाती थी
वह एक कबूतर की छाँह में सोये हुए आसमान
की तरह सुन्दर थी !

उसका चेहरा इस्पात का था
और उसके होठों पर मौत की ध्वजाएँ अंकित थीं
वह हँसती थी तो लगता था—मानो समुद्र हँस रहा हो
समुद्र—जिसके पेट में अंगारे हैं, जिनसे वह तिलमिला उठा है
समुद्र—जिसमें चाँद अपने को डूबते देखता है
समुद्र —जो अपने किनारों को चला गया है
अनन्त काल के शून्य में डूबता हुआ समुद्र !

जब सितारे हमारे सिर पर गुनगुनाते हैं
और उत्तरी हवाएँ आँखें खोलती हैं
उसकी हड्डियों का क्षितिज उसे और सुन्दर बना देता था
उसका जलता हुआ ब्लाउज़, उसकी थके पौधे-सी आँखें
जैसे कबूतरों पर सवारी करता हुआ नीला आकाश

—*विन्सेन्त यूदोबारो*

कवि

तुम्हारे छन्द ऐसी कुंजी बनें
जिनसे एक सहस्र द्वार खुल जायँ
एक पत्ती गिरे : एक पक्षी बगल से उड़ता हुआ गुज़र जाय
जो कुछ तुम देखो उसे सृजन में बाँध लो
और ऐसा कि सुनने वाले की आत्मा काँपने लगे !

२५

नये क्षितिज खोज निकालो और अपने शब्दों पर नियन्त्रण रक्खो
अगर एक विशेषण अर्थ-गरिमा बढ़ाता नहीं तो अर्थ-गरिमा का ह्रास करता है

हम तन्तु-जाल में उलझे हैं
हमारी मांसपेशियाँ, बीती स्मृतियों की तरह
अजायब-घरों में टँगी हैं
लेकिन इससे हमारी ताक़त खोखली नहीं होती
सच्ची ताक़त
दिमाग़ में बसती है

कवियो ! तुम गुलाब पर क्यों लिखते हो
अपने गीतों में गुलाब खिलाओ।

इस सूरज की छाँह में सारी सृष्टि
सिर्फ़ तुम्हारे लिए है;

कवि विधाता का छोटा रूप है !

—विन्सेन्त यूदोबारो

नीली आग वाली लड़की

जैसे क्षीर-सागर के किनारे सैकत राशि पर
या अथाह आकाश में जड़े हुए
एक धधकते हुए नक्षत्र के बीचोबीच
मैं सो रहा था : मेरे समीप थी एक पवित्र लड़की !

उसकी निगाहों से तिरछी हरी-भरी किरणों
के निर्मल झरने झरते थे
उनमें स्वच्छ, पारदर्शी और अदम्य शक्ति की भँवरें थीं

दो जादू भरे उभारों में
दो अग्नि-शिखाएँ लहक रही थीं
और वे अग्नि-धाराएँ स्वच्छ मांसल लहरों में इठलाती हुई
कदली खम्भ जैसी जाँघों से तैरती हुई
उसके चरणों तक उतर गई थीं !

एक स्वर्ण फ़सल जो अभी पकी नहीं
उसके कंचन तन के चढ़ावों-उतारों में रहस्यमय भविष्य थे,
और जादूगरों की नीली-नीली आग सुलग-सुलग उठती थी।

—पैबलो नेरूदा

ऊब

हुआ यह है कि मैं अपने इस आदमी होने से ऊब गया हूँ
यूँ मैं दर्जियों की दूकानों में जाता हूँ फिल्मों में जाता हूँ
पर यह सब इतना नीरस, इतना छिछला मालूम पड़ता है
जैसे एक ऊनी नमदे का राजहंस आदिम चेतनाओं और
ख़ुश्क राख की ढेरी पर तैर रहा हो।

बाल काटने की दूकानों से उठती गन्ध से मेरी आँख में
आँसू छलक आते हैं
मैं पत्थरों और ऊनी कपड़ों से भी छुटकारा पाना चाहता हूँ
ये मकान, ये दूकानें, बाग़-बगीचे, एलीवेटर, ये धूप के चश्मे
चाहता हूँ यह सब मेरी निगाह से दूर हो जायँ

हुआ यह है कि मैं अपने पावों, अपने नाख़ूनों, अपने बालों
और अपनी परछाहीं तक से ऊब गया हूँ
हुआ यह है कि मैं अपने आदमी होने से ऊब गया हूँ।

फिर भी इसमें काफ़ी मज़ा आवे अगर किसी
बड़े आदमी को पटाख़ा छोड़कर डरा हूँ
या किसी भगतिन बुढ़िया को नदी में ढकेल दूँ
या एक हरा छुरा लेकर चीख़ता हुआ पागलों-सा
सड़क पर दौड़ूँ जब तक कि ठण्ड के मारे अकड़ न जाऊँ।

मुझे लगता है कि मैं अँधेरे पातालों में धसनेवाली एक जड़ हूँ
काँपती हुई, बिखरती हुई, नींद में झूमती हुई
धरती की अनजान गुफ़ाओं में भटकती हुई
उम्र का हर दिन चबाती हुई, चिन्तामग्न, चेतनाहीन!
और मैं यह नहीं चाहता

मैं अपने सर पर इतनी चिन्ताएँ नहीं चाहता
न मैं जड़ बनना चाहता हूँ न समाधि
पाताल में, मुर्दों के बीच में बिलकुल अकेले
चिन्ता से मरणशील ठण्ड से संज्ञाहीन

इसीलिए हर सोमवार मिट्टी के तेल की तरह जलने लगता है
जब वह देखता है कि मैं क़ैदियों-सा चेहरा बनाये आ रहा हूँ
पिचके पहिये की तरह वह पथ पर चलते हुए कराहता है
और अँधेरी रात में ख़ून-सने क़दम रखता चला जाता है
और मुझे खींच ले जाता है, कुछ अँधेरे कोनों, कुछ सील-
भरे मकानों में
अस्पतालों में जहाँ खिड़कियों की राह से कंकाल बाहर फेंक
दिये जाते हैं
जूते की दूकानों में जहाँ सिरका महकता है
सड़कों पर जो दरारों से ज़्यादा ख़तरनाक हैं

गन्धक के रंग की चिड़ियाँ मिलती हैं
और दरवाज़ों पर टंगी हुई गन्दी आंतें जिनको देखकर
मितली आती है
काफ़ी के प्यालों में भूल से छूटे हुए नक़ली दाँत
कद्दआदम आइने जो शर्म और डर से रोये हैं
जिनमें मोर्चा लग गया है
हर जगह छाते हैं, ज़हर है, नालियाँ हैं

मैं हर तरफ़ आता-जाता हूँ, मेरे क़दमों में स्थिरता है
मेरे चेहरे में आँखें हैं
मेरे पाँवों में जूते हैं, मेरे दिल में ग़ुस्सा है, मेरे माथे में
खोखलापन है
मैं आगे बढ़ता हूँ, दफ़्तरों में से, दूकानों में से
आँगनों में से, जहाँ तार पर कपड़े सूख रहे हैं
बनियाइनें, तौलिया, कमीज़ें
जो रोते हैं—मैल के गन्दे पिघले हुए आँसुओं में

—पैबलो नेरुदा

यातना की रूप गाथा

ज़िन्दगी और ज़िन्दगी की परछाइयों के बीच
संघर्ष करता हुआ
मेरा हृदय
लहूलुहान वनपशु की भाँति

गरजता हुआ
सभी पवित्र मान्यताओं को चीरता हुआ
दुनिया और उसकी समस्त वस्तुओं
पर गुर्राता हुआ
अपने अन्तहीन युद्ध नाट्य में व्यस्त
भय और भ्रम के बीच
उलझा हुआ
केन्द्रच्युत !

अब एक कँटीले कोड़े से
पुराण-गाथा मेरे विश्वासों की खाल उधेड़ती है
समाज मुझ पर छा जाता है
और मेरी चप्पलें महासागरों से मोर्चा लेती हैं
मेरे संकट में से उकाब उड़ानें भरते हैं
और वह सूर्य जो मैं हूँ जो मेरी सत्ता है
जिसका विस्फोट होने जा रहा है
गीली लकड़ी की तरह सिर्फ़ चिटख-चिटख कर रह जाता है
भौतिक पदार्थ मेरे वक्ष पर चिपक जाते हैं
वर्तमान उसके महावट की तरह फैलता जाता है
और यह मधुमक्खी के छत्ते जैसा महानगर
सत्ता रूपी कबूतरों को उड़ाता है ।

अपने भ्रमात्मक अयथार्थ व्यक्तित्व को
अपनी मूर्तिपूजकता को
मिटाने के लिए
एक तुमुल युद्ध
अराजकता की चिमनियों
और काले सीमंट के आकाश का
पुनर्निर्माण करने के लिए

२६

और प्रेरणा और अस्तित्व के
बीच की समस्त दीवारों को ढहा कर नरक की
खाइयों में फेंकने के लिए
एक तुमुल युद्ध::
क़ब्रों पर खड़े होकर
अराजकता के केन्द्र-नगर में
मैं अपनी राख के फूल ढूँढ़ रहा हूँ
मेरा घोड़ा टूटी तलवारों के बीच मरा पड़ा है
बिना ढाल के
बिना जिरहबख़्तर के
ढेर-की-ढेर लाल बन्दूक़ें
नींद की अन्दरूनी परतों से
उबल पड़ने वाली यह घटना
नावों की तरह पाल फुलाती हुई
यथार्थ स्थिति का यह परिणाम
स्पष्ट और भयानक
पर्वतों की तरह
हड्डियों की तरह
कबूतर की तरह
कंठ-स्वर की तरह

भँवरों के बीच में स्थित
अपने रोज़मर्रा को बिजलियों से
विस्तार देते हुए
यानी उलझनों में से
रन्ध्रों में से अस्तित्व खींचते हुए
अज्ञात में सत्य बोते हुए

और पहाड़ों के बीच में
उलझती नदियाँ अवतरित करते हुए

यह गतिशील अस्तित्व नहीं है—
भावनाओं का जीवन दर्शन;
लपटों और पत्थर के फूलों का
ओजमयी संचित चिन्ता को तीन दीवारों के अन्दर संग्रहीत करना
वह सब जो छायामय है—जर्जर है
उसे बाँध रखना
मेरी आत्मा और उसकी सामाजिक उपयोगिता
सामाजिक उपयोगिता जो उसका सत्य है
उसका शेषनाग है
उसका सिंहवाहन है
क्योंकि वह जो गहन है किन्तु निश्चित है
वह ठोस है कल्पित नहीं

जो ठोस है वही दृढ़ है
तीखा है सप्रभावशाली है
मन्दिरों का पत्थर है
आदमी की पगडण्डी है
ज़िन्दगी का व्याकरण है
जब वह लकड़ी की मेज़ों पर
पलता है
तब उसमें विस्फोट होता है
और सर्वथा नई सृष्टि का प्रारम्भ होता है

ज़ंजीरों में जकड़े हुए घोड़ों का समन्वय
फ़ौलाद का फेन आकाश में बरसता हुआ
संसार के विरुद्ध व्यक्ति के
विप्लवी ज्वार का फेन
यह मैं नहीं हूँ
यह है अहम्वादी नायक
और उसके श्रृगाल
जो बुर्जआ ज्ञान, विज्ञान दर्शन को निगल रहे हैं
तिमिर युगों का युग
व्यक्तित्व को उलझाते हुए
शब्दों के दिव्य मकड़े को प्रोत्साहन देते हुए
उलझनों को बढ़ाते हुए
ख़ून के प्रेत-दूतों को आमन्त्रण देते हुए

इसी कारण से
प्रेरणा की समस्त लाल तेज़ी
समन्वय की अदम्य प्यास
उदात्त और पवित्र अग्नि बन जाती है
हाथ
और सोने का खंजर
जो प्राणों को अवरोध में खींच लाता है
जो अवरोध में उलझी अदम्य शक्ति को
पृथक् कर देता है :

कम्यूनिस्ट वीरता
जिसका नक्षत्र है
सोवियट वीरता का महासागर
भौतिकवादी उत्साह

जिसकी परिणति
ऐतिहासिक द्वन्द्वात्मक उकाबों के पंखों में होती है
और मुट्ठियाँ तन जाती हैं
पैग़म्बरों की तरह नहीं
जिसे ईश्वरीय प्रेरणा मिली हो
जो रूपकों और पहेलियों में बोलता हो
न,—
इतिहास के अन्दर
इतिहास का निर्माण करता हुआ
जो कुछ प्रवाहित हो रहा है
उसे अपने माध्यम से अभिव्यक्त करता हुआ
मेरे प्रतीकों के विरुद्ध
लड़ता हुआ, चीख़ता हुआ,
मार्क्सवादी सत्य का सम्बल लेकर
मेरा अस्तित्व
सम्पूर्ण समाज के साथ
ज्वालामुखियों की तरह
फूटता है।

—पैब्लोद' रोक्य

जर्मनी

निजी भाषा

भाषा उग आयी है तुम्हारे अधरों पर
साथ-साथ, उग आयी है तुम्हारे हाथों में एक श्रृंखला

खींचो ! उससे तमाम जगत् को अपनी ओर खींचो
वरना तुम बेबस खींच लिये जाओगे !

—ह्यूगो वान हाफ़मान्स्थल

२७

मेरे विना तुम प्रभु ?

जब मेरा अस्तित्व न रहेगा, प्रभु, तब तुम क्या करोगे ?
जब मैं—तुम्हारा जलपात्र, टूटकर विखर जाऊँगा ?
जब मैं तुम्हारी मदिरा सूख जाऊँगा या स्वादहीन हो जाऊँगा ?

मैं तुम्हारा वेश हूँ, तुम्हारी वृत्ति हूँ
मुझे खोकर तुम अपना अर्थ खो बैठोगे ?

मेरे विना तुम गृहहीन निर्वासित होगे, स्वागत-विहीन
मैं तुम्हारी पादुका हूँ, मेरे विना तुम्हारे
चरणों में छाले पड़ जायेंगे, वे भटकेंगे लहू लुहान !

तुम्हारा शानदार लबादा गिर जायगा
तुम्हारी कृपादृष्टि जो कभी मेरे कपोलों की
नर्म शय्या पर विश्राम करती थी
निराश होकर वह सुख खोजेगी
जो मैं उसे देता था—
दूर की चट्टानों की ठंडी गोद में
सूर्यास्त के रंगों में घुलने का सुख—

प्रभु, प्रभु मुझे आशंका होती है
मेरे विना तुम क्या करोगे ?

—रैनर मरिय रिल्क

निष्ठा

मेरी आँखें निकाल दो फिर भी मैं तुम्हें देख लूँगा ;
मेरे कानों में सीसा उड़ेल दो पर तुम्हारी आवाज़ मुझ तक पहुँचेगी

•

पगहीन मैं तुम तक पहुँचकर रहूँगा
वाणीहीन, मैं तुम तक अपनी पुकार पहुँचा दूँगा
तोड़ दो मेरे हाथ, पर तुम्हें मैं फिर भी घेर लूँगा
और अपने हृदय से इस प्रकार पकड़ लूँगा जैसे उँगलियों से

हृदय की गति रोक दो और मस्तिष्क धड़कने लगेगा
और अगर मेरे मस्तिष्क को जला कर ख़ाक कर दो—

तब अपनी नसों में प्रवाहित रक्त की बूँदों पर मैं तुम्हें
वहन करूँगा।

—रैनर मरिय रिल्क

पतझर की शाम

चाँद से आयी हुई पवन झकोर
बाँध लेती है वृक्षों को

एक टटोलती पत्ती नीचे गिरती है
सड़क की टिमटिमाती रोशनियों के जाल में
दूर का तमाम गहराया अन्धेरा दृश्य
धावा बोलता है अनिश्चय ग्रस्त नगर पर

—रैनर मरिय रिल्क

तुमसे साक्षात्कार के पहले ही
[सम्भवतः बेनवेनुटा के लिए]

अनमिली अनजानी
अनुपलब्धि से शुरू होने वाली
ओ मेरी प्यार,
यह भी तो नहीं ज्ञात कि कौन से स्वर तुम्हें प्रिय लगते हैं ?

•

मात्र भविष्य की लहरों की उठान में
मैं तुम्हारा आकार पहचानने का यत्न करता रहा हूँ।
तमाम बड़े से बड़े
मुझमें बसे हुए स्मृति-बिम्ब, सुदूर महसूस किये हुए दृश्य,
मीनारें, नगर, सेतु और रास्तों के
अप्रत्याशित घुमाव और देवताओं की बस्ती
वाले रहस्यमय देशों का इन्द्रजाल :
मुझमें धीरे-धीरे सम्पुंजित होता रहा है
मात्र तुम्हें सार्थक करने के लिए—
तुम जो पकड़ाई में नहीं आतीं।

ओ तुम फूलवन हो
जिन्हें कितनी प्रदीप्त आशाओं से मैंने निहारा है ; कहीं
किसी उद्यान-गृह की
खिड़की खुली कि तुम मानो साकार
विचार-मग्न मुझसे मिलने निकल आईं।
सड़कें—मैंने पाया—
मानो तुम अभी-अभी उन पर चल कर गयी हो
और अक्सर बिसाती की दूकानों पर
दर्पण दीखे जो अब भी तुम्हारी छाया से
आच्छादित थे और मेरी छाया लौटाते हुए
मानो चौंक गये—कौन जानता है कि क्या वह
वही पक्षी तो नहीं था जिसका गीत
कल शाम अलग-अलग
हममें से गूँज गया

—रेनर मरिय रिल्क

२८

तमाम दिन आज

तमाम दिन आज तुम्हारी ख़ातिर मैं महसूस करता रहूँगा
गुलाब-गुलाब, तमाम सबको गुलाब सा महसूस करता रहूँगा
तुम्हारी ख़ातिर
तुम्हारी ख़ातिर आज फिर एक बार महसूस करूँगा
देर तक (आह कितनी देर तक !) अनमहसूस किये हुए गुलाब

हर गुलदस्ते को गुलाब से गझिन कर ; एक दूसरे पर शत-शत
पर्तों में गूँथ कर :
जैसे घाटियों में से निकलती घाटियाँ
एक दूसरे में गुथीं, एक दूसरे में समाविष्ट और
एक दूसरे पर बिछी हुई

ऐसी खामोश जैसे रात
समर्पित निगाहों पर छाई हुई,
जैसे ऊपर के फैलावों में सितारे
अपने को बुझाती हुई चमक वाले ।
रात गुलाब गुँथी, गुलाब बसी ।
गुलाबों की रात, तमाम-तमाम झिलमिलाते गुलाबों
की रात—झिलमिलाती गुलाब-रात,
हज़ार-हज़ार गुलाब-पलकों की नींद-रात,
झिलमिलाती गुलाब नींद—यह मैं हूँ जो अब तुम्हें सोता हूँ,
तुम्हारी सुगन्धों को सोता हूँ—तुम्हारी शीतल आतुरताओं
को गहराई से सोता हूँ ।
मैं तुम्हें दिया हुआ हूँ कि तुम सहेजो
कि तुम मेरे अस्तित्व की हर अतिशयता को सँवार दो
कि मेरी नियति को फैलाव दो
उस अथाह विश्रान्ति में—
अब मेरी हो वह खिलान
जिसे कोई बाधा रोक न सके
हृदय-परिधि के बराबर बड़े खुले हुए गुलाबों में से
मिला है—
गुलाबों विकसा

गुलाब-उपजा और चुपचाप गुलाबों पला—
गुलाब-बसा मन, ताकि बाहर का गुलाब-प्रसार हमारे लिए अनन्त
फैल जाय
महसूस करने के लिए—

—रैनर मरिय रिल्क

आगतों के प्रति

१

सचमुच मैं तिमिर-युग में रहता हूँ !

मिथ्याहीन शब्द जहाँ मात्र अनर्गल कल्पना है। शान्त माथा
उसी का हो सकता है
जिसका दिल पत्थर का हो। जिसके मुँह पर हँसी है
वह अभी ख़ौफ़नाक ख़बरों से वाक़िफ़ नहीं हुआ।

आह कैसा अजब युग है
जब पेड़-पौधों तक की बात करना लगभग अपराध है
क्योंकि सर्वव्यापी है अन्याय के प्रति एक चुप्पी—
ख़ुश वही है जो
अपने मुसीबतज़दा दोस्तों की पहुँच के बाहर है

यह सच है : मैं रोज़ी कमाता हूँ
पर यक़ीन करो, यह सिर्फ़ एक दैवयोग है
मैं जो कुछ करता हूँ उसमें से कुछ ऐसा नहीं
जिसके लिए मुझे भरपेट खाना दिया जाय
सिर्फ़ क़िस्मत है कि मैं बच गया हूँ (अगर क़िस्मत ज़रा
साथ छोड़े तो मैं कहीं का न रहूँ)

कहा जाता है : खाओ पियो। ख़ुश रहो बस।
पर मैं कैसे खाऊँ पिऊँ।
जब मेरा कौर भूखों के मुँह से छिन कर आया है
मेरा प्याला प्यासों के सामने से उठकर आया है
फिर भी मैं खाता हूँ। पीता हूँ।

मैं चाहता हूँ ख़ुशी से ज्ञानवान बनना।
शास्त्रों में बताया गया है ज्ञान क्या है :

सांसारिक झगड़ों से बचो,
अपना समय काटो
विना किसी से डरे
विना किसी को प्रताड़ित किये
बुराई के बदले भलाई करके—
इच्छा की तृप्ति नहीं वरन उसकी उपेक्षा
ज्ञान कहलाती है ।
मैं यह सब कुछ नहीं कर सकता
सचमुच मैं तिमिर-युग में रहता हूँ

२

मैं शहरों में आया अराजकता के दिनों में
जब भूख का साम्राज्य था
मैंने लोगों को जाना विप्लव के ज़माने में
और मैंने उनके साथ विद्रोह किया—
और इस तरह बीत गये वे दिन
जो मुझे धरती पर मिले थे

मैंने क़त्लेआम के बीच अपनी रोटियाँ तोड़ीं
हत्या की छायाएँ मेरी गोद में लेटीं
और जब मैंने प्यार किया, मैं निरपेक्ष रहा,
मैंने अपनी प्रकृति को सहा नहीं ।
और इस तरह बीत गये वे दिन
जो मुझे धरती पर मिले थे ।

मेरे ज़माने में हर सड़क रेतीले दलदल से ले जाती है।
हर शब्द वधिक के द्वार ले जाता है
अतः मैं कर क्या सकता था ? पर हाँ, शायद मेरे
विना सिंहासन कुछ और जमे हुए रहते ; यही मेरे जीने की
एकमात्र उम्मीद थी
और इस तरह गुज़रते गये दिन
जो मुझे धरती पर मिले थे

आदमी की ताक़त कम थी। लक्ष्य
दूर था। इतना ज़ाहिर था
कि मैं शायद ही पा सकूँ।
इस तरह समय बीतता गया
जो धरती पर मुझे मिला था।

३

तुम जो इस जल-प्रलय में बच रहोगे
जिसमें हम डूब रहे हैं
सोचना—
जब हमारी कमज़ोरियों पर सोचो
तो इस अन्धकार भरे युग पर भी सोचना
जो इन कमज़ोरियों को उत्पन्न करता है
क्योंकि हम जितने जूते बदलते हैं
उससे ज़्यादा देश बदलते गये
• इस वर्ग-युद्ध में
जिसमें केवल अन्याय था और कोई प्रतिरोध नहीं

क्योंकि हम अच्छी तरह जानते थे
कि कूड़े-कर्कट के प्रति घृणा भी—
भृकुटि को कठोर बना देती है
अन्याय के प्रति क्रोध भी वाणी को
कर्कश बना देता है
आह ! हम जो करुणा कोमलता की नींव रखना चाहते थे
खुद करुण, कोमल नहीं हो सके
लेकिन तुम—जब आख़िरकार कभी वह दिन आये
जब आदमी आदमी की मदद के लिए उठ खड़ा हो
तो हम पर
कठोर फैसले मत देना

—बर्तोल्त ब्रेख्त

आस्था

कूड़ा-कर्कट, अस्थियों, कंकालों, ताक़तों और नई खुदी
क़ब्रों की मिट्टी के ढेर—दूर दूर तक फैले हुए
इस तरह यह सृष्टि समाप्त हो रही
और समाप्त हो रहा है मेरा यह जीवन भी !
और मैं चाहता हूँ कि जी खोलकर रो लूँ और
तटस्थ होकर बैठ जाऊँ

किन्तु यह जो अन्दर एक अदम्य दृढ़ता है
वह बैठने नहीं देती।

तन कर खड़े हो जाने और जूझ पड़ने की दृढ़ता
हृदय की गहरी बहुत गहरी पर्तों में छिपा हुआ विद्रोह

और फिर मेरी यह आस्था ; जो मुझे
आज इस तरह बेचैन बना रही है—
वह एक दिन, एक ज्योति में रूपान्तरित
होकर रहेगी·········

—हरमान हेस्स

गीतों की राह

बच्चों के चेहरों पर
पुत गया है मल बेरी का रस
मीठे फलों के आस्वादक, चुराते हुए घूम रहे हैं वे
फलों के धब्बों वाली पोशाक में नाच रहे हैं बच्चे

नाच रही है उनके साथ पछुवा हवा
नाच रहे हैं रस्सियों पर सूखते हुए कपड़े
मानो आश्चर्यजनक जीवन की साँसें
कोई फूँक गया है मनुष्य के रीते हाड़-मांस में !

छायाएँ, स्वप्न, गुज़रे हुए लोग
धूप भरे गाँवों में बज उठा है एक ढोल
पाखी बोलते हैं
झाड़ियाँ गूँजती हैं

सरल है इनका अर्थ समझना
तुम लौट आये हो
लौट आये हो जहाँ से चले थे
अब तुम जान चुके हो कि एक लगते हैं पालना और ताबूत !
वृत्त पूरा हो गया है
क्योंकि केन्द्र मिल गया है

मेरी गुज़र है
कुओं के निगूढ़तम स्रोत तक ही,
अंगारों के सुलगने के क्षण तक ही,

गीतों की उठान हुआ करती है
जड़ों से शिखर-बिन्दु तक
और फिर स्वर उतरते हैं

जो गहरे अन्धेरे में है
और ऊपर प्रकाश में—
दोनों को छूकर गुज़रती है
गीतों की राह

—फ्रेडरिक ज्यार्ज युंगर

तुर्की

ज्ञान का उल्लास

पालनों के सिरहाने
गाई जाने वाली लोरियों से लेकर
रेडियो से आने वाले समाचारों तक—
हर जगह छिपे हुए असत्य पर विजय प्राप्त करना

चाहे वह असत्य हृदय में हो
या किताबों में
या शोर-गुल भरी सड़कों पर
कितना कल्पनातीत आनन्द है ज्ञान में
यह जान लेने में
कि समय के क़दम
अनिवार्य रूप से किधर बढ़ते रहेंगे
और अब भविष्य में क्या आनेवाला है।

—नाज़िम हिकमत

३०

यह दुनिया—हमारे दोस्त और दुश्मन

मुझे इस बात की कितनी ख़ुशी है
कि मैं दुनिया में पैदा हुआ हूँ।
कि मैं इसकी मिट्टी को
इस अन्न को

•

इसके संघर्षों को
इसकी धूप को
प्यार करता हूँ ।
हालाँ कि नक़्शानवीसों ने
इसकी चौहद्दी दो इंच के वृत्त में बाँध दी है
और सूरज के मुक़ाबले में
यह सिर्फ़ खिलौना ही है,
पर मेरे लिए तो इसके विस्तार का
ओर छोर नहीं है
कितना अनिर्वचनीय उल्लास है
धरती की परिक्रमा लगाने में
उसकी मछलियों
उसके सितारों
और उसके अगणित फल फूलों को देखने में
जिनका मैंने नाम भी नहीं सुना ।
हाँ, किताबों के नक़्शों के माध्यम से
मैंने यूरोप ज़रूर घूमा है
मगर सिर्फ़ नक़्शों में ।
तमाम उम्र मुझे कोई ऐसा पत्र नहीं मिला
जिस पर एशिया के किसी डाकख़ाने की मोहर हो
अमेरिका के लोग
मुझसे उतने ही अपरिचित हैं
जितना मेरी गली के बनिये से

लेकिन फिर भी हर जगह,
स्पेन से चीन तक
और उत्तमाशा अन्तरीप से अलास्का तक
ज़मीन के चप्पे-चप्पे

और समुद्र की लहर लहर में,
हमारे दोस्त हैं
हमारे दुश्मन हैं।
दोस्त.........
मैंने उन्हें कभी देखा भी नहीं
फिर भी सम्भव है
उन्हें और मुझे
साथ साथ
अपनी जान देनी पड़े
उसी आज़ादी के लिए
उसी रोटी के लिए
उसी आशा में—
और इसी तरह दुश्मन भी.........
लेकिन मेरी ताक़त इस बात में है
कि मैं अकेला नहीं हूँ
मेरे विज्ञान ने
इस दुनिया और उसके बाशिन्दों को
अच्छी तरह समझ लिया है
इसीलिए
तमाम शंकाओं, प्रश्नचिह्नों और असमंजसों
से मुक्त होकर
मैंने इस महान् संघर्ष में
निश्चिन्त होकर अपना दायित्व सँभाल लिया है!
तुम और दुनिया
मेरी पंक्ति में नहीं हो
इससे मुझे सन्तोष नहीं

लेकिन इसके बावजूद तुम्हारे लिए
मेरे मन में असीम स्नेह है ।
और, सारी दुनिया मुझे इतनी
ममतामयी और सुन्दर लगती है

—नाज़िम हिकमत

तुम्हारे हाथ और असत्य

तुम्हारे हाथ—
चट्टानों की तरह संजीदा
जेल में गाये जाने वाले गीतों की तरह उदास
जुते हुए बैलों की चाल की तरह भारी
भूखे मरते हुए बच्चों के चेहरे की तरह भयानक

•

तुम्हारे हाथ—
श्रम में मधु-मक्खियों की तरह चुस्त और सक्रिय
माँ के पयोधरों की तरह भरे पुरे,
प्रकृति की भाँति निर्भय और निर्बाध
खुरदुरी खाल के नीचे
मैत्री का स्नेह भरा स्पर्श छिपाये हुए

यह ग़लत है कि धरती को
शेषनाग को अपने माथे पर धारण कर रखा है
धरती यह समूची धरती
तुम्हारे इन्हीं हाथों पर टिकी हुई है।
ओ तमाम दुनिया के लोग !
जब तुम भूख से व्याकुल रहते हो
और तुम्हें रोटी की ज़रूरत होती है
तब वे तुम्हें खिलाने के लिए
अगणित असत्यों की फ़सल तैयार करते हैं
और तुम तमाम ज़िन्दग़ी
एक बार साफ़ थाली में भरपेट खाने के लिए
तरसते-तरसते दम तोड़ देते हो
जब कि दुनिया भर में शाखें पके हुए फलों के बोझ से
झुकी पड़ती हैं।
ओ तमाम दुनिया के लोगो !
सबसे बढ़कर
एशिया
अफ्रीका
मध्य पूर्व
सुदूर पूर्व
प्रशान्त द्वीप समूह

और मेरे देश के लोगो
यानी तुम जो तमाम इन्सानी आबादी के
सत्तर प्रतिशत से अधिक हो
तुम अब भी सोये हुए हो
तुम अपने हाथों की तरह पुराने हो
तुम बच्चों की तरह
खुश हो सन्तुष्ट हो
तुम अपने जवान हाथों की तरह अनुभव शून्य हो !
और ओ योरोप और अमेरिका के लोगो
तुम सचेत हो, तुममें साहस है
पर तुम इन्हीं हाथों की तरह चिन्तनशून्य हो
असत्य तुम्हारे हृदयों पर विजय पा लेता है
और तुम उसके जाल में उलझ जाते हो ।

ओ साथियो !
अगर यह असत्य रेडियो से बोला जाता है
अगर यह असत्य रोटरी मशीनों पर छापा जाता है
अगर यह असत्य किताबों में लिखा जाता है
दीवारों और खम्भों पर चिपके नोटिसों और इश्तहारों पर
अंकित किया जाता है
अगर यह असत्य चित्रपट पर नंगी टाँगों के
रूप में दिखाया जाता है
अगर रूमानी गीतों में यह असत्य गूँथा जाता है
अगर सपने भी इसी असत्य में रँगे होते हैं
बाँसुरियों में भी यही असत्य सिसकता है
निराशा भरी विरह की चाँदनी रातों में यह
असत्य झिलमिलाता है ।
अगर शब्द, रंग, ध्वनि

सभी इसी असत्य के वाहन हैं
तुम्हारे हाथों को ख़रीदने वाला भी
इसी असत्य का ठेकेदार है
अगर तुम्हारे हाथ के अलावा
दुनिया की हर छोटी बड़ी चीज़
इसी असत्य के स्वर में बोलती है
तो इसका एकमात्र कारण यह है
कि वे चाहते हैं
कि ये तुम्हारे अपराजेय हाथ
कठपुतलियों की तरह
उनके संकेतों पर नाचें
उन्हें कोई भी दृष्टि न मिले
उन्हें कोई ज्ञान न मिले
ताकि तुम्हारे हाथ कभी भी उनके ख़िलाफ़ न उठें
ताकि अन्याय का कभी अन्त न हो
ताकि ग़ुलामफ़रोशों का शासन
इस धरती पर सदैव बना रहे—
यह धरती
जो हम सबों की माता है ।

—*नाज़िम हिकमत*

३१

हाफ़िज़ का मक़बरा

एक सुर्ख़ गुलाब रोज़ खिलता है
जहाँ हाफ़िज़ दफ़्न है
आकाशगंगा की छाँहों में
हर मधुमास में गाती हैं बुलबुलें

शीराज़ की भूली यादों को ताज़ा
कर जाते हैं इन बुलबुलों के गीत ;
जिसमें दिल होता है
ज़िन्दगी की आग होती है
उसकी मौत भी सदाबहार बन जाती है

हाफ़िज़ का दिल
सोंधी मिट्टी का धूपदान है
जिसमें आज तक धूप सुलग रही है !
उसका दिल युगों को पार कर
आज भी हमें पैग़ाम देता है
भविष्य की अन्धेरी रातों में भी पैग़ाम देता रहेगा

उसकी क़ब्र के इर्द-गिर्द
लम्बे उदास सरो की छाँह में
सुबह के धुँधलके में
सुर्ख़ गुलाब रोज़ खिलता है
उदास धुँधली शामों में
उसकी याद में दीवानी बुलबुलें
गीतों में सिसकने लगती हैं !

—*यहिया कमाल*

चन्द्रमा के प्रति

यह माना कि तुम तमाम शहज़ादों से ज़्यादा सुन्दर हो !
लेकिन हमें क्या करना ?

•

तुम तमाम उम्र धरती और आकाश का चक्कर लगाते हो।
लेकिन हमें क्या करना ?

तुम हमारे सर्द बिस्तरों को गर्म नहीं कर सकते
तुम हमारी केतलियों को गर्म नहीं कर सकते
मेरे प्यारे गोरे मुखड़े वाले चाँद
हमें तुमसे क्या फ़ायदा है ?

—ज़फर यतर्की

इक्कीसवीं शताब्दी के लोगों का गीत

मैं तुम्हारा गीत गाता हूँ
ओ इक्कीसवीं शताब्दी के लोगो !
तुम धरती पर इस तरह चलोगे
जैसे कोई शाहज़ादा अपने बाग़ में टहले !

•

और तुम्हारे व्यक्तित्व पर आनन्द
इस तरह छाया रहेगा, जैसे
इत्र में बसे हुए स्वच्छ कपड़े।

तब युद्ध न होंगे
संघर्षों का नाम-निशान न होगा,

इन्सान की पलकों में आँसू आयेंगे
मगर सिर्फ़ प्यार के बाद, या किसी की मौत के
बाद।

ओ इक्कीसवीं शताब्दी के लोगो
तुम (यानी भविष्य) मुझमें से प्रवाहित हो रहे हो

मेरी नसों में तुम्हारी पगध्वनियाँ अनोखी लगती हैं!

इन सुनसान सड़कों पर
रोटी तोड़ते हुए
और सितारों की ओर देखते हुए
तुम आँसू नहीं बहाओगे
तुम्हारी रेशमी पोशाक सूरज की रोशनी की तरह
सुलभ होगी
ओ शान्तिमयी धरती के बच्चो,
तुम्हारी ज़िन्दगी में न बन्दूकें होंगी
न राइफिलें
न घृणा
न ग़रीबी!

क्या मैं उन दिनों को देखने के लिए
ज़िन्दा रहूँगा ?
क्या मैं तुम्हारे कन्धे से कन्धा लगाकर
भविष्य के उन शानदार राजमार्गों पर
चल सकूँगा ?

क्या चाँद, सितारे और बादल
मुझे भी उतने ही नये लगेंगे, जितने कि तुम्हें ?
मेरे अपरिचित उत्तराधिकारियो
क्या मैं अपने हाथों में तुम्हारा हाथ ले सकूँगा ?
कितनी गर्म ज़िन्दगी होगी उन हाथों में
जिनको दुख और अभावों ने कभी नहीं छुआ है

ओ आने वाले युग !
तुम्हारा ख़्याल आते ही मैं
पंछी की तरह पांखें खोलकर आस्मानों को नापने
उड़ चलता हूँ !

मैं जानता हूँ कि इस दुनिया में
महान् गीत गाये जायेंगे
जब तुम्हारे गीत की पहली कड़ी
गाई जायेगी
तब शायद मेरी हड्डियाँ भी धरती में
गल चुकीं होंगी
मेरे समकालीनों की तरह
शायद तुम भी मेरे गीतों को नापसन्द करोगे
लेकिन इससे क्या होता है ?

तुम्हारे जीवन में तो सौन्दर्य जगमगायेगा
तुम पर तो असीम शान्ति की छाया होगी
तुम तो सुखी रहोगे
बस !

—हसन दिनाम

३२

सम्बोधित

मैं हलीम तृतीय हूँ, महान् और पवित्र,
सुल्तानों का सुल्तान ;
मेरे गौर हाथों से शुरू होते हैं दिन
मेरी रियाया के

मेरा उठना मात्र ही
अज्ञात कुमारियों तक मेरी उद्दीप्ति पहुँचा देता है
मैं समय का बोध करता हूँ
अपने ही नैरन्तर्य से

अखिल ब्रह्माण्ड की समस्त दिशाएँ प्रसारित हैं
मेरे ही तन की परिधि तक
और मेरे तमाम स्थल सुखद हैं
मेरे ही तन से

मैंने ही उक़ाबों के साथ
आज़ाद कर दिया है विज्ञान, कविता और विजय अभियानों को
ताकि आनेवाली पीढ़ियाँ सुखी हों
समुद्रों पर ज़मीन पर

आसमान बाअदब हैं मेरे ऊपर छाये हुए
गहरे और नीले
मेरा प्यार और रक्त दो अनन्तताओं की भाँति
परस्पर समान हैं

जहाँ तक गुंजायश है अक़्ल की
भद्र, सुन्दर, स्वस्थ और परम हूँ मैं
हलीम तृतीय--
और तुम कौन हो, ओ पर्वत ओ चट्टानों ?

—*फ़ाज़िल हुस्नू दागलार्का*

नीग्रो

[अमेरिकी]

थकान

मैं काम करते-करते थक गया हूँ : मैं दूसरे की
सभ्यता का निर्माण करते-करते थक गया हूँ ।

अब मैं आराम करूँगा, मेरी प्यारी जेन !
मैं अब सेलून में जाऊँगा, एक आध बोतल पीयूँगा,
दो चार बाज़ियाँ खेलूँगा, और किसी शराब के
पीपे पर सो जाऊँगा।

और तुम मेरी रानी ! कोई परवाह नहीं, अपने बूढ़े मालिक
को सड़ने दो, अपने गोरे मालिक के कपड़ों
को चिथड़ा हो जाने दो, और गोरे लोगों
के पुराने गिर्जाघरों को जहन्नुम की अथाह खाइयों
में डूब जाने दो।

और तुम ठाठ से अपने दिन बिताओ। भूल जाओ कि तुम्हारा
विवाह मुझसे हुआ है। ठाठ से अपनी रातें बिताओ,
शराब से चूर होकर।

अपने बच्चों को नदी में फेंक दो : इस सभ्यता ने हमें
ज़रूरत से ज़्यादा बच्चे दे डाले हैं। आख़िर
बड़े होकर अपने को घिनौने काले हब्शी देखने से तो
बचपन में ही मर जाना बेहतर है।

सितारों को आसमान से नोचकर फेंक दो। इन्हीं कम्बख़्तों ने
हमारी क़िस्मत बनायी है।

इस गोरी सभ्यता को देखकर मुझे उबकाई आती है।

—फेंटन जानसन

सूर्य-पुत्र

हम सूरज की सन्तानें हैं
उगते हुए लाल सूरज की सन्तानें !
हम दक्षिण के देशों का भाग्य बुन रहे हैं,
उस रहस्य क्षण की प्रतीक्षा में हैं,

जब हमारा मसीहा प्रकट होगा
उसके हाथ में सचाई की धधकती हुई
तलवार होगी
जिसके फ़ौलाद में भ्रातृत्व का स्नेह और
दृढ़ता होगी।
और वह आकाश में लाल अक्षरों से
लिखेगा—"आज़ादी ! भ्रातृत्व !"

हम सितारों की जाति के लोग हैं
संघर्ष करने वाले लोग !
हम लोगों ने दुख-भरे गीतों को
थपकी देकर सुला दिया है
हमारे ग़लत तूफ़ानी आवेश
हमें वहाँ ले गये,
जहाँ मुरझाई हुई चाँद की किरणें
निराश भरी रात में खो जाती हैं।
लेकिन फिर हम सितारों की छाँह में
वहाँ पहुँचे
जहाँ किन्हीं प्राचीन, जादू-अंकनों से
दो शब्द चमक रहे थे—
"आज़ादी ! भ्रातृत्व !"

हम बादलों और कोहरों को चीरकर आये हैं
हम ताक़तवर लोग हैं !
गोधूलि ने हमारी उनींदी आँखें चूमी हैं
और वैभवशाली आकाश में

२३

एक रहस्यमय सिंहासन स्थापित किया है
जो हमेशा हमारा होगा
हम मसीहा की सन्तानें हैं
वे जो सदा गायेंगे
आज़ादी ! भ्रातृत्व !

—फेंटन जानसन

अज्ञात हत्यारे

तो उन्होंने चुपचाप उस पर हमला किया
और उसे खींच ले गये;
उनका षडयन्त्र इतना पूर्ण था कि
सरकार ने दिन दहाड़े जिन नियम और व्यवस्था के प्रहरियों

के हाथ में उसे सौंपा था,
उनको पता तक नहीं चला।
और उन लोगों ने भय से काँपते हुए
उस चिथड़े-चिथड़े हुई लाश को देखा
तो सिर्फ़ यही कह सके—"हत्यारे पता नहीं कौन थे ?"

तो इसी तरह, मेरा यह देश
चुपचाप खींचा जा रहा है,
नैतिक मौत की तरफ़
हत्या की तरफ़ ;
नक्क़ारे बजाकर और तुरही बजाकर
यह हत्या नहीं की जा रही है,
बल्कि
कुछ अन्धेरे और कुछ उजाले में—
लुके छिपे।
लेकिन जब लाश सामने नज़र आयेगी
तब इतिहास यह नहीं कह सकेगा कि
"हत्यारे पता नहीं कौन थे ?"

—*लेस्ली पिकने हिल*

हत्या के बाद : रात भर

उसकी आत्मा धुएँ में लिपटी हुई स्वर्ग पहुँची :
उसके पूर्वजों ने, हृदयहीन क्रूरता से क्षत-विक्षत,
उसकी आत्मा को हृदय से लगा लिया।
वह भयानक हत्या रात भर झूलती रही !

एक अकेला चमकता हुआ सितारा (शायद वह सितारा
जो उसका संरक्षक सितारा था, और जिसने अन्त में हार
कर उसे हत्यारों के हाथ में सौंप दिया था)
उसकी झूलती हुई लाश को सूनी निगाहों
से देखता रहा !

सुबह हुई तमाशबीन तमाशा देखने आये
भयानक लाश, धूप में खड़खड़ा रही थी :
औरतें इकट्ठा थीं, किसी की आँख में
सहानुभूति नहीं थी पश्चात्ताप नहीं था।

सड़ती हुई लाश के चारों ओर गोरे बच्चे ख़ुशी से
नाच रहे थे !
बच्चे जो बड़े होकर हत्यारे बनेंगे !

—क्लाड मैक्के

पिशाच और प्रकाश

तुम सोचते हो कि तुम्हारी तरह मैं भी पिशाच नहीं हो सकता ?
तुम सोचते हो कि हाथ में बन्दूक़ लेकर
एक नीग्रो की हत्या का बदला; दस गोरों की हत्या से नहीं ले सकता ?
भ्रम में मत रहो । तुम्हारे हर पैशाचिक कृत्य के एवज़ में

मैं दस पैशाचिक कृत्य कर सकता हूँ ।
मेरी मातृ-भूमि अफ्रीका है : काले पिशाचों, प्रेतात्माओं,
अजगरों और ख़ूँखार नर-भक्षकों का देश !
लेकिन उस महान् ईश्वर ने मेरी आत्मा का पाप
और अन्धेरा खींच लिया और कहा—
"जाओ ! तुम धरती के प्रकाश हो
श्वेत पिशाचों के बीच में जाकर रहो !
तुम्हारा चेहरा रंग कर मैं तुम्हारी परीक्षा लूँगा
दुनिया पूरी तरह पैशाचिक अन्धेरे में डूब जाय,
इसके पहले तुम अपनी आत्मा को दीपक की तरह
प्रकाशित रखना ! जाओ निडर होकर जाओ !"

—क्लाड मैक्के

बन्धु मेरे, क्या कहोगे तुम ?

बन्धु आओ ।
और हम तुम चलें उसके सामने
जिसने बनाया है हमें ।
जब फरिश्ते करें हमको पेश उनके सामने

३४

तब मैं कहूँगा—
"प्रभु, नहीं मैंने किसी से की घृणा—
घृणा मुझसे की गयी है—
किसी को कुचला नहीं मैंने—
मैं स्वयं कुचला गया हूँ,
किसी के भी मुल्क पर मैंने नहीं डाली निगाह,
किन्तु मेरा मुल्क मुझसे छिन गया है।
किसी की भी क़ौम से मुझको नहीं कुछ द्वेष
किन्तु मेरी क़ौम को क्या क्या नहीं सहना पड़ा है।
सिर्फ़ इतना कहूँगा मैं,

और प्यारे बन्धु मेरे, क्या कहोगे तुम ?

—जोसेफ सीमन कार्टर

नीग्रो और नदियाँ

मैंने नदियों को जाना है,
सृष्टि से भी ज़्यादा और मानव की नसों में बहने वाले
रक्त से भी ज़्यादा प्राचीन नदियाँ
मेरी आत्मा नदियों की तरह गहरी हो गयी है।

जब सभ्यता की सुबहें तुतला कर बोलती थीं
तब मैंने फरात नदी में स्नान किया था।
मैंने कांगो के किनारे झोपड़ी बनायी और
कांगो ने मुझे लोरियाँ सुनायीं।
मैंने नील नदी पर निगाह डाली और अपने कन्धों पर
चट्टानें लादकर पिरामिड बनाये
जब लिंकन न्यू-आर्लियन्स गये तब मैंने मिसीसिपी के
गीत सुने और गोधूलि बेला में उसके
मटमैले धरातल को सुनहला
और नारंगी होते हुए
देखा।

मैं नदियों की अच्छी तरह थाह ले चुका हूँ।
ये इतिहासों की तरह प्राचीन
और कोहरों से ढकी हुई
नदियाँ!

मेरी आत्मा नदियों की तरह गहरी हो गयी है।

—लैंग्स्टन ह्यूज़

मृत्यु-गीत

मातम के नक्क़ारे बजाओ मेरे लिए,
मातम और मौत के नक्क़ारे बजाओ मेरे लिए
और भीड़ से कह दो कि मिल कर के मरसिया गाये
ताकि उसकी आवाज़ में मेरी हिचकियाँ डूब जायें।

मौत के नक्क़ारों के साथ
सिसकते हुए बेले की महीन और दुखी आवाज़—
लेकिन सूरज के संगीत से परिपूर्ण
शंख की एक हुँकार भरी आवाज़ भी हो,
जो मेरे साथ जाये,
उस अँधियारे मृत्युलोक में
जहाँ मैं जा रहा हूँ।

—लैंग्स्टन ह्यूज़

सपना और दीवाल

बहुत दिन हो गये !
मैं अपने सपने को लगभग भूल चुका था ।
लेकिन सपना अनश्वर था
मेरे सामने,

झिलमिलाते हुए सूरज की तरह
मेरा सपना !

और फिर दीवाल उठी,
धीरे-धीरे,
मेरे और मेरे सपने के बीच ।
उठती गयी धीरे-धीरे
मेरे सपने की रोशनी को
धुँधला करते हुए,
रोशनी का गला घोंटते हुए !
यहाँ तक कि
आकाश चूमने लगी
वह दीवाल !

दीवाल की छाया······
······मैं काला हूँ······

मैं काली छाया में कुलबुला रहा हूँ ।
मेरे सपनों की रोशनी
न मेरे चारों ओर है,
न मुझ पर आशीर्वाद सी छायी है ।
सिर्फ़ काली पुख़्ता दीवार
और उसकी कड़वी छाया !

ओ मेरे हाथो !
मेरी काली मज़बूत भुजाओ !
तोड़ दो इस दीवार को,
ढूँढ़ लाओ मेरे सपने
इस अन्धेरे को चूर-चूर कर दो
इस छाँह को चीर कर फेंक दो,
सूरज की सहस्रों किरणें धधक उठें !
लाल भट्ठी की तरह सुलगते हुए
लाखों सपने
पवित्र सूरज के !

—लौंग्स्टन ह्यूज़

प्यूर्टोरिको

उदास हवा

कभी कभी हवा उदास हो जाती है
इतनी उदास

•

कि लगता है
ईश्वर सो गया है
चेतना हीन,
संज्ञाहीन।

—अलीसिया कार्मेन कदील्या

प्रोलेटेरियट

खच्चर
अपने बोझ से काँपता हुआ
पहाड़ पर चढ़ रहा है
धीरे-धीरे
(उसके आशा भरे कान शिखर की ओर उठे हैं)

राजगीर
ईंट पर ईंट चुन रहा है
(वह धीरे-धीरे गुनगुना रहा है)

ईश्वर
मेहनत से नक्षत्रों का निर्माण कर रहा है, एक के बाद एक
(उसका मौन अथाह है)

—लुइस मुनोज़ मारिन

ईश्वर का मुखपत्र

जैसे कोई सिपाही जंग लगी हुई तलवार
घुटनों पर रख कर दो टूक कर दे
वैसे ही मैंने अपने हृदय पर रखकर
इंद्रधनुषों को तोड़ डाला है

मैंने गुलाबी और सुर्ख़ बादलों को
क्षितिज के पार उड़ा दिया है
मैं अपने सपनों को भूल गया हूँ
ताकि उन सपनों को समझ सकूँ
जो उन लोगों की नसों में सोये हुए हैं
जो मेरी चाय जुटाने के लिए
पसीना बहाते हैं, आँसू बहाते हैं।
वे सपने जो तपेदिक़ से चलनी हुई पसलियों में हैं
(ज़रा सी हवा—ज़रा सी धूप का सपना)

वे सपने जो भूख से जलती आँतों में निहित हैं
(रोटी का, सिंकी रोटी का एक टुकड़ा)

नंगे पैरों चलने वालों का सपना
(सड़क पर कम कंकड़ रहें प्रभु! कम टूटी हुई बोतलें हों)

खुरदुरे हाथों का सपना
(हरी दूब, चिकने रेशम का सपना)

कुंठित और कुचले हुए लोगों का सपना
(प्यार······ज़िन्दगी······उल्लास)

इनके लिए मैं अपने सपनों को भूल गया हूँ।
मैं अब ईश्वर का मुखपत्र हूँ
उसका आन्दोलन-कर्ता
सितारों और नंगे भूखों की भीड़ को
मैं ले चल रहा हूँ
नई सुबह की ओर!

—लुइस मुनोज़ मारिन

पेरू

प्रभु का सन्देश

पहाड़ियों की चोटी पर
ऊँचे, जंग से काले
तारों से कसे हुए
तार के खंभे
खड़े हैं,

•

रेल की खिड़की—
के शीशे गिरे हुए
उनके बीच से मैं देख रहा हूँ
ईसा को इन खंभों पर
कीलों से जड़ दिया गया है
उसकी दोनों बाहें फैली हैं।

हाथ और पाँव
से ख़ून बह रहा है
पर वह शान्त है
स्वच्छ पारदर्शी जल की तरह
शान्त!

तार
बिजली से भरे हुए तार
काँपते हैं
झनझनाते हैं
उनमें से शब्द दौड़ रहे हैं
इच्छाएँ आ जा रही हैं।

ईसा रक्त बहने से बेहोश हो रहा है
इनमें से कोई शब्द ऐसा नहीं
जो उसके काम का हो
इनमें से कोई सन्देश
उसके पवित्र पिता प्रभु का सन्देश नहीं।

एक अबाबील का छोटा बच्चा
जिसके पंखों में अब भी अंडे की
सफ़ेदी का स्वाद है
उसे चहक कर बता रहा है
प्रभु का सन्देश
जीवन का मर्म
जो सारी दुनिया के तार बेतार अपनी समस्त
वैज्ञानिक संकेत ध्वनियों में नहीं बता पाएँगे

—एनरीक बुस्तमान्ते बैलीवियन

ग्रामीण प्रणय गीत

उस खोई दोपहर के
जलस्रोतों में बहकर आया हुआ
यह ग्रामीण प्रणय का गीत है
जब तुम्हारी निगाहों ने
मुझ में पागलपन धधका दिया था

मेरा पुराना योद्धा हृदय भी
आज किस तरह
धड़क रहा है

जस्टिना,
मैं तुम्हारी आत्मा के लिए
लाल फूल और जंगली बेरों की अभी तक
रखवाली कर रहा हूँ

जल-कुमुदिनियों की पाँखुरियों से बने
एक नये नक्षत्र को
मैं ज़िन्दगी में खींच लाऊँगा
दिन हमारे चुम्बनों की लाज
से शर्मा जायगा

तुम्हारे होठों पर तमाम
सुबहें नाचेंगी
एक दूसरे का हाथ पकड़े
नदी के पार उतर कर
हम अपने सपनों के चरागाहों में भाग जायेंगे।

—एमिलियो वास्केज

•

वर्षा की दोपहर

आज दोपहर को घनघोर बारिश हो रही है
और मेरी प्राण ! लगता है जैसे मैं अब जीना नहीं चाहता !

३७

यह दोपहर बड़ी ही मधुर है, क्यों न हो !
यह पीड़ा और सौंदर्य से आभूषित है : एक युवती की तरह !

लिमा में आज पानी ख़ूब बरस रहा है : और मुझे याद
आती हैं
अपनी कृतज्ञताओं की अन्धी गुफाएँ
मेरी बरफीली चट्टानों के नीचे कुचले हुए किसी के फूल—
चट्टानें—जो उसकी प्रार्थना "यह क्या करते हो !" की
परवाह नहीं करतीं

मेरे उन्मत्त काले फूल और लगातार बर्बर ओलों की मार,
और बर्फ़ का अन्तराल
उसके मौन का सम्भ्रम
जलते हुए दीपकों में अन्तिम प्रहर की कथा अंकित करता है।

और आज इस बरसाती दोपहर को
मेरे साथ सिर्फ़ यह दिल है
रहस्यमय उलूक पक्षी की भाँति

दूसरी औरतें बगल से गुज़र जाती हैं
मुझे इतना उदास देखकर
मेरे दर्द की गहराइयों में से
थोड़ा-थोड़ा कर
तुम्हें अपने साथ ले जाती हैं

आज दोपहर को घनघोर बारिश हो रही है
और मेरे हृदय : अब मैं जीना नहीं चाहता !

—सेसर वाल्येजो

•

कौन ?

तुम कैसे चले आये, नोहार से,
इस प्रेम-विहीन रात की अथाह नीरवता में
दुखों से भग्न इस रात में
मेरे जीवन के अकेलेपन में
प्रकाश भर गये

मैं अपने अन्दर खोया था
बाहर की आवाज़ों की उपेक्षा करता—
अपनी घृणा के गह्वर में लीन

एक मधुर सी आवाज़
एक निगाह !
और लो—
मेरा पूरा जीवन अन्दर ही अन्दर द्रवित हो गया ।

—*जैवियर एबिल*

मनुष्य का रास्ता

मुझे मालूम ही नहीं हो पाया
कि वह तुम्हारा आकाश था कि मेरा
वह तुम्हारा सपना था या मेरा—
वह तुम्हारा पागलपन था या मेरा

पानी की सतह पर एक आलोक-धारा
सड़क की तरह लगती थी
उस पर एक जलयान था
जलयान पर किसी की क़िस्मत लदी थी--

हवाओं के कुंज, धूपछांह के कुंज
नीली बारिश तमाम दृश्य की
आत्मा की तरह पवित्र थी

मुझे मालूम नहीं हो पाया
कि वह समुद्र समुद्र ही था या और कुछ
अगर मैं कहता हूँ कि वह समुद्र है, तो
शायद वह समुद्र नहीं था
मैं कहूँ कि समुद्र नहीं था तो निश्चय वह समुद्र ही था !

पता नहीं कितनी देर यह सपना
दूसरे सपनों से स्थगित रहा
हवाओं की पाँखुरियों वाली एक नन्हीं कमलिनी
नरक के ऊपर का आकाशदीप

मुझे पता ही नहीं लग पाया
कि वह सपना तुम्हारा था या मेरा !
जो अपनी राह चुन लेता है
फिर उसे अपनी राह को निबाहना होता है।

—एनरीक़ पेना बैरीनिशिया

डर

मुझे डर लगता था
अतः मैं पागलपन से होश में लौट आया

मुझे डर लगता था
कि मैं पहिया न बन जाऊँ
कि मैं आकार-हीन रंग न बन जाऊँ
कि मैं एक क़दम न बन जाऊँ

क्योंकि मेरी आँखें शिशु थीं
और मेरा दिल
मेरी सदरी का एक
बड़ा सा बटन मात्र

लेकिन आज तो मेरी निगाहों ने ढीली सलवारें पहन ली हैं
अतः मैं सड़कों की ओर देख रहा हूँ

जो आज बढ़ते क़दमों के लिए भीख माँगने निकल
पड़ी है!

—कार्लोस आकिन्दो द' अमात

डचेस की बिल्लियाँ

डचेस की सफ़ेद बिल्लियाँ
डूबे हुए चाँद से मन्त्रमुग्ध
तनाग्रा प्रतिमाओं के पास सिकुड़ी हुई पड़ी है

३८

सदा खुले रहने वाले वातायनों में से
उन्मुक्त विलास से थकी हुई रात
हाथ हिलाते हुए विदा हो रही है
क्लान्त धुँए की गुंजलिकाओं सी
वे दृढ़ता से मौन साधे
लम्बी कतार बाँधे
आकाशगंगा की तरह
डचेस के सपनों में प्रवेश करती हैं

प्रातःकाल की किरनों के तीखे दाँत
चमकते सूजों की तरह
डचेस की सुकुमार पलकों पर उतर आते हैं
और शयन-मग्ना की पसलियों में
धँसने लगते हैं

सफ़ेद बिल्लियाँ उस गाढ़ी छाया को अलसाये पंजों से
नोचने लगती हैं
और चीर डालती हैं अँधेरे के मरणासन्न अन्तरालों को,
और धीरे-धीरे डचेस की सुकुमार पलकें खुलती हैं

और तब सौदागरों के कारवाँ के ऊँटों की तरह
पूर्वीय देश की ओर
कतार बाँधे
विचार में डूबी हुई
डचेस की सफ़ेद बिल्लियाँ
बर्फ़ पर पड़े पग-चिह्नों की शृंखला की तरह
शान से अपने रास्ते पर चल देती हैं।

—राफ़ाएल मेन्देज़ दोरिख़

फ्रांस

पार्टी के प्रति

मेरी पार्टी ने मुझे निगाहें वापस दी हैं, याददाश्त वापस दी है
मेरा ज्ञान शिशुओं के ज्ञान के बराबर था

•

कि मेरा ख़ून लाल है और मेरा हृदय फ्रांसीसी है
मुझे केवल इतना मालूम था—चारों ओर अन्धेरा है
किंतु मेरी पार्टी ने मुझे आँख खोल कर देखना सिखाया
जो कुछ देखा है उसे याद रखना सिखाया

मेरी पार्टी ने मुझको महाकाव्यों की चेतना प्रदान की
अब मैं देखता हूँ जोन को चर्ख़ा कातते और रोलैण्ड को
सींग की तुरही वजाते
वर्कार्स में; मेरी पार्टी ने महाकाव्य के नायकों का युग उतार
दिया
जब सीधे-सादे शब्दों में तलवार की चमक आ गई

मेरी पार्टी ने मुझे फ्रांस के राष्ट्रीय चिह्नों के अर्थ बताये
मेरी पार्टी, मेरी पार्टी, मैं तुम्हारी शिक्षाओं के लिए किन
शब्दों में धन्यवाद दूँ
मेरी पार्टी ने मेरे गीतों को नई ज़िन्दगी दी
क्रोध और प्यार और सुख और वेदना
सबको सार्थकता दी—

—लुई अरगाँ

युद्ध के समय का एक गीत

धरती का दरवाज़ा
एक फूल खटखटा रहा है
माँ की देहरी पर
एक बच्चा खटखटा रहा है

बच्चे के साथ साथ
जन्म लिया है बादल ने, धूप ने
फूल के साथ-साथ फूलते फलते हुए

मुझे सुनाई देते हैं अट्टहास और तर्क वितर्क

उन्होंने दुख को माप लिया है
कितना दुख एक बच्चा सह सकता है
इतनी ग्लानि बिना क़ै किये हुए
इतने आँसू बिना दम तोड़े हुए

मेहराबों के नीचे अनजान पगध्वनियाँ—
काली और भय से परिपूर्ण—
वे आ रहे हैं फूलों को उखाड़ फेंकने
बच्चे को कलंकित करने
दुख से और गहन पीड़ा से

—पाल इल्यार

३८

जीने का अधिकार, कर्तव्य

और कुछ नहीं होगा
न भुनभुनाता हुआ कीड़ा
न काँपती हुई पत्ती
न कोई गुर्राता हुआ पशु, बदन चाटता हुआ पशु

न कुछ गर्म न कुछ कुसुमित
न कुछ तुषाराच्छादित, न उज्ज्वल, न सुगन्धित
न मधुमासी फूल से स्पंदित कोई छाया
न बर्फ का फर डाले कोई वृक्ष
न चुम्बन से रंजित कपोल
न कोई सन्तुलित पंख, हवा को चीरता पंख
न कोमल मांसल खण्ड, न संगीत भरी बाँह
न कुछ मूल्यहीन, न विजय योग्य, न विनाश योग्य
न बिखरने वाला, न संगठित होनेवाला
अच्छे के लिए, बुरे के लिए
न रात, प्रेम या विश्राम की भुजाओं में सोई हुई
न एक आवाज़ आश्वासन की, न भावाकुल मुख
न कोई निरावृत उरोज, न फैली हुई हथेली
न अतृप्ति न सन्तोष
न कुछ ठोस न पारदर्शी
न भारी न हल्का
न नश्वर न शाश्वत

पर मनुष्य होगा
कोई भी मनुष्य
मैं या और कोई
यदि नहीं तो फिर कुछ नहीं होगा।

—पाल इल्यार

दुर्भिक्ष संस्कृति

"मैं खा रहा हूँ !"
जिसको दुर्भिक्ष ने संस्कार दिये हों

ऐसा बच्चा हमेशा यही जवाब देता है
क्या तुम आ रहे हो—जी, मैं खा रहा हूँ
क्या तुम सो रहे हो—जी, मैं खा रहा हूँ

—पाल इल्यार

तुम्हारे लिए रानी !

मैं चिड़ियों की दूकान पर गया
और चिड़ियाँ ख़रीदीं
तुम्हारे लिए रानी !

मैं फूलों की दूकान पर गया
और फूल ख़रीदे
तुम्हारे लिए रानी !

मैं लोहार की दूकान पर गया
और जंज़ीरें ख़रीदीं
तुम्हारे लिए रानी !

मैं उस बाज़ार में गया
जहाँ ग़ुलाम बिकते हैं
और तुम्हें खोजने लगा
पर तुम तो वहाँ मिली ही नहीं
रानी !

जाक़ प्रीवर्ट

जन्म

पिटारी में सफ़ेद चादरें
पलँग पर लाल चादरें
माँ में एक शिशु
प्रसव पीड़ा में एक माँ

•

पिता गलियारे में
गलियारा घर में
घर एक नगर में
नगर अन्धेरे में
मौत छिपी हुई माँ की एक चीख़ में
बच्चा—नई ज़िन्दगी में

—जाक़ प्रीवर्ट

४०

अन्तर्द्वन्द

मेरा बायाँ हाथ मुझे प्राणदण्ड देता है
मेरा दायाँ हाथ मेरी रक्षा करता है

•

मेरी आँखें मुझे निर्वासन देती हैं
मेरी वाणी मुझे प्रताड़ित करती है :
"अब समय आ गया है कि तुम
अपने साथ सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर कर दो !"

और इस पुराने हृदय में
हज़ारों लड़ाइयाँ लड़ी जा रही हैं
मेरे शत्रु और मेरे हताश मित्रों के बीच
जो अन्त में समझौता कर लेंगे ।
और ऐसी शान्ति का नया संसार बसायेंगे
जिसमें मेरे लिए कोई स्थान नहीं होगा !

—अर्ले बास्के

काव्य-शिल्प

पक्षी खोल में; खोल अण्डे में; अण्डा चट्टान में;
चट्टान नन्हीं उँगली में, नन्हीं उँगली चाँद में, चाँद शिकारी

कुत्ते में; शिकारी कुत्ता जलपोत में; जलपोत जंगल में;
जंगल पाउडर के डब्बे में, पाउडर का डब्बा अंगूठी में,
अंगूठी बिल्ली के बच्चे में, बिल्ली का बच्चा
निर्जन द्वीपमें; निर्जन द्वीप सोख़्ते में, सोख़्ता ख़ाली
मस्तिष्क में; और ख़ाली मस्तिष्क—अन्धेरी रात में।

—*पाल कालिने*

हमारे बीच अग्नि

हमारे बीच अग्नि अपने सूक्ष्म हाथ फैलाती है
और प्रगाढ़ रक्त सूरज की तरह धीरे-धीरे उगता है
हम इसी आग पर जीते हैं जो हमारी नसों में प्रवाहित है
और उस आग से खेलती है जो हमारी क्रीड़ाओं को
स्थगित करने की चेष्टा करती है !

•

जब शिशिर में रातें जम जाती हैं तो मुझे अच्छी लगती
है आग
जो इतनी मिलती-जुलती है उन विचारों से जो
तुम्हारी गहरी आँखों की मनस्थितियों से प्रदीप्त होने लगते हैं
जिनकी दृष्टिहीन चितवन में इस आग में सुलगते हुए देखता
हूँ जो मेरी रात में भी आलोकित रहती है

—क्लाद राय

जयन्ती

अब चूँकि तुमने एक नीहारहीन वसन्त को
एक तुषाराच्छन्न हत्याकाण्ड से संयुक्त कर दिया है—
ऐसा हत्याकाण्ड जो राख होने की यात्रा पर चल चुका
है—तो अन्तरिक्ष पर एकत्रित होती हुई फ़सल

काटो और उसे उन आशाओं तक ले जाओ जो
उसके जन्म के समय उसके पालने के चारों ओर थीं।

दिन अपनी गर्म निहाई पर तुम्हें अच्छी तरह रक्खे
तुम्हारा मुख तुम्हारे श्वासान्त की घोषणा करता है
तुम्हारे गर्म अधखुले छत्ते मुक्ति की ओर झपटते हैं
निश्छलता के फल तक तुम इसीलिए नहीं पहुँच
पाते कि मौसम की आत्मा तुम्हें रोक रही है।

—*रैने शार*

४१

ताकि कुछ भी परिवर्तित न हो

१

मेरा हाथ थामो और इस काले ज़ीने पर चढ़ना शुरू करो ओ
समर्पित, देखो
कि हमारे आदिम अस्तित्व की तृष्णाकुलता धुँआ देने लगी है
और विराट नगर सिर्फ़ लोहा और दूरागत आवाज़ें बन गये हैं।

२

हमारी कामना ने समुद्र का गुनगुना आवरण धीरे-धीरे से उतार लिया है—
उसके वक्ष पर तैरने से पहले।

३

तुम्हारी आवाज़ के फूल में। पक्षियों की उड़ान सूखे मौसम की हर चिन्ता को हर रही है

४

जब रेखांकित बालू, धरती की धीमी बैलगाड़ियों से गिरती हुई, दिशा-स्तंभ बन जायगी, तब हमारे आँगनों में शान्ति अवतरित होगी।

५

खण्ड मुझे चीर देते हैं। अत्याचार मुझे तानकर खड़ा कर देता है।

६

अब न आकाश उतना पीला है, न सूरज उतना नीला।
वर्षा का अलसाया सितारा उग आया है। बन्धु,
ओ निष्ठावान, तुम्हारा जुआ उतर गया है। तुम्हारे कन्धों
पर ज्ञान उग आया है

७

सुन्दरता मैं तुमसे मिलने शीतल एकान्त में जा रहा हूँ। तुम्हारा प्रदीप गुलाबी है, हवा झिलमिलाती है। साँझ की देहरी टूट चुकी है

८
मैं जो बन्दी हूँ, मैंने पत्थरों पर फैलने वाली लता का—
धैर्य ग्रहण किया है—अनन्त अज्ञान की चट्टान को जीतने के लिए

९
"मैं तुम्हें प्यार करती हूँ" हवा कहती है उन सबों से जिन्हें वह छूती है।
मैं तुम्हें प्यार करता हूँ और तुम
मुझमें जीवित हो

—रेने शार

बहती हिमशिलाएँ

बहती हिमशिलाएँ, बिना बारजे के, बिना पच्चीकारी के—जिस पर
उदास बूढ़े जलपक्षी और सद्यःमृत जहाज़ियों की
भटकती आत्माएँ उत्तरी ध्रुव की जादूगरनी रातों को
झाँक कर अपलक देखने आते हैं

बहती हिम-शिलाएँ, हिम-शिलाएँ, निरवधि शिशिर के लामज़हब मन्दिर
धरा नक्षत्र के बर्फ़ीले छत्रों से मण्डित

कितने ऊँचे, कितने पवित्र हैं तुम्हारे ठण्डे ढलान

बहती हिमशिलाएँ, हिमशिलाएँ, उत्तरी अतलान्तक के कगारे,
अकल्पित समुद्रों पर जमी हुई गौरवमयी बुद्ध-प्रतिमाएँ, दुर्निवार
मृत्यु के चमकते प्रकाशस्तंभ, शताब्दियों के मौन से फूटा हुआ क्रन्दन

बहती हिमशिलाएँ, हिमशिलाएँ निष्काम एकाकी साधक,
श्वासरुद्ध देशों में, सुदूर कृमिकीटों से मुक्त । द्वीपों के
जनक, जलजछटाओं के जनक, मैं तुम्हें देखते ही
कितनी अन्तरंगता से जान लेता हूँ ।

—अरीं मिशौ

निर्वसना तुम होगी

निर्वसना तुम होगी कक्ष में प्राचीन वस्तुओं के बीच
पतली लम्बी, उजाले की बंसी की तरह
गुलाबी आग के सम्मुख घुटने समेटे
तुम जाड़े का मन्द मर्मर सुनोगी

तुम्हारे चरणों के निकट मैं, तुम्हारे घुटने अपनी अंजलियों
में सहेजे,
तुम्हारी सलज मुस्कान, लतर की टहनियों से भी मन्द, अनुकूल
मेरी माथे की लटें तुम्हारी जंघाओं पर बिखरी
और मेरी आँखों में आँसू कि आह तुम
कितनी अच्छी हो

अच्छा लगेगा हम दोनों का एक दूसरे पर अभिमान करना
और मैं तुम्हारे कण्ठ को आहिस्ते से चूम लूँगा और तुम
मेरी पलकों को, और तुम मेरी ओर देखकर मुस्का दोगी
अपनी सुकुँवार गर्दन को ज़रा सा मोड़कर

और जब बूढ़ा नौकर स्वामिभक्त और बीमार सा,
द्वार पर दस्तक देगा—कहेगा "खाना तैयार है !",
तुम चौंक जाओगी, लजा जाओगी और अपनी पतली बाँहें
लहरा कर अपने भूरे वस्त्र सम्हाल लोगी

और जब तक हवा दरवाज़े में से आये
और पुरानी बेमरम्मत घड़ी ग़लत वक़्त के घण्टे बजाये
तुम अपने पाँव—हाथी दाँत के सुगन्ध बसे,
काले आच्छादनों में वापस छिपा लोगी

—फ्रांसी जेम

ब्राजील

प्रार्थना

तू महान् है
तेरी महिमा अपरम्पार है
इसलिए नहीं कि तेरी माया से
दिन को सूरज चमकता है और रात को सितारे

इसलिए नहीं कि तूने संसार बनाया
उसका वैभव बनाया—फ़सलें—फूल—सिनेमा—रेलें
इसलिए नहीं कि तूने समुद्र बनाया
उसका वैभव बनाया—मछलियाँ, पौधे, पनडुब्बियाँ
और जलपरियाँ !

मैं तुझे इसलिए महान् मानता हूँ
कि तू अपने को छोटा बना लेता है
इतना छोटा कि मैं दुर्बल और भाग्यहीन
अपने में तुझे स्थित पाता हूँ

—म्यूरिएल मेन्द

रहस्यमय पक्षी

किसी को नहीं मालूम था कि
यह रहस्यमय पक्षी कहाँ से आया
सम्भवतः किसी खाड़ी या किसी अज्ञात द्वीप से
पिछला तूफ़ान इसे उठा लिया था

या यह समुद्री सिवारों के घने कुंजों में पैदा हुआ था
या किसी दूसरे नक्षत्र से, वातावरण से, दूसरे लोक से
टपक पड़ा

बूढ़े मल्लाहों ने भी कभी
बर्फ़ से ढके समुद्रों में इसे नहीं देखा
न किसी यात्री को यह कहीं मिला
इसका रूप रंग आदमियों का सा था, देवताओं का सा
और कवियों की तरह खोया खोया रहता था
पहले यह मन्दिरों के गुंबदों के पास मँडराया करता था

पर पुरोहितों ने इसे अशकुन समझ कर उड़ा दिया
उसी रात को यह एक प्रकाश-स्तम्भ पर जा बैठा
पर रखवारे ने इसे उड़ा दिया
कि कहीं जहाज़ राह न भूलने लगें
किसी ने इसे मुट्ठी भर दाना नहीं दिया
न आश्रय दिया
एक ने कहा—"यह नरभक्षी पक्षी है जो भेड़ों को
खा जाता है !"

दूसरे ने कहा—"यह भूखा प्रेत है"
जब वह उनींदे बच्चों पर
अपने पंखों की छाँह कर देता
तो माताएँ ख़ुद पत्थर मार कर इस रहस्यमय
अभागे अनाश्रित पक्षी को उड़ा देती थीं

शायद यह पक्षी बादलों के बीच छिपे
किसी पर्वत की गुफा से उड़ता भटकता आ गया था
या उसका संगी तीर से घायल हो चुका था—
यह पक्षी रूप रंग में मानव की तरह था, देवदूतों की तरह
और कवि की तरह एकाकी
वह लोगों में घुलना मिलना चाहता था
पर लोग उसे अशुभ समझ कर उड़ा देते थे

जब सदा की तरह गेहूँ के खेत बाढ़ में डूब गये
तो लोगों ने कहा—"बाढ़ इसके कारण आई है !"
जब सदा की तरह अकाल में ढोर ढंगर मरने लगे
तो लोगों ने कहा—"यह पक्षी पशुओं को खा जाता है !"

और चूँकि किसी ने उसे एक बूँद पानी
नहीं पीने दिया
तो वह पक्षी मुर्दा विद्रोही सैम्सन की तरह
गिर पड़ा

तब एक भोला भाला मछुआ उसके
कोमल पंखों को समेट कर उसे उठा लाया
बोला—"यह उस पवित्र पक्षी का शव है"
कोई बोला—"यही पक्षी तो
साधु सन्तों की गुफाओं में फल रख आया करता था।"
एक भिखारी ने बताया "एक बार जाड़े की रात में
इस पक्षी ने अपने पंखों से उसे गरमाहट दी !"

और देश की जनता के राजनीतिक नेता ने कहा
है—"यह पक्षियों का राजा था
और मैं इसे जानता ही नहीं था !"
किन्तु राजनीतिक नेता के सबसे छोटे लड़के ने कहा--
"वह एकाकी, भावुक, चिन्ताशील और विनम्र था
इसके पंख मुझे दो कि मैं उससे अपनी ज़िन्दगी के बारे
में लिखूँ !

जो बजाय मेरे पिता की ज़िन्दगी के
इस पक्षी की ज़िन्दगी से बहुत मिलती जुलती है
मैं इस पक्षी में अपने को देखता हूँ !"

—जार्ज दैलिमा

४२

जान काका

जान काका उखड़े पेड़ की तरह मुर्झा गये
जान काका अपनी आख़िरी साँसे गिन रहे हैं
जान काका नाव चलाते थे
हल चलाते थे

•

धरती से हरी वनस्पतियों की दौलत उगाते थे
कहवा, गन्ना, कपास !
जान काका ने धरती से हीरे निकाले थे
ताजे रसीले मीठे फलों वाले हीरे
जान काका की बेटी
मेम साहब के बच्चों को दूध पिलाती थी
धीरे-धीरे उसका ख़ून निचुड़ गया
वह भी सूख गई
जान काका की चमड़ी हमेशा कोड़ों से उधड़ी रहती थी !
जान काका की ताक़त हमेशा, हल और हँसियों की मूठ में
लगी रहती थी

गोरों ने जान काका की पत्नी को छीन लिया था
बच्चों को पालने-पोसने के लिए
जान काका का रक्त मेम साहब के उच्च रक्त में मिलता था
जैसे भूरा गुड़ सफेद दूध में घुल जाय
मेम साहब के बच्चे जान काका को
घोड़ा बनाते थे

जान काका को ऐसी अनोखी कहानियाँ
आती थीं कि लोग सुनते-सुनते रो पड़ें

जान काका आख़िरी साँसें गिन रहे हैं
बाहर रात इतनी काली है जैसे जान काका का चमड़ा
आकाश के सभी तारे ग़ायब हैं
कहीं जान काका ने जादू तो नहीं कर दिया
जान काका जादू भी जानते थे

—जार्ज दैलिमा

शैशव

मेरे पिता अपने घोड़े पर चढ़े और गाँव की ओर चले गये
मेरी माता घर रहीं, अपनी कुर्सी पर बैठ कर सिलाई कढ़ाई
करती रहीं ।

मेरा छोटा भाई सोता रहा
मैं, एक अकेला बच्चा आम के नीचे लेटा
राबिन्सन क्रूसो की कहानी पढ़ता रहा
एक लम्बी कभी न समाप्त होनेवाली कथा ।

जो लोरियाँ गाकर सुनाती रही और
आज तक दिमाग़ में तरोताज़ा है
ऐसी एक आवाज़, दोपहर की उजली धूप में
हमें काफ़ी पीने बुलाती है—
उसी नीग्रो दासी की भाँति काली काफ़ी
तुर्श काफ़ी
अच्छी काफ़ी

माँ बैठी सी रही थी
मेरी ओर देखते हुए
'चुप, बच्चे को जगाओ मत ।'
एक मच्छर पालने पर बैठ गया
माँ गहरी निश्वास लेती हुई

दूर कहीं मेरे पिता खेतों और
जंगलों में खोज करते घूम रहे हैं
और मैं ?
मैं क्या जानता था कि
खुद मेरी कहानी राबिन्सन क्रूसो की कहानी से
कहीं ज़्यादा दिलचस्प है

—कार्लोस द्रमन्द द अन्द्रादे

कल्पनाएँ

तूतिया की तरह नीला आसमान
चाँद व्यंग से हँसता हुआ
दिन का मलीन निष्प्रभ चाँद
खाने के कमरे में टँगे
एक छापे की तस्वीर-सा

संरक्षक देवदूत रात को पहरेदारी कर रहे हैं
कैशोरावस्था के सपनों की देखभाल कर रहे हैं
पलंग के फूलों और परदों पर से
मच्छड़ों को उड़ा देते हैं

गोल सीधी सीढ़ियों पर
कहते हैं अल्हड़ लड़कियाँ
आकाशगंगा के झीने वस्त्र पहने
रुपहले जुगनुओं की तरह चमकती हैं

एक दरार में से शैतान
मिचमिची आँखों से झाँक रहा है

उसके हाथ में दूरबीन है जिससे
वह सात योजन तक देखता है
उसके कान सितार की खूँटियों की तरह
सुडौल हैं।

संत पीटर सो रहा है
स्वर्ग की घड़ी अनवरत रूप से ख़र्राटे भर रही है
शैतान एक दरार में से झाँकता है

नीचे
कुचले हुए होठ आह भरते हैं, काँपते हैं
क्या वे प्रार्थना कर रहे हैं
वे प्रेम पीड़ित हैं

उलझी हुई बाँहें और प्रगाढ़ रूप से उलझ जाती हैं
प्रेम प्रेम पर छा जाता है

ईश्वर की इच्छा पूरी होगी।
दो एक चाहे रह जायँ
बाक़ी सब जहन्नुम रवाना किये जा रहे हैं।

—कार्लोस द्रमन्द अन्द्रादे

आधी रात

आधी रात
लालटेन के पास
बिस्तुइयाँ पतिंगों को खा रही हैं

४४

गली में कोई नहीं आ जा रहा है
नशे में चूर शराबी भी नहीं

फिर भी परछाइयों की एक कतार चल रही है
उन सबों की परछाइयाँ जो इधर से गुजरे हैं
वे सब जो अभी जिन्दा हैं या मर चुके हैं

नदी अपने किनारों पर सर रखकर रो रही है
रात कुछ कह रही है
(यह रात नहीं—वह जो इससे भी बड़ी असीम रात है)

—मान्युएल बान्दैरा

जंगलों का गीत

ये हवाओं में काँपते हुए जंगल हैं
झूम रहे हैं, काँप रहे हैं, बाँहें झकझोर रहे हैं
इस सिरे से उस सिरे तक
आज जंगल कुछ बोलना चाहते हैं

और वह चीखते हैं, सिसकते हैं, सिर धुनते हैं,
जैसे किसी दुःखान्त नाटक की कोई अभिनेत्री !
हर विद्रोही शाख में वही तड़प है
हरेक में वही छिपा हुआ भय
या वे शायद कोई चीज़ माँग रहे हैं
कौन-सी है वह चीज़ ?

इन जंगलों में भी चेतना है ? वे क्या माँग रहे हैं
क्या वे पानी माँग रहे हैं;
किन्तु अभी तो पानी का सैलाब आया था
जिसने पूरे जंगल को झकझोर दिया था
सैकड़ों पेड़ उखाड़ दिये थे, निर्भयता से
क्या वे युगों पुराने कूड़े को भस्म कर देने के लिए
पवित्र आग की माँग पेश कर रहे थे
या वे कुछ माँग नहीं रहे हैं
केवल बोलना चाहते हैं
और बोल नहीं पाते !
क्या उन्होंने अपनी सुकुमार जड़ों के कानों से
धरती की पर्तों में छिपा कोई भेद पा लिया है
ये जंगल हवाओं में काँप रहे हैं, झूम रहे हैं
तड़प रहे हैं,
ये जंगल किसी सन्निपात-ग्रस्त जनता की भीड़ की तरह है !

सिर्फ़ छोटे सुकुमार बाँसों का एक
छोटा-सा कुंज अलग खड़ा
धीमे-धीमे झूम रहा है
जैसे इस जनव्यापी पागलपन पर मुसकरा रहा हो

•

—मान्युएल बान्दैरा

ब्राज़ील का गीत

यह स्वच्छ धूप—
खामोश खजूर
चमकती चट्टानों
जगमगाहटों

ज्योति-रेखाओं
प्रकाश स्फुलिंगों—की घड़ी है
मैं विशाल ब्राज़ील का संगीत सुन रहा हूँ

मैं सुन रहा हूँ—इगुआस्सू के गरजते हुए घोड़े नंगी चट्टानों को कुचल रहे हैं,
आर्द्र झोंकों में नाच रहे हैं, भीगे खुरों से फेन और हरे-भरे संगीतवाली
सुबह को चीरने बढ़ रहे हैं

मैं तेरा गम्भीर स्वर सुन रहा हूँ, तेरा खूँख्वार और गम्भीर स्वर, ओ अमेजन नदी !
तेरे अलसाये सैलाब, तेल की तरह गाढ़े, क्षण प्रतिक्षण विस्तार तोड़ते
हुए, किनारों से कीचड़ निगलते हुए, सदियों पुराने पेड़ों की
जड़ें उखाड़ फेंकते हुए, द्वीपों को बहाकर खींच ले जाते हुए और
समुद्र को पागल भैंसे की तरह शहतीरों तनों शाखों और
झाड़ियों से मथते हुए

मैं सुन रहा हूँ पछुवा हवाओं में धरती को चिटखते हुए, धरती जो खानाबदोशों के
नंगे धूलभरे पावों के नीचे हाँपने लगती है, धरती जो धूल बनकर
खामोश बादलों के झंझावात के रूप में जो ज़ीरों की सड़कों पर
सर धुनती घूमती है, क्रेटों के सूखे मैदानों में धूल बनकर बिछ जाती है।

मैं बन कान्तार का विहग रव सुन रहा हूँ। अलापें, तान, चह-
चहाहट, चमक,
कूक, केका, चोंचों की कटकटाहट, मोटे तारों की तरह
गम्भीर झंकार वाली
ध्वनियाँ, ढोल की गमक, कर्कश गलों का स्वर, पंखों की
फड़फड़ाहट
झिल्लियों की झंकार, फुसफुसाहट, सपनीली पुकारें,
लम्बी दोहरी
पुकारें—आकाश के नीचे घने जंगल !

मैं पानी के चश्मों को हँसते हुए सुनता हूँ लालची मछलियों को
गुमराह
करते हुए, पानी के नीचे छिपी चट्टानों की दरारों में मछलियों
के आश्रयों को कुरेदते हुए जल की कलकल ध्वनि !

मैं सुनता हूँ गन्ने पेरते हुए कोल्हुओं की चूँ रूँ रूँ, कड़ाह में
गिरते हुए मीठे
रस की मीठी ध्वनि, रबड़ वृक्षों के बीच बालटियों की
खटर पटर
और राहें बनाती हुई कुल्हाड़ियाँ
और शहतीरे चीरते हुए आरे
और धूप में झूलती हुई अमराइयाँ
और दलदलों में सोते हुए घड़ियालों को देखकर दाँत
किटकिटाने
वाले पेक्ककारियों की आवाज़

मैं सुनता हूँ सारे ब्राज़ील को गाते हुए, बोलते हुए, पुकारते हुए
झूमती हुई झाड़ियाँ
चीखते हुए भोंपू
खड़खड़ाती, हाँपती, चीखती, गरजती हुई मिलें
विस्फोट होती हुई नलियाँ,
घूमते हुए क्रेन,
चलते हुए पहिए
भागती हुई रेलें,
घाटियों और पठारों की आवाज़ें,
गाय बैलों की घंटियाँ,
घोड़ों की हिनहिनाहट,
चरवाहों के गीत,
घण्टों की घनघनाहट,
सट्टे के बाज़ारों की चीख़ पुकार,
तोतों की तरह नम्बरों की रटना,
गगनचुम्बी अट्टालिकाओं के नीचे
सड़कों का शोर शराबा,
उन विभिन्न जाति के लोगों की भाषाएँ
जिन्हें बन्दरगाहों की समुद्री हवा
जंगलों की ओर बहा लाती है—

इस पवित्र धूप की घड़ी में मैं ब्राज़ील का गीत सुन रहा हूँ
ब्राज़ील के समस्त वार्तालाप हवाओं में उड़ रहे हैं
कहवा की झाड़ियों के पास किसानों की बातचीत
सोने की खानों में मज़दूरों की बातचीत
फौलाद की भट्टियों में श्रमिकों की बातें
देहाती घरों के दालानों में सैनिक अफसरों की बातचीत

लेकिन इन सबों से ज़्यादा स्पष्ट जो मुझे सुनाई पड़ रहा है
इस पवित्र धूप—
ख़ामोश खजूर
चमकती चट्टानों
जगमगाहटों
ज्योति रेखाओं
प्रकाश स्फुलिंगों के कण में
वह है ओ ब्राज़ील ! तेरे पालनों के पास गाई जाने वाली
लोरियों का स्वर
तेरे अनगिनत पालने, जिनमें दुधमुँहे भोले भाले सरल बच्चे
सो रहे हैं !
कल आने वाली पीढ़ी के लोग !

—रोनाल्द द कारवैल्यो

मैक्सिको

दोपहर—जाड़े की

दोपहर—खिड़कियों के परदों का उठा देना
चमकते हुए आँगन का भी खूबसूरत कमरे-सा लगना
धूप में सेब—लाल सेब की गर्म महक
और छोटी-छोटी छतें : ऐसी बातें जो प्यार जगायें

•

शीशे के गिलास में ठंडे पानी से गला सींचना
और गिलास में उस स्नेह-भरे कमरे में उड़ते हुए
छोटे-छोटे देवदूतों की छाया देखना
नाशपाती को छूकर धरती की गोलाई का अनुमान करना
यह सोचना कि कुछ बदल जाता है
फिर भी पता नहीं क्या बात है कुछ भी नहीं बदलता ।

अन्त में एक परिपक्व दृष्टि
जो सभी उलझनों में मूल सूत्र पहचान लेती है
मूल सूत्र है सहज जीवन की साधारण बातें
·········रोटी, शहद, धूप, गीत
मूल तत्त्व है—सहज-मन वाला आदमी
जो गुलाब की पाँखुरियों को तोड़ता हुआ
मेजपोश पर नाख़ूनों से किसी का नाम लिखता है ।
जाड़े की दोपहर में ।

—हेम तारेंस बोदो

अँगूठी

ओह कौन उसे निकालेगा
इस कुँए में मेरी अँगूठी गिर गई है
एक दिन शाम को !

•

उस पर दो ही तो अक्षर लिखे थे
मैंने उसे भी खो दिया
मैंने अपने गीत और अपने आँसू खो दिये
मैंने अपनी क़िस्मत खो दी—
अब कुँए की जगत पर सुबह-शाम
चक्कर लगाने से क्या फ़ायदा

मेरी अँगूठी मेरी सहेली थी
उसे कोई ला दो ! मुझसे चाहे कुछ ले लो
अगर एक शाम के लिए
वह मेरी अँगुली में फिर आ जाय
तो मैं उससे कितनी बातें बताऊँ
यूँ तो वह चाँदी की ही थी
लेकिन वह मेरी पहली ही अंगूठी थी
उसका दाम कोई मुझसे पूछे

उस अँगूठी को हुआ क्या था
मालूम होता है कुँए की अतल गहराई में
छिपे हुए काले दर्पण में वह
अपना रूप देखने को ललचा उठी थी
या लहरों में बनती मिटती परछाइयों में
उसने अपने भविष्य को पहचान लिया था
या गहराइयों से उठती हुई किसी प्रतिध्वनि की
आह ने उसका हृदय छू लिया था
उसे कोई ला दो मुझ से चाहे कुछ ले लो !

ओ नीचे तैरने वाले कछुए,
अपनी पीठ पर रख कर मेरी अँगूठी ऊपर ला दोगे ?
हाँ, मेरी अँगूठी--
एक शाम को इसी कुँए में गिर गई थी !

—एनारो एस्त्रादा

निशा-गुलाब

एक रात को ! कोहरे भरी रात को
मेरी खिड़की के पास एक गुलाब खिला
सफ़ेद स्वच्छ हिम-सी पाँखुरियाँ और रातभर वह खिलता रहा
मेरी निगाहों के आगे !

४६

लेकिन सुबह हुई कि वह आँसू की तरह पिघल कर गिर
गया—खो गया !

फिर एक गुलाब खिला—संगीत का—
बर्फ़ की तरह धीरे-धीरे मेरी आत्मा पर गिरता रहा
लेकिन सहसा सुबह होते-होते दर्द भरी नीरवता में
खोखली छाया में, क्रूर मूर्च्छना और अज्ञात भय में बदल
गया।

अन्त में मेरे स्वप्न में एक गुलाब खिला—प्यार का—
उल्लास में उसकी जड़ें थीं मुस्कानों की पाँखुरियाँ थीं
लेकिन ज्योंही मेरी आँख खुली

वह ध्वस्त उपवन में दूसरे मुरझाये फूलों की तरह
मुरझा कर गिर गया—
कहते हैं जो प्यार करता है उसे हमेशा झूठे सपनों की फसल
काटनी पड़ती है !

—राफ़ाएल सोलाना

मैं अभी तुम्हें जानता भी नहीं

मैं अभी तुम्हें ठीक से जानता भी नहीं
पर अभी ही मन में सोच रहा हूँ
क्या तुम कभी न समझोगी कि तुम्हारा व्यक्तित्व
मेरे ख़ून में सोयी हुई लपटों को किस तरह धधका देता है।

जाने कब तक प्रतीक्षा करनी होगी—
थोड़े दिन – बहुत दिन
ओह सभी दिन एक से लगते हैं
अनन्त महासागर से लम्बे अथाह—
और धैर्य हममें से भला किसे है ?

मैं अभी तुम्हें ठीक से जान भी नहीं पाया हूँ
लेकिन अभी ही शहर, बादल, प्राकृतिक दृश्य,
यात्राएँ सभी की छाप मेरे मन पर से मिट गई हैं
और आश्चर्य से मैं देखता हूँ कि
मैं अभी भी एक पत्थर में क़ैद हूँ
और आसमान में एक भी बादल नहीं है।

कैसे ये शब्द पुनर्नूतन बनेंगे, जब कि
अभी जब मैं तुम्हारे पास हूँ ये चले जा रहे हैं
और तुम्हारी हथेलियों के उभार में
अनन्त दिशाओं का विस्तार
दिखा रहे हैं !

—कार्लो पेलिसर

रात्रि-गीत

रात क्या है ?
विशाल काले पंखों का शिथिल आक्रमण
उसकी गोद में अखिल सृष्टि काँपती है
सभी प्राणी अपने व्यक्तित्व की सीमाओं में

आबद्ध काँपते हैं और अपने को खो देते हैं
और पराजित क्षणों की तेज धार में
बह जाते हैं

ओ रुकी हुई हवा, ओ खामोश डाल
ओ अनन्त झील ! नीरव, नींद में चलती हुई !
आकाश से मिलन के मधुर सपनों में डूबी हुई धरती

ओ आदमी की नसों में बहता हुआ गाढ़ा काला खून
जिसके बाहर छलक आने को रात कहते हैं

और ओ आदमी—नींद में डूबे आदमी की गर्म करवट
जहाँ से नई सुबह अँगड़ाई लेकर उठती है।

—आक्टावियो पाज़

आत्मलीन

आँखें बन्द कर लो प्राण !
और पलकों की घनी गुलाबी छाँह में
अपने को अँधेरे में खो जाने दो

तुम्हें महसूस होगा कि
बन्द गुफाओं में छिपे हुए झरने की तरह
यह दिल की धड़कन है
वहाँ, बहुत दूर पर सैकड़ों प्रच्छन्न आवाज़ें
वृत्त बनाती हुई लगातार, गूँजती हुई
गिर रही हैं

अपने अस्तित्व को अँधेरे में डुबो दो
अपनी मांसलता में
अपने हृदय में अपने को डुबो दो
तुम्हारी हड्डियाँ जमी हुई बिजलियों की तरह—
तुम्हारी टेढ़ी तिरछी हड्डियाँ--
तुम्हें चकाचौंध कर देंगी ! बेहोश कर देंगी
तुम्हारी हड्डियों का फासफोरस
शरीर के अन्धकार की गहराई में
जलती हुई प्रवंचना की तरह तैरता है !

उस पिघली हुई शीतल नींद में
अपने सारे आवरण उतार फेंको प्राण
तुम्हारा व्यक्तित्व क्या है
महज़ किसी विराट महासागर द्वारा
किसी तट पर फेंकी गयी फेन प्रतिमा मात्र
ओ अनन्त नारी अपने अनन्त अस्तित्व में अपने को लीन
कर दो
एक सागर दूसरे सागर में विलीन हो जायगा
अपने को भूल जाओ, मुझको भूल जाओ

उस अनन्त समाधि में
सारी चीज़ों का——चाहे वह होठ हों
या चुम्बन या प्यार
सभी का कायाकल्प हो जाता है
जैसे रात का दर्द तारे बनकर
चमक उठता है !

—आक्टावियो पाज़

४७

घिरा हुआ उद्यान

पुराने जर्जर मकान सा मेरा अपना प्रतीक्षारत मन
जिस पर दस्तक दे रही हैं बार बार

—आवाज़ें जो हुआ करती थीं
आत्माएँ जो कभी जन्मी ही नहीं
भविष्य से या विस्मृत अतीत से आती हुई··· ···

प्यार की पहली रात की सांकेतिक आवाज़ें,
पुराना पड़ा हुआ गीत चाँदनी रात में
तमाम ज़िन्दगी व्यर्थ खोजा हुआ अनपाया लक्ष्य··· ···

अब पहचान पाया इस आगन्तुक को : एक ज़माना था जब
इस आवाज़ से एक आवेग जाग उठता था—जिसे ज़िन्दगी
सुसंस्कृत संकोच से आज दबा ले जाती है

आत्मा अब खामोश हो गयी है, बन्द कर लिया है उसने
अपना कक्ष, जला लिया है शाम का दिया······
और अब अन्दर से कोई जवाब नहीं आता

—एनरीक़ गोंजालेज मार्टिनेज़

द्वीप

मैं अपने में झाँकता हूँ
अपने ही क़दमों के ज़ीने से
अपने में गहरे उतर कर
पाता हूँ समय का पीला चेहरा

गुज़री घड़ियों की झुर्रियाँ
और एक दीर्घ अन्ध-अन्तराल—अस्तित्व और विस्मरण के बीच।

उठी, मगर निष्क्रिय तलवारों के हरे मैदान पर
सूरज और चट्टान के बीच
भूरी खाल के नीचे के कौंधते प्रकाश की ओर
मैं पुराने रोमांचों की गुफ़ा में से उतरता हूँ

१
मुझे मिलता है एक शिशु कभी कभी ;
एक अबोध शिशु अपनी जिज्ञासाओं के सलीब पर टँगा,
रहस्य और पीड़ा के बन्दरगाह में लंगर डाले
छोटे नये जहाज़ की तरह

धुँधले कोहरे में से स्मृति
उभर कर कहती है :
"हाँ उदास होने की बात है, हाँ
पर तुम्हारी बिल्ली अब भी उतनी ही प्यारी
जमुहाइयाँ ले रही है
और तुम्हारी जंगलों और समुद्रों की
सुकुँवार नायिका अब भी डाकुओं के चंगुल में हैं
"उदासी की बात है, हाँ
पर अब भी वह आर्द्रता और उल्लास की जड़ी
कुँए की जगत पर उगी झूल रही है
पृथ्वी से सवालात पूछती हुई
और हेमन्त के अपराह्णों में मुर्झाकर सूखती हुई ।

"हाँ, उदासी की बात है,
पर पुस्तकों के पृष्ठ, सब काल्पनिक और प्रत्युत्पन्न
दर्द से भरे हुए हैं
और तुर्श फल झड़ कर सड़ गये हैं
"शायद उदासी की बात है :
लेकिन सबका सब रहता है, बाट जोहता है और बना
रहता है।"

२
स्वर्ग और नर्क के बीच के ढूह की ओर
चट्टान को
अन्धे जल से, उसकी गोलक हीन अपलक दृष्टि से
छेदते हुए
उसकी अन्धी दूरियों की धधकती लपटों से
छेदते हुए
विशाल सुरंग, खड़ी, अभेद्य ।
कटी डालियों और अँधेरे के गह्वरों
के घेरे के पार
तुम हो अपनी मुस्कानयुक्त
अर्द्धपारदर्शी छाया,
तुम हो अपनी कथा कहानियों वाले वातावरण के साथ
फुदकती तितलियों और रोशनियों के साथ
अपनी दिव्य विश्राम मुद्रा
की ख़ामोशी में

३
मैं समर्थन खोजना चाहता हूँ
सुबह को स्थापित करना चाहता हूँ

मैं पाना चाहता हूँ वह जीवन जिसने मुझे जिस्म दिया है
यह आकार
यह सुकुमार हल
यह यातना

मैं चाहता हूँ धरती मेरे चारो ओर लिपट जाय
मैं चाहता हूँ एक गहन धातु
सदा सजीव उद्दीप्त :
चरण चिह्नों की श्रृंखला मेरे पीछे !

इसके लिए मैं सवाल पेश करता हूँ अपनी नयी अंतरात्मा से
अपनी आदिम स्मृति से
मैं अपने बाबत पूछता हूँ उस डूबे बच्चे से
उस मौन की सुरंग के अथाह जल को मथते हुए
मैं पूछता हूँ उस छाया से
मैं पूछता हूँ
अलसायी धाराओं, खामोश मैदानों, उसमें उगी निष्क्रिय
तलवारों के बाबत ।
और अस्तित्व और विस्मरण के उस अनन्त अन्तराल में
उम्र के धुँधले उत्खनन के बाद
निकलता है कुछ नहीं
सिवा समय का पीला बीमार चेहरा
कुछ नहीं
सिवा विस्मरण ।

—विलबर्ती एल० कैन्टान

वेनेज़ुएला

४८

मांसल-संगीत

एक साँवले सितार की तरह
तुम्हारे निरावरण साँवले तन के संगीत को मैं पी चुका हूँ
तुम्हारी अलकें काली थीं, रेशमी थीं
काली—मगर शोक सूचक नहीं

चाँदनी जैसे दाँतों से
मैंने तुम्हारे शरीर के संगीत की सबसे परिपक्व
उठान को चिह्नित कर दिया—
हम चाँद की दूधिया परछाइयों में
नहाये हुए थे—

तुम्हारे स्वर रात को चीरते हुए
पक्षी की तरह, ख़ून सने सुनहले तीर की तरह
उड़ रहे थे
ओह ! ओह ! तुम्हारे तन के संगीत ने
मुझे पागल कर दिया था !

तुम्हारी अलकें काली थीं–रेशमी थीं
काली—मगर शोक सूचक नहीं
मेरे हाथों में जूही के फूल थे
उनमें से हर फूल—तुम्हारे तन की सिहरन
तुम्हारी सिसकारियों और शिकायतों का प्रतीक था !

दूधिया चाँद, महकदार मिठास
गीत और दर्द के धूपछाँही धागों से
बुने हुए छत्र के नीचे खड़ी हुई
मेरी नन्हीं ज़िन्दगी—
मेरी साँवली धूप !

तुम्हारी अलकें काली थीं—रेशमी थीं
काली—मगर शोक सूचक नहीं !

—एंगेल मीगेल केरमेल

अन्तहीन कहानी

तुम दुखी क्यों हो
याद रखो कि हम लोगों ने एक अन्तहीन कहानी लिखी है
जिसके एक छोर पर छोटी सी चींटी है
दूसरे छोर पर दूर, सुदूरतम नक्षत्र

•

चट्टान और हरे भरे कुंज
खण्डहर और बच्चों के पालने
सभी उस कहानी के अंग हैं
हम लोगों ने ऊसर बंजर ज़मीन को इतना सुख दिया है
कि वह अपने अन्दर छिपे नक्षत्रों और फूलों को
पहचान गई है !

संगीत, चुम्बन और तितलियों से बुनी हुई
हमारी कहानी सृष्टि की आदिम कहानी है
प्रतिध्वनियों, छायाओं और कोहरे के
छलना–महलों की तरह
हमारी कथा रहस्यमयी है
युगों से परे है

धरती में दबी ढँकी जलधाराओं के ढंग
की कहानी
वेदनामय ज़रूर होती
हमारी आँखें नहरें ज़रूर बन गई होतीं
पर हमारी कहानी तो धरती से सितारों
की ओर उठने वाली कहानी है
और सितारों की ऊँचाइयों से खण्डहर
और चीड़ के कुंज कितने छोटे लगते हैं !

हमारी कहानी पर वे सभी देवदूत घिर आयेंगे
जो अभी पैदा ही नहीं हुए

वे फूल और जो रात के अन्धेरे में खिल कर अनजाने ही—
मुरझा जाते हैं
नववधू के फूल मुकुट से झरने वाले नींबू के फूल
इस कथा से महक उठे हैं !
तुम सुन रही हो न ? समझ रही हो न ?

आदम गा रहा है
हवा निश्वासें भर रही है
हवाएँ करवटें बदल रही हैं !

—ऑटो द सोला

आक्रामक हवाई जहाज़ों के आने के पहले

अगर सुबह खिले हुए ताज़े कमलों की छाया में
सोये हुए इन बच्चों को भी अन्त में मरना है
अगर चाँद की छाया में खड़ी उस दीवार को गिरना है

तो ओ क़ब्रों के भेड़िये !
तुम कोई चीज़ साबित न छोड़ना, नहीं तो हमारा
दुख दुगुना हो जायगा ।

कार्नेशन के फूल और खिड़की पर झूलती लतरें
कहती हैं हमें भूल जाओ !
तितलियाँ उड़ते-उड़ते भींगी घास पर पड़े
मुर्दों पर बैठ जाती हैं !

ओ क़ब्रों के भेड़िये !
तुम गिरती हुई दीवारों का शोर
और उनमें कुचलते हुए बच्चों की चीत्कार सुनोगे ?
क्या तुम सुबह को भी—
कोहरे की क़ब्र में दफ़न कर दोगे ?

अगर इस पतझड़ के चाँद की छाया में
सभी चीज़ों को तुम ध्वस्त करने आये हो
तो कोई चीज़ साबित मत छोड़ना

याद रखो कि इन बच्चों को भी मत छोड़ना
जिन्हें देखकर गेहूँ की मासूम बालियाँ याद आती हैं ।

इन दीवारों को भी मत छोड़ना
जो इतिहासों की याद दिलाती हैं ।

इन सुबहों को भी मत छोड़ना जो
घायल बाँसुरियों की तरह सिसक रही हैं ।

—ऑटो द सोला

नया समर्पण

जब पत्थर के नीचे मेरी हड्डियाँ छितरा जायें
और मेरी क़ब्र पर
एक झाड़ झंखाड़ के सिवा कुछ न रहे
और जब तुम्हारी क़ब्र पर एक गुलाब फूले

४१

और सिर्फ़ वही—
तुम्हारे यौवन की स्मृति रह जाये
जब हमारे आज के मीठे चुम्बन के क्षण की—
नशीली साँसें
हवा के हज़ारों झोकों में बिखर जायँ
जब हमारे नाम तक सिर्फ़ प्रतिध्वनि-विहीन
ध्वनियाँ मात्र रह जायँ।
और तुम सिर्फ़ गुलाब में रहोगी—मैं झाड़-झंखाड़ में शेष
रहूँगा
और हमारा प्यार इन भटकी हवाओं में

सुनो मेरी बात सुनो
मैं चाहता हूँ हम दोनों सदा अमर रहें
लोगों के होठों पर, लोगों के दिलों में
इन्सान की ज़िन्दगी की अनादि प्रवाहमान धारा में
हम और तुम दोनों रहें
बच्चों की हँसी में
मनुष्य की आगामी शान्तिमय संस्कृति में
उस प्रणय में जहाँ दुख नहीं !

इसलिए आओ
हम अपने गुलाब, झाड़, झंखाड़, हवाओं
और धरती को अर्पित कर दें
मेरी बात मानो
हम अपने को अर्पित कर दें
भविष्य की पीढ़ी को !

—मिगेल आटेरो सिल्वा

स्पेन

पूर्णिमा : झील के किनारे

उजली रात में,
झील की सेज पर
नींद-डूबे दर्पण-जल
जिन पर पूनम का चाँद
नक्षत्र-सेना के साथ रखवाली कर रहा है

और एक भरे बबूल-वृक्ष का साया
लहर हीन दर्पण में, उजली रात
जिसमें जल पालना बन जाता है
महानतम गूढ़तम ज्ञान का

प्रकृति अपनी बाँहों पर आस्मान का
चन्दोवा सम्हाले है
आस्मान का गिरता हुआ चन्दोवा

और रात के मौन में
प्रेमी की प्रार्थना सजग है
एकान्त प्रेम-विभोर
जिसका एक मात्र वैभव प्रेम है !

—मिगुएल द उनामुनो

गलियारे

बादल खुल गया
इन्द्रधनुष पहले से चमक रहा था,
और खेत
सूरज और फुहारों की लालटेन पर चित्रित से थे

मैं चौंक कर जाग गया
कौन मेरे सपनों की जादू-खिड़की पर बादल बन आया था
डर और अचरज से मेरा दिल बुरी तरह धड़क रहा था
फूल लदा नीबू ,
बाग़ में साइप्रेस का कटा कुन्दा,
हरे खेत, सूरज, फुहार, इन्द्रधनुष······
······तुम्हारी अलकों में उलझी जल बूँदें

आह यह सब तो स्मृति में अनुभावित था
जैसा हवा में साबुन का बुल्ला ।

—अन्तोनिया मशादो

५०

मुझे संज्ञा दो

विवेक, मुझे वस्तुओं की ठीक ठीक संज्ञा दो··· ···
मेरे शब्द स्वतःसिद्ध, स्वतःसार्थक हों
मेरी आत्मा के द्वारा नवरचित

वे जो जानते नहीं
मेरे माध्यम से उपलब्ध करें
वे जो भूल रहे हैं
मेरे माध्यम से उपलब्ध करें
वे जो उन्हें अतिशय प्यार करते हैं
मेरे माध्यम से उपलब्ध करें

विवेक, ठीक ठीक संज्ञा दो मुझे, और अपनी संज्ञा
और उनकी संज्ञा और मेरे शब्दों
की संज्ञा

—*जुआँ रैमों जिमिनेज़*

आज रात

आज रात दरवाज़े खुले छोड़ दो
कि कहीं वह जो दिवंगत हो चुका है शायद
आज रात लौटना चाहे

खुला रहने दो कि देखें
कहीं हम उसके रूप से मिलते हुए तो नहीं हैं,
कि कहीं हम आकाश में उन्मुक्त फैली
उसकी ही आत्मा के कोई अंश तो नहीं हैं,
कि देखें शायद महान् अनन्त में से कुछ आये जो हममें
घुल जाय

कि हम यहाँ अंशतः मृत हो जाँय
और अंशतः, वहाँ उसमें जी उठें

आज सारे घर को खुला छोड़ दो

लगता है जैसे सचमुच सशरीर उपस्थित है नीली रात में
हमारे साथ रक्त की तरह,
और तारों में फूलों की भाँति

—जुआँ रैमों जिमिनेज़

लोभ का देवदूत

जो संसार के नक़्शे पर नहीं है
उस देश के लोग
उस नगर के चौराहों पर कह रहे थे

यह आदमी मर चुका है
पर जानता नहीं
वह बैंकों, इस्पात की चिमनियों, नक्षत्रों, सुनहरे धूमकेतुओं
पर कब्ज़ा करना चाहता है
ख़रीदना चाहता है वह
जो अलभ्य है यानी
आकाश
और जानता नहीं कि
खुद मर चुका है

भूगर्भ के कम्प उसकी भौंहों की
सिकुड़न हैं
कटे कगारों की धँसान,
उन्मत्तों का प्रलाप
फावड़ों से धरती के खुदने का स्वर—
ही उसके श्रवण हैं
उसकी आँखें
गैस की धुँआ भरी लपटें
नम सोने के गलियारे
उसका हृदय
चट्टानों का विस्फोट
डाइनामाइट
उल्लास का स्फोट

वह खानों के सपनों में डूबा है

—राफाएल आल्बर्ती

निर्वासन का गीत

कौन हो तुम जो इतने भयभीत,
मुझे पुकारते हो
सुदूर से, शब्दहीन—
और स्तब्ध मौन हवाओं पर

चुपचाप
बोलते हो मेरा नाम

कौन हो तुम
क्या चाहते हो, क्यों सिसक रहे हो तुम
और इन सुदूर आवाज़ों में
कौन है जो दम तोड़ रहा है ;
कौन हो तुम जो इस मूक पुकार से
मेरे अस्थिपंजर तक को
मांस से बाहर खींच रहे हो

मेरे दाँतों के नीचे एक
जमे हुए शब्द का स्वाद है
मेरी जीभ पर एक मृत भय का स्वाद
और मेरे हृदय में एक बंद धड़कन का

रक्त में वृषभ-चर्म प्रवाहित है,
समुद्रों में सूखे हुए आँसुओं का सूखा सागर
जिन्होंने मुझे कभी पुकारा था
वह तो कब के जा चुके हैं

—राफ़ाएल आल्बर्ती

५१

चाँद झाँकता है

जब चाँद उगता है
शाम की घंटियाँ ख़ामोशी में डूब जाती हैं
और अभेद्य रहस्यमय रास्ते दीखने लगते हैं

जब चाँद उगता है
समुद्र ज्वार में पृथ्वी पर छाने लगता है
और हृदय बन जाता है
अनन्त प्रसार में एक छोटा सा द्वीप

....
....

जब चाँद उगता है
हज़ार हज़ार यकसाँ बिम्बों में
तो थैलियों में से रुपहले सिक्के
ग्लानि से रो देते हैं।

—*फ़ेडेरिको गार्सिया लार्का*

प्यार हमारे बीच उगा

प्यार हमारे बीच में उगा
जैसे चाँद
दो ताड़ वृक्षों के बीच
जो कभी आलिंगन में बँधे नहीं

हमारे दोनों जिस्मों की छुपी हुई आवाज़
लोरी की ओर बढ़ी
मगर कड़वे गीत झंकार उठे
होठ पथरा गये

परस्पर जकड़ लेने की वांछा ने
मांसलता को स्पन्दित किया
अस्थियों को धधका दिया
लेकिन जब बाँहें फैलीं
और मिलीं
तो मिलते ही निष्प्राण हो गयीं

प्यार डूब गया हमारे बीच
चाँद की तरह
और खा गया हमारे एकाकी जिस्मों को
और हम अब दो प्रेत हैं
एक दूसरे की खोज में आकुल
और दूरियों में मिलते हुए

—मिगुएल हर्नान्देज़

आवाज़

अगर आँखों से पी सकता मैं
आवाज़ को, देख सकता तो
किस क़दर देखता आवाज़ के रूप में तुम्हें,
तुम्हारी आवाज़ में एक जोत

जो मुझपर चमकती है,
सुनने की चमक,

जब बोलती हो तुम
तो दिशाएँ धधक उठती हैं
कि वह विराट अन्धकार
जो मौन है टूट जाता है

तुम्हारी आवाज़ में उजराई है
तड़के सुबह की,
दिन की, जब वे तरो ताज़े मेरे पास आते हैं।
जब तुम कोई
बात बोलती हो
तो एक उल्लास ऊर्ध्वोन्मुख।
एक दोपहरी छा जाती है
यद्यपि दीखती नहीं।
तुम रात को बोल दो
तो रात रात नहीं रहती
यह कमरा एकान्त नहीं रहता
अगर तुम्हारी आवाज़ आ जाय अशरीरी और हल्की
क्योंकि तुम्हारी आवाज़ स्वतः अपने इच्छा-तन का निर्माण
करती है
शून्य अन्तराल में अगणित आकार
सुकोमल सम्भावित आकार उदित हो जाते हैं
तुम्हारी आवाज़ से।
होठ और बाँहें जो तुम्हें खोजते हैं छले जाते हैं
और होठों की आत्माएँ, बाँहों की आत्माएँ
चारों ओर खोजती हैं उन अशरीरी सूक्ष्म दिव्य आकारों में,
जो तुम्हारी आवाज़ से बन गये हैं
और श्रुति के उजाले में

आँखों से जो परे हैं इस लोक में
—वे दोनों—सम्पूर्ण उज्ज्वल—हमारी ओर से
आलिंगन करते हैं—हम तुम नहीं—वरन
वे दोनों प्रेमी जिनके लिए न दिन है न रात
सिवा तुम्हारी तारों-धुली आवाज़ या तुम्हारी आवाज़ की धूप

—पेद्रो सालिनस

सोवियत रूस

छोटा काला आदमी

एक छोटा काला आदमी शहर में से दौड़ गया।
सीढ़ियों पर चढ़कर उसने सारी लालटेनें बुझा दीं।

धीमे धीमे गोरा चिट्टा प्रभात आ रहा था
जब यह काला आदमी सीढ़ियों पर था

शान्त सुकुमार छायाएँ शहर पर तैर रही थीं
लालटेनों की पीली धारियाँ सो रही थीं
सुबह की उजियाली देहरी पर बिछ रही थी
पर्दों में भिद रही थी, दरवाज़ों में झाँक रही थी।

शहर कितना बेबस सा, कितना श्रीहीन सा
लगता है जब प्रभात आने वाला होता है

बाहर घुटनों में सर छिपाये छोटा काला आदमी
ज़ार ज़ार रोता है, सिसकता रहता है।

—अलेक्जेण्डर ब्लाक

प्रलय-दिवस की भेरी

समस्त धरा पर एक रव फैल जाता है
एक मर्मर, एक हलचल।
भेरी का आह्वान समस्त आकाशमें गूँज जाता है :
"लो बन्धु, हमारे लिए आह्वान हो रहा है। उठो जागो!"

"नहीं, अभी अन्धेरा अटल है,
मैं उठूँगा नहीं, जागूँगा नहीं
मुझे उठाओ मत, जगाओ मत
मेरी क़ब्र को खटखटाओ मत!"

"अब तुम सो नहीं सकते, इस बार
आह्वान का स्वर कठोर है,
आख़िरी पुकार है यह
जैसे गर्भाशय से नया जीवन प्रसूत होता है
वैसे ही मक़बरों से सब उठ रहे हैं।"

"नहीं मैं नहीं उठ सकता। मेरे सारे अनगाये गीत
कब के मर चुके। मेरी पलकों पर मृत्यु की मोहरें हैं।
उनके मिथ्या आह्वानों पर मैं विश्वास नहीं करता।
मैं नहीं उठूँगा, मैं उठ सकता ही नहीं
बन्धु, मैं लज्जित हूँ, सकुचा रहा हूँ—
धूल, विकृति, सड़ायन्ध, गलीज़!"

"बन्धु, प्रभु ने हमारी क़ब्रें, हमारे कारागार देख लिये हैं।
अब सबको मुक्त होना पड़ेगा
सबको अपने कृत्यों का निर्णय सुनना पड़ेगा
देवदूत उसका सिंहासन वहन कर रहे हैं
हमारा प्रभु हमारा पिता अवतरित हो रहा है
जो मृतक हैं उन्हें जीवित होना पड़ेगा—
ख़ुशी से या नाख़ुशी से
बन्धु—तुम उठोगे, जागोगे!"

—*डिमित्री मर्झोव्स्की*

काला और गोरा

अगर आप देखें
   हवाना को
      अपने सैरबीनों में से,

वह द्वीप—
पूरा बहिश्त है,
किसी चीज़ की कमी नहीं :

ताड़ के घने कुञ्जों में
एक पाँव से खड़े
सारस

कोलैरिया
चतुर्दिक् फूले हुए
वेदादो
लहराते हुए।

मगर
हवाना में
सब कुछ विभाजित है

गोरों के पास
डालर हैं—
और वे समूचे मालिक हैं

पर कालों के पास
पाई नहीं
अतः विली के
हाथ में झाड़ू है
और वह खड़ा चौराहा
बुहारता है

५३

ज़िन्दगी भर विली
  बुहारता रहा है
    और बिना शक

उसके द्वारा बुहारा गया
  कूड़ा, महासागरों जैसे
    कूड़ेख़ानों को भर दे

इसीलिए झर गये हैं
  विली के बाल

और इसीलिए धँस गया है
  विली का पेट।

विली
  के चन्द मनोरञ्जन
    एक उदास, विनम्र दृश्य प्रस्तुत करते हैं

छः घण्टे की
  नींद
    उसका एक मात्र विलास है

और, कभी जब क़िस्मत तेज़ हो
  तो कोई भागता चोर
    या शराब का इन्स्पेक्टर

जाते जाते
  बेचारे नीग्रो की
    ओर एक अधेला फेंक देता है

क्या कुछ फ़ायदा हो सकता है
अगर लोग
सर के बल चलने लगें ?

इस तमाम धूल का
कुछ इलाज तो
आख़िर होना चाहिए !

फिर आदमी के सर में हज़ारों बाल हैं
जो धूल फैलाने में

सहायक होते हैं;
पर पाँव तो
आदमी के पास केवल दो हैं।

खुशनुमा
प्राडो
सुगन्ध और गीत-भरा
गुज़र जाता है;

कभी उदात्त, कभी अनुदात्त
उद्भ्रान्त जाज़ के
स्वर आते हैं !

आदमी,
जो दिमाग़ से ख़ाली है

समझ सकता है
कि हवाना
ही वह जगह है जहाँ आदम का बहिश्त था।

पर कुछ उलझनें
विली के दिमाग़ में
बसी हैं

ज़्यादा तो नहीं
क्योंकि कम बोया गया है
उसके दिमाग़ में
कम उगा है;

एक चीज़ और केवल एक चीज़
उसके दिमाग़ में टिकी है

किन्तु वह
गहरी नक्श है,
स्मारक के पत्थर-सी :

"गोरे खाते हैं
अनन्नास
पके और रस भरे

काले खाते हैं
अनन्नास
कीचड़ में सड़े हुए

गोरों के सामने
चुनने की स्वतन्त्रता है
उसे हल्के काम मिल सकते हैं

काले
मेहनत का काम करते हैं
क्योंकि वही उन्हें मिलता है !"

सिर्फ़ चन्द
    समस्याएँ हैं
        जो बेचारे विली को परीशान करती रहती हैं

पर उनमें से एक
    बहुत गाँठ-गठीली है
        सबसे गाँठ-गठीली है,

और जब
    वह उसको कुरेदती है,
        तो बिल्कुल उसे उद्भ्रान्त बना देती है---

इतना उद्भ्रान्त, कि
    उसकी झाड़ू
        उसके काले हाथों से गिर जाती है।

और हुआ यह कि
    उद्योगपतियों में सबसे बड़ा उद्योगपति—
        शक्कर-सम्राट्--

—जिन दिनों विली के मन में
    संशय घुमड़ रहा था—

मिलने आया,
    सफेद झकाझक
        पोशाक में,
            सिगार-सम्राट् के
                दफ़्तर में,
                    जिसके आस-पास विली मड़रा रहा था।

नीग्रो
जाकर खड़ा हो गया
चर्बीदार छैल-छबीले के सामने--

"ज़रा सुनिए सरकार,
हजूर
आप बड़वार मनई हैं, बड़े लोग हैं--

लेकिन शक्कर
जो इतनी सफ़ेद है, इतनी गोरी है,

उगाई जाती है,
पेरी जाती है, बनाई जाती है
काले भुच्च काले नीग्रो के द्वारा ?

काले
चुरट
गोरे मुँह में ठीक नहीं लगते--

वे कहीं अच्छे लगते हैं
चेहरे में
जो काला हो;

और अगर
शक्कर
आप के लिए इतनी सुखदायी है

तो ख़ुद
आप क्यों नहीं
पायचे समेट कर
खेत में जाते ?"

अब ऐसा सवाल
सुनकर
आप जाने नहीं तो नहीं ही दे सकते;

शकर सम्राट् का
गोरा चेहरा
बिल्कुल जर्द पड़ गया

घुमनी-नचैया
की तरह
उसने घूमकर एक भरपूर हाथ दिया

और फिर
उस काले को छुए हुए
दस्ताने को भी फेंककर
काले विली को फ़र्श पर
तड़पता छोड़कर
चला गया

नीचे गिरे विली के चारों ओर
ख़ूबसूरत पेड़ दीखते हैं

हरे-भरे
उसके सिर के ऊपर
घने कदली-कुंज

उसने अपने हाथ से
नाक से गिरता रक्त पोंछा

(बेचारा जितना कमाता है
उसमें कहाँ है गुंजायश
अट्टी-पट्टी की)

विली ने अपना
    जबड़ा छूकर देखा
        अपनी टूटी नाक साफ़ की

और उठा ली फिर से
    अपनी बुहारी, उसे
        कहाँ से मालूम होता

कि
    वे नीग्रो
        जो ऐसा सवाल उठाना चाहते हैं

वे भेजें इसे
    मास्को में
        कोमिन्टर्न को ?

—वाल्डीमीर वाल्डीमिरोविच मायकोवस्की

आशाएँ हेमन्त द्वारा चित्रित

आशाएँ, हेमन्त के द्वारा चित्रांकित, चमक रही हैं,
मेरा धैर्यवान् अश्व चलता जा रहा है, चुपचाप मौन नियति
की तरह
उसके नम भूरे होठ छूते हैं अस्तरको
जब मेरा लबादा झूलता, लहराता सीधे नीचे लटक आता है

५४

एक दूर जाती हुई राह पर अनजान लीकें, जो
ले जाती हैं न विश्राम को, न युद्ध को, बुलाती हैं और
धुँधलाती जाती हैं,

जाते हुए दिन की सुनहरी एड़ियाँ झिलमिला कर छिप जायेंगी
और बीतते वर्षों के हृदय में मेरे तमाम श्रम दफ़न हो जायेंगे।

—सर्जी येसेनिन

निरभ्र शरदमें

निरभ्र शिशिर में घाटियाँ नीली पड़ी हुई काँपती हुई;
नाल जड़े टापोंकी तीखी टप टप।
सूखी घासें फूले लहँगे लपेटे इकट्ठी होकर
ताँबे के पत्ती पैसे-लुटा रही हैं हवा में झूमती डालियों में

निर्जन गह्वरोंसे पतला मेहराब उठ रहा है;
कोहरे घुँघरा आये हैं हवाओं में और काई की तरह फैल
रहे हैं,
और शाम, बहुत पास झुक कर पियराई नदियों के
स्वच्छ जल में अपने ठण्ड से नीले पड़े पाँव धो रही है।

—सर्जी येसेनिन

धूप का देवता

काली बकरियाँ चराती थी मैं अपनी बहन के सँग सँग; वे
वे गेरुई चट्टानों के पास चर रही थीं। घास कड़ी थी और
चुभती थी! पहाड़ियों की तलहटी में बड़े बड़े ढोंके
पीठ सेंकते हुए आराम से सो रहे थे
और खाड़ी स्वच्छ नीली चमक रही थी

मैं एक जैतून की छाँह में सोई थी :
उसके उलझे हुए रूपहले आच्छादन
में मेरे उनींदे अंगों पर वह
आया, मकड़ी के तप्त जाले की तरह
या मधुमक्खियों के गुनगुनाते हुए
बादल की तरह……मेरे चारों ओर

उसने मेरे घुटने खोल दिये
मेरे पाँव जैसे सुलग उठे
उसकी श्वेत लपटें मेरे
कुर्ते पर चाँदी के रंग में सुलग
उठीं। उसका कसमसाता हुआ
आलिंगन, भारी और मीठा…

उसने मुझे पीठ के बल लिटा दिया
आकाश औंधा लगने लगा…
मेरे निरावृत वक्ष को कुचाग्रों तक
ताम्रवर्णी बना दिया………

—इवान ब्युनिन

सफ़ेद पत्थर

जैसे साफ़ बावडी में एक सफ़ेद पत्थर पड़ा हो
वैसी ही पथरीली और सफ़ेद, एक स्मृति मुझमें सोई है
अब मैं उसके लिए कोई प्रयास नहीं करती और न
प्रयास करने की इच्छा ही है मुझमें
उस स्मृति में कितनी पीड़ा है कितना सुख !

मुझे लगता है कि कोई अगर मेरी आँखोंमें झाँके
तो वह उसे देख सकता है—स्थायी, विवर्ण
और उसे देखकर वह व्यक्ति और भी
दुखी और चिन्तनशील हो जायेगा

प्राचीन काल में देवता शाप देकर मनुष्यों को
पत्थर बना देते थे, किन्तु उनमें एक वेदना
छोड़ देते थे जो बराबर सुलगती रहती थी, कचोटती रहती थी
ये वेदनाएँ अनन्त काल तक सुलगती रहेंगी;
और धीरे-धीरे मैं खुद एक स्मृति बनती जाती हूँ।

—अन्ना अख्मातोवा

हवा

मैं व्यतीत हुआ, पर तुम अभी हो, रहो।
हवा, चीखती झल्लाती हुई हवा—झकझोर रही है
मकानों को, जंगलों को
चीड़ के अलग अलग पेड़ों को नहीं

वरन् सबों को एक साथ—तमाम सीमाहीन दूरियों को—
किसी खाड़ी में लंगर डाले हुए, लहरों पर उठते गिरते हुए
तमाम जहाज़ों की तरह;
और हवा उन्हें झकझोर रही है
केवल चंचलता वश नहीं
न निष्प्रयोजन क्रोध से अन्धी होकर
वरन् अपनी चरम पीड़ा में से,
मन्थन में से,
तुम्हारी लोरी के लिए उपयुक्त शब्द
खोजते हुए

—बोरिस पास्तरनक

पतझर

मैंने बिखर जाने दिया है अपने कुटुम्ब को
बिखर गये हैं मेरे प्रियजन
एक आजीवन अकेलापन
मेरे स्वभाव में मेरे मन में बस गया है,

और यहाँ मैं हूँ, तुम्हारे साथ एक छोटे से घर में।
बाहर है जंगल, निर्जन, रेगिस्तान की भाँति।
गीत के अनुसार—पथ और पगडण्डियाँ
कब की घास से ढक गयी हैं

काठ की दीवारें उदास हैं
क्योंकि उनमें केवल हम दो हैं, उन्हें अपलक घूरते हुए
पर हमने कभी बन्धनों का अतिक्रमण नहीं किया।
हम ईमानदारी से नष्ट हो जायेंगे।

एक बजे हम मेजपर बैठ जाते हैं
उठते हैं तीन बजे
मैं अपनी किताब लिये हुए, तुम अपना कसीदा
सुबह हमें याद भी नहीं रहता
कि कब हमारे होठ होठों से अलग हुए।

पत्तियो! सर सर मर मर झरो और अपने को छलका दो
सदा से ज़्यादा शान से, सदा से ज़्यादा बेलौसपन से
कल तक की कड़वाहटों के प्याले को
और भी लबरेज़ कर दो आज के दर्द से

निष्ठा, लालसा और सुख को
रेशा रेशा बिखर जाने दो, पतझर की गरजती झंझा में :
और तुम जाओ और लीन हो जाओ इस चिटकते पतझर में
खामोश हो जाओ, या बौरा उठो

तुम उतार फेंकती हो अपने वस्त्र
जैसे झाड़ियाँ, अपनी पत्तियाँ झाड़ देती हैं,
और रेशमी डोर से कसे एक ड्रेसिंग गाउन में लिपटी
मेरी बाँहों में लहरा जाती हो

तुम इस विनाशगामी पथ की एक मात्र मिठास हो—

जब ज़िन्दगी बीमारी से भी बदतर हो जाय
तब सौन्दर्य केवल दुस्साहस की मिट्टी में पनप सकता है
वही एक दुस्साहस का सूत्र हमारा बन्धन बन गया है
हमारा मंगल-सूत्र।

—बोरिस पास्तरनक

प्रातःकाल

तुम मेरी नियति थीं, सब कुछ,
और फिर आया युद्ध, विध्वंस।
और कितने, कितने दिनों तक
न तुम्हारा अतापता, न कोई ख़बर

इतने दिनों बाद
फिर तुम्हारी आवाज़ ने मुझे झकझोर दिया है
रात-भर मैं तुम्हारा अभिलेख पढ़ता रहा हूँ
महसूस हुआ जैसे कोई मूर्च्छा टूट रही हो

मैं चाहता हूँ लोगों में मिलना, भीड़ में,
भीड़ की प्रातःकालीन हलचल में—
मैं चाहता हूँ हर चीज़ की धज्जियाँ उड़ा देना
ताकि वे घुटने टेक दें

और मैं सीढ़ियों से नीचे दौड़ जाता हूँ
गोया उतर रहा हूँ पहली बार
उन बर्फ़ानी सड़कों में
उनके सूनसान फुटपाथों पर

चारों ओर बत्तियों की रोशनी है, घरेलूपन है, लोग जाग रहे हैं
चाय पी रहे हैं, ट्राम पकड़ने दौड़ रहे हैं
बस महज़ चन्द मिनट और
कि शहर की शक्ल बदल जायेगी

बर्फ़ीला अन्धड़ एक जाल बुन रहा है
घनघोर गिरते बर्फ़ का जाल, फाटक के पार।
लोग वक़्त पर पहुँचने की हड़बड़ी में
अधूरी थाली, अधूरी चाय छोड़ते हुए

मेरा मन उनमें से एक एक की ओर से महसूस करता है
गोया मैं उनकी काया में जी रहा होऊँ
पिघलते बर्फ़ के साथ पिघलता हूँ मैं
सुबह के साथ मैं तेज पड़ने लगता हूँ

मुझमें हैं लोग—अज्ञातनामा लोग—
बच्चे, अपने घर में तमाम उम्र गुजार देनेवाले लोग, वृक्ष।
मैं उन सबके द्वारा जीत लिया गया हूँ
यही मेरी एक मात्र जीत है।

—बोरिस पास्तरनक

बसन्त

मैं बाहर सड़क पर से आ रहा हूँ बसन्त जहाँ
चिनार का वृक्ष अचरज में खड़ा है, जहाँ विस्तार हिम्मत
हार बैठा हैं
और इमारत भयभीत खड़ी है कि कहीं गिर न पड़े

५६

जहाँ हवा नीली है, मैले कपड़ों के बण्डल जैसी
अस्पताल छोड़ते हुए रोगी के हाथों में—

जहाँ शाम खाली ख़ाली सी है : एक तारा कोई कहानी
कहना शुरू करता है
और बीच में कोई बोल देता है, उत्कण्ठित नेत्रों की पाँतों
पर पाँते
घबरा जाती हैं, इन्तज़ार करती हुई उस सत्य का जिसे
वे कभी न जान पायेंगी, उनकी अथाह दृष्टि ख़ाली है।

—बोरिस पास्तरनक

एक कविता

अगर मुझे मालूम होता कि आगे क्या होगा
तभी जब मेरा नाट्य-कार्य आरम्भ हुआ था
कि शब्द रक्त के प्यासे हो जायेंगे, हत्याप्रिय
गला थाम लेंगे, किसी मनुष्य का दम घोंट देंगे

ऐसी उलझन भरी जीवन-प्रक्रिया से खेलने के लिए
मैं साफ़ नहीं कर देता—
इतनी सुदूर थी मेरी शुरूआत
इतनी भयाक्रान्त थीं मेरी चिन्ताएँ।

किन्तु यह युग तो पुराना रोमवासी है
जो चमत्कारोक्तियाँ और कलाबाज़ियाँ देखते देखते
अधीर होकर चाहता है कि अभिनेता सिर्फ़ संवाद न बोले
बल्कि सचमुच स्टेज पर अपना दम तोड़ दे

अनुभूतियाँ लिखा देती हैं एक पंक्ति और भेज देती हैं
उसे ग़ुलाम की तरह रंगमंच पर, और उसके
अर्थ यह हैं कि कला का काम ख़त्म हो गया है
और अब संसार जाने और भाग्य जाने······

—बोरिस पास्तरनाक

हमारा गीत

धूप में नहाये हुए स्टेपीज़ से लेकर
बर्फ़ ढँकी धरती, जमे हुए समुद्रों के प्रदेश तक
पूर्वी रूस के धूमाच्छादित पर्वत-शिखरों से
पश्चिमी रूस के श्यामल कुञ्जों तक—

संसार का महानतम राष्ट्र, शान्ति के उद्देश्य से
लड़े गये युद्धों का विजय-चिह्न लिये खड़ा है
उसके श्रमिकों का अथक श्रम
उसकी सम्पत्ति और वैभव में निरन्तर वृद्धि कर रहा है

(कोरस)

स्टालिन के अमर सिद्धान्तों से अनुप्रेरित
हम अनन्त सम्भावनाओं के देश में रहते हैं
उसके द्वार सूर्य की ज्योति और सौन्दर्य के प्रति खुले हैं
वह तमाम विश्व के ईमानदार लोगों का आश्रय है,
आशा है

रोम में, गंगा के तट पर
काहिरा में, लन्दन में
आज शान्तिसेना के दस्तों के लिए
हमारा देश ध्रुवतारा है

हम फैलते हुए युद्ध की आग को बुझाते हैं
हम लड़ते हैं न्याय और आज़ादी के लिए लड़ते हैं
शान्ति आन्दोलन हमें अनुप्रेरित करता है
हम महान् सोवियत भूमि के नागरिक हैं

(कोरस)

स्तालिन के अमर सिद्धान्तों से अनुप्रेरित
हम अनन्त सम्भावनाओं के देश में रहते हैं
उसके द्वार सूर्य की ज्योति और सौन्दर्य के प्रति
खुले हैं
वह विश्व के तमाम ईमानदार लोगों का आश्रय है,
आशा है ।

—कोन्स्तान्तिन सिमानाव

हालैण्ड

५७

काला वसन्त

धूप में मौत का आरम्भिक स्वाद,
मधुर उपभोग को शुरू करते हुए,
गुनगुने खेतों पर प्रवाहित।

नंगी सड़कों पर पवित्र चरणों से हम जाते हैं
उसके रुतबे से हम आक्रान्त हैं
और कहीं पराजय भोगी जा चुकी है

और हर स्त्री प्रस्तुत है
अपने रक्त को उन काले सूर्यों
में घुलाने के लिए जो हमारे रक्त की छोरों से उगते हैं

ओह वसन्त—धूप-मादक और गहरे रंगों से आप्लावित।

—*गेरि आस्तरबर्ग*

कन्या

मैं अभी बहुत सुकुँवार हूँ और क्यों यह जीवन निरन्तर
मुझमें अपने को बार बार पलटता है, मेरा रक्त बहुत
निश्शब्द है, देखो
मेरी भयभीत हथेलियाँ जिनसे मैं अपनी गोद को ढाँके हूँ
जिसमें लज्जा के दाग़ हैं—पतले और मुझे विस्मय हत कर
देनेवाले।

मेरे उरोज अभी छोटे हैं, मात्र शोभा के उपकरण
मैं उन्हें संगीत की तरह अपने झीने रेशमी पट में धारण
करती हूँ
मुझे छोड़ दो, इस मुग्धा-वय के अपवाद में, मैं अभी हूँ
ही कितनी ?

—*अन्द्रियों मोरिएँ*

पिता को

पिता हम ने साथ सफ़र किया है
फूल मालाओं से रहित सुस्त रेलगाड़ियों में जो,
रातों को दस्तानों की तरह कभी पहनती कभी उतारती हैं
हम साथ रहे हैं जब तक
अन्धेरे ने हमें चारों ओर से मूँद नहीं दिया

एक हरे रथ के खुशनुमा नन्हे झकोरे में
तुम कहाँ सैर के लिए निकल गये हो
पिता, या अभी दिन ने अपने दस्ताने
उतार कर उस मेज़ पर नहीं रक्खे
जहाँ गोधूलि मधुर तृप्ति के भराव निश्चित आमन्त्रितों
की तरह आने को हैं

मेरे होठ, मेरे कोमल होठ भिंचे हैं।

—हैन्स लाडीजेन

फसल

रात । ग्रीष्म रात में अस्त हो रहा है
तुड़े मुड़े पंख गिर रहे हैं । अपनी परिधि को सँकराते हुए
बादल पर्वतों को कस रहे हैं
गाँव में मन्द मर्मर है और होठों का स्पन्दन

पहले कभी सुनहली निगाहें इतनी दूरियों तक नहीं पहुँची
झपकते वनों में नींद-डूबे जीव पड़े हैं
और हेमन्त के समुद्र पर चाँदी के जाल

इक्का दुक्का फुहारें इतने सुकुमार खेल हैं
कि कामना के फल गिरते हैं
और हाथ फैलते हैं और सलीबों
को धन्यवाद का चुम्बन मिलता है और एक खंजर
और तृष्णाएँ बुझाई गयी हैं अन्धेरे की अग्नियों में

—ल्यूसबर्ट

अंश

मैं पुनर्जन्म लूँ इसके पहले सारी परिधि को
संकुचित होकर, आर्द्र होना पड़ेगा और तिमिराच्छादित।
वह चलती गयी—पर ज्योति पीछे छूटती गयी
और फिर समुद्र तट के रेतीले टीलों पर उसे एक आश्चर्य
दीखा :

एक मेमना जिसके होठों पर सिंह का रक्त लगा था,
एक गौरैया जिसने सर्प निगल लिया था
और एक मज़लूम जिसने अत्याचारी का मांसाहार किया था
वे निश्शब्द और संज्ञाहीन बैठे थे
गौरैया आकर उसके सामने खड़ी हो गयी :

हम स्वर्ग के पिछले दरवाज़े से
ग़लत देश में जा निकले थे
सर्प ने अपनी विषभरी पूँछ से
वज्र को काट दिया था, मार्ग निर्देशन किया था
पिछला दरवाज़ा टूट गया
वृत्त पूरा हो गया था

अब मेमना रक्त के धब्बों से रँगा है
गौरैया की आवाज़ फट गई है
मज़लूम की नसों में आदमख़ोर है।

—*वसालिस*

समापन

सुन्दर क्या है ?

संक्राती पथरेखा
अंगारों के फर्श पर चलना
चट्टानों की परत पर परत
क्षितिज पर तैरती अकेली मछली
सुदूर प्रान्तों में विद्रोह

विराम ।

और पुनः आरम्भ······

आँखों में गरम सलाखें
फूटी मूँगफलियों से मृत शरीर
उनका भी एक औचित्य है
कुत्ते तक का एक औचित्य है

विराम ।

और पुनः आरम्भ······

दुर्दिन में बाहर गड़े शिविर
घृणा के हाथों में राइफलें
आख़िर सही कौन है ?
क्या जीसस ?
क्या मनुष्य मात्र को प्यार करना ग़लत है ?

विराम ।

और फिर से आरम्भ······

संक्रामक हत्याएँ
किन्तु बँधे हाथ उलट कर पड़ते हैं
'यह मेरा जीवन है सम्राट्
और अपना जीवन मैं क्यों न जियूँ ?'

विराम।

और फिर से आरम्भ······

क्योंकि जब सब धोखा खा रहे हैं तो केवल
एक मिथ्या का अपराधी नहीं हो सकता
क्योंकि जब सब घृणा पा रहे हैं तो केवल
एक अकेला घृणा नहीं कर सकता

और पुनः आरम्भ······

मैं जानता हूँ कि बन्द आकार खुलेंगे
उड़ान को पंख मिलेंगे, संगीत को गायन—
क्योंकि मानव की सारी शक्ति की
सार्थकता शिव में है
और समस्त अशिव नष्ट होगा
क्योंकि अशिव अस्थायी है
क्योंकि काला और गोरा,
अंग्रेज़ और जर्मन
अयथार्थ

वे केवल प्रतिध्वनियाँ हैं
उनके आकार, वर्ण, पेड़ों और फूलों
की तस्वीरों की तरह अपने नाम—
संकेत में सार्थक नहीं हैं—
वे अपने में जीवन्त हैं और उनमें यथार्थ निहित है
और जो यथार्थ है वह सदा जीवन्त है

विराम।

मैं मानता हूँ सत्य को
मैं विश्वास करता हूँ कि जो सद्भाव
मुझमें है वह सबमें होगा—
मुझमें जो श्रेष्ठतम है
वह सबमें है
जो सुन्दर है
केवल वही पृथ्वी पर टिकेगा
मुझे विश्वास है कि हर वस्तु के
पूर्णत्व का रूप
निर्धारित किया जा चुका है
और यदि हम अपने रूप में ठीक ठीक
उतर नहीं पाये हैं
तो भी कोई हानि नहीं

शायद बँधे आकार खुलेंगे
क्या उड़ानको पंख मिल जायेंगे ?
क्या संगीत को गायन मिल जायेगा ?
क्या अशिव का विध्वंस होगा ?

क्या मनुष्यों के जीवन स्वच्छन्द बनेंगे ?
क्या शक्ति शिव के लिए होगी ?
क्या मनुष्य की शक्ति को उसका सूर्य मिलेगा ?
क्या मनुष्य की शक्ति सूर्य बिन्दु की भाँति प्रदीप्त हो उठेगी ?
क्या मनुष्य की शक्ति मृत्यु से मोर्चा ले सकेगी ?
सही क्या है ?
क्या युद्ध ?

विराम।

और फिर आरम्भ······

संक्राती पथरेखा
सुन्दर फर्श पर चलना
आग की परतें
अब मुक्ति बिलकुल निकट है
कि कोई मनुष्य दूसरे मनुष्य को घृणा नहीं करेगा
क्योंकि वह काला है,
क्योंकि वह पीला है,
क्योंकि वह गोरा है,
या—क्योंकि वह अंग्रेज़ है
या जर्मन है
या धनी है
या निर्धन है,
क्योंकि हम सब—मनुष्य हैं

विराम।

और पुनः आरम्भ······

मुक्ति में अब विलम्ब नहीं,
कोई मनुष्य दूसरे पर नहीं पनपेगा
क्योंकि कोई मनुष्य अकेले उसका
मालिक नहीं हो सकता जो सबका है
क्योंकि जो सबके लिए है उसको एक विनष्ट
नहीं कर सकता

इस भयानक मार्ग पर ही
मनुष्य अपने सहयोगी को सहारा देता है
मैं मानता हूँ कि चाहे अभी हम
अँधेरे में जा रहे हों
शताब्दियों चाहे बीत जायें पर
उजाला
सारे संसार पर फूटेगा
और मेरी आँखें आज ही चकाचौंध हो रही हैं

विराम।

और पुनः आरम्भ···